A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 5 जून, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 236, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

लाल आतंक के गढ़ में अब लहरा रहा तिरंगा

डॉ. आशीष वशिष्ठ

चार दशक से ज्यादा समय तक नक्सलवाद का शिकार रहे छत्तीसगढ़ का बस्तर जिले को अब वामपंथी उग्रवादियों (एलडब्ल्यूई) जिले की सूची से बाहर कर दिया गया है। अपने आप में ये बड़ी खबर है। दरअसल मोदी सरकार का लक्ष्य है कि मार्च 2026 तक भारत पूरी तरह से नक्सल मुक्त हो जाए। गृह मंत्री अमित शाह भी कई बार सार्वजनिक मंच से इस बात को दोहरा चुके हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह अगस्त 2024 और दिसंबर 2024 में छत्तीसगढ़ के रायपुर और जगदलपुर आए थे। वे यहां अलग-अलग कार्यक्रमों में शामिल हुए थे। इस दौरान उन्होंने अलग-अलग मंचों से नक्सलियों को चेताते हुए कहा था कि हथियार डाल दें। हिंसा करोगे तो हमारे जवान निपटेंगे। वहीं उन्होंने एक डेडलाइन भी जारी की थी कि 31 मार्च 2026 तक पूरे देश से नक्सलवाद का खात्मा कर दिया जाएगा। शाह के डेडलाइन जारी करने के बाद से बस्तर में नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन काफी तेज हो गए हैं।

नक्सलवाद शब्द की उत्पत्ति पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव से हुई है। इसकी शुरुआत स्थानीय जमींदारों के खिलाफ विद्रोह के रूप में हुई, जिन्होंने भूमि विवाद को लेकर एक किसान की पिटाई की थी। यह आंदोलन जल्द ही पूर्वी भारत के छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश जैसे कम विकसित क्षेत्रों में फैल गया। वामपंथी उग्रवादियों (एलडब्ल्यूई) को दुनिया भर में माओवादी और भारत में नक्सलवादी के नाम से जाना जाता है। वे सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत सरकार को उखाड़ फेंकने और माओवादी सिद्धांतों पर आधारित साम्यवादी राज्य की स्थापना की वकालत करते हैं। छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और केरल राज्यों को वामपंथी उग्रवाद प्रभावित माना जाता है।

देश में भाजपा सरकार बनने के बाद 2015 में नक्सलवाद के खिलाफ विशेष अभियान चलाने की नीति बनाई गई। तत्कालीन गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने 8 सूत्रीय समाधान एक्शन प्लान बनाया। इसमें नक्सलियों के खिलाफ कार्रवाई और नक्सली इलाकों में विकास के काम एक साथ किए गए। नक्सलियों के खिलाफ राज्य सरकारों के विशेष बल, केंद्रीय सुरक्षा बलों, पुलिस ने मिलकर कार्रवाई की। इससे नक्सली घटनाओं में जबरदस्त कमी आयी।

2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जिसे भारत की सबसे बड़ी आंतरिक सुरक्षा चुनौती कहा था, वही नक्सलवाद अब खत्म होता दिख रहा है। नक्सलियों ने नेपाल के पशुपति से आंध्र प्रदेश के तिरुपति तक एक रेड कॉरिडोर स्थापित करने की योजना बनाई थी। 2013 में लगभग 126 जिलों में नक्सली सक्रिय थे। वर्तमान में नक्सलवाद से सबसे ज्यादा प्रभावित जिलों की संख्या 12 से घटकर 6 हो गई। वर्ष 2025 में सुरक्षाबलों के ऑपरेशन में अब तक 287 नक्सली मारे जा चुके हैं। वहीं 865 ने समर्पण किया है और 830 गिरफ्तार हुए हैं। गत 21 मई को सुरक्षाबलों ने अबूझमाड़ में डेढ़ करोड़ के इनामी नंबला केशव उर्फ बसवराज को मार गिराया था। वह तीन दशक से सक्रिय था। इस के बाद माओवादियों का हौसला पस्त हो गया है। इस बड़े एनकाउंटर के बाद दक्षिण बस्तर डिवीजन में 4 हार्डकोर नक्सलियों सहित 18 माओवादियों ने सरेंडर किया था। इसी तरह बीजापुर में 32 और तेलंगाना में 86 नक्सलियों ने सरेंडर किया था। बसव राजू की मौत के बाद गृह मंत्री अमित शाह ने भी एक्स पर लिखा था कि महासचिव स्तर के बड़े नक्सली नेता को मारा गया है। इस कामयाबी को हासिल करने वाला 'ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट' भी सुर्खियों में है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक नक्सलवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति के चलते वर्ष 2025 में अब तक 90 नक्सली मारे जा चुके हैं, 104 को गिरफ्तार किया गया है और 164 ने आत्मसमर्पण किया है। वर्ष 2024 में 290 नक्सलियों को न्यूट्रलाइज़ किया गया था, अभी तक कुल 15 शीर्ष नक्सली नेताओं को न्यूट्रलाइज़ किया जा चुका है।

वर्ष 2004 से 2014 के बीच नक्सली हिंसा की कुल 16,463 घटनाएं हुई थीं, जबकि मोदी सरकार के कार्यकाल में 2014 से 2024 के बीच हिंसक घटनाओं की संख्या 53 प्रतिशत घटकर 7,744 रह गई हैं। इसी प्रकार, सुरक्षाबलों की मृत्यु की संख्या 1851 से 73 प्रतिशत घटकर 509 रह गई और नागरिकों की मृत्यु की संख्या 70 प्रतिशत की कमी के साथ 4766 से 1495 रह गई है।

वर्ष 2014 तक कुल 66 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन थे जबकि मोदी सरकार के पिछले 10 साल के कार्यकाल में इनकी संख्या बढ़कर 612 हो गई है। इसी प्रकार, 2014 में देश में 126 ज़िले नक्सल प्रभावित थे, लेकिन 2024 में सबसे अधिक प्रभावित जिलों की संख्या घटकर मात्र 12 रह गई है। पिछले 5 वर्षों में कुल 302 नए सुरक्षा कैंप और 68 नाइट लैंडिंग हेलीपैड बनाए गए हैं। नक्सली हिंसा में 2010 में 720 नागरिक मारे गए। 2024 में मरने वालों की संख्या घटकर 131 हो गई। नक्सली आर्थिक ढांचे जैसे कि रेलवे प्रॉपर्टी, पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर की इकाइयों, टेलीफोन एक्सचेंज, मोबाइल टॉवर, सड़क, स्कूल को निशाना बनाते रहे हैं। पर पिछले कुछ साल से इन घटनाओं में कमी आई है। 2010 में हमले की ऐसे 365 मामले थे, जो 2024 में घटकर 25 रह गए।

पिछले एक दशक में मिली सफलता का श्रेय सुरक्षा रणनीति के साथ ही विकास योजनाओं में आई तेजी को भी जाता है। सरकार ने लक्षित विकास योजनाएं चलाईं, जिनसे लोगों का भरोसा दोबारा जीता जा सका। सड़क और मोबाइल नेटवर्क जैसी बुनियादी सुविधाओं में काफी सुधार हुआ है। केंद्र सरकार ने साफ कर दिया है कि वह उन मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के दबाव में नहीं आएगी, जो बंदूक उठाने वाले माओवादी उग्रवादियों का समर्थन करते हैं। पिछले एक दशक से सरकार ने माओवाद के खिलाफ एक मजबूत और बहुआयामी रणनीति अपनाई है, जो अब काफी असरदार साबित हो रही है। गृह मंत्रालय की 2017 में शुरू की गई 'समाधान' रणनीति ने जमीन पर बड़ा फर्क डाला है। इसमें सुरक्षा संबंधी कार्ययोजना के साथ-साथ विकास से जुड़ी पहल भी शामिल है।

नक्सलियों के खिलाफ अभियान मोदी सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रतीक है। इस से पहले कोई सरकार ऐसी इच्छाशक्ति दिखा नहीं पाई। ध्यान इस बात का रखना होगा कि नक्सलवाद फिर सिर न उठा पाए, इसके लिए प्रभावित इलाकों में अगला चरण लोकोन्मुखी सरकार, भूमि अधिकार, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आर्थिक उत्थान पर फोकस होना चाहिए। जमीनी लड़ाई में जीत केवल आधी सफलता है, अगला फोकस नक्सलियों के पुनर्वास और उन्हें मुख्यधारा में शामिल करने पर होना चाहिए।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

आरसीबी की जीत के जश्न में भगदड़, 11 की मौत, 24 घायल

कर्नाटक के डिप्टी सीएम बोले- कितनी मौतें हुईं, अभी यह कन्फर्म नहीं

बेंगलूर (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की विक्ट्री परेड में बुधवार को भगदड़ मच गई। मीडिया के मुताबिक, बेंगलुरु में चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर मची भगदड़ में 11 लोगों की मौत हो गई, जबकि 24 लोग घायल हो गए हैं।

सभी घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। हादसा उस वक्त हुआ जब विधानसभा में टीम का सम्मान हो रहा था। इस दौरान भीड़ को संभालने के लिए पुलिस को हल्का लाठीचार्ज भी करना पड़ा। भगदड़ चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर मची, यहां पर भी हजारों फैंस मौजूद थे। भगदड़ से पहले ही एक बच्चा बेहोश हो गया था। कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने कहा- लाखों की भीड़ मौजूद थी। हम अभी स्थिति को सामान्य करने में जुटे हैं। कितनी मौतें हुईं, अभी यह कन्फर्म नहीं है।

कर्नाटक सरकार ने आरसीबी टीम का सम्मान किया

टीम जब एयरपोर्ट पहुंची तब वहां हजारों फैंस मौजूद थे। विधानसभा पहुंचने पर मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने सभी प्लेयर्स का सम्मान किया। इसके बाद चिन्ना स्वामी स्टेडियम में भी कार्यक्रम हुए। आरसीबी ने एक दिन पहले मंगलवार को आईपीएल में अपना पहला टाइटल जीता था। टीम ने पंजाब किंग्स को 6 रन से हराया। इसी के साथ 18वें सीजन में आईपीएल को 8वां चैंपियन मिला।

पीड़ितों की जितनी मदद हो सकेगी, करेंगे- बीसीसीआई वाइस प्रेसिडेंट

बीसीसीआई के वाइस प्रेसिडेंट राजीव शुक्ला ने कहा- यह अचानक हुआ हादसा है और सभी लोग दुखी हैं। मृतकों और घायलों की जितनी मदद हो सकती है, हम करेंगे। हम कर्नाटक सरकार से भी बात कर रहे हैं।

वैन पर पलटा सीमेंट से भरा ट्रॉला, 9 की मौत

आलीराजपुर/झाबुआ (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के झाबुआ में मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात सीमेंट से भरा ट्रॉले ने पहले ईको वैन को टक्कर मारी, फिर घसीटते हुए ले गया और वैन पर पलट गया। वैन सवार 9 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। 5 साल के बच्चे समेत दो गंभीर घायल हैं। हादसा भावपुरा गांव के पास कल्याणपुरा में हुआ। इनमें 4 बच्चे, 3 महिलाएं और 2 पुरुष शामिल हैं। ट्रॉला चालक मौके से फरार हो गया है।

मृतकों में मुकेश खपेड़ (40), उनकी पत्नी सावली (35), बेटा विनोद (16), बेटी पायल (12), मढ़ी बमनिया (38), विजय बामनीय (14), कांता बमनिया (14), रागिनी बमनिया (9) और अकली परमार (35) शामिल हैं। हादसे में पायल परमार (19) और 5 वर्षीय आशु बमनिया घायल हुए हैं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार, वैन में सवार सभी लोग मेघनगर तहसील के शिवगढ़ महुड़ा के रहने वाले थे। थांदला और मेघनगर पुलिस टीम एम्बुलेंस के साथ मौके पर पहुंची। घायलों और मृतकों को थांदला सिविल अस्पताल और मेघनगर अस्पताल ले जाया गया। झाबुआ के एसपी पदम विलोचन शुक्ला ने बताया, मेघनगर के पास सीमेंट से भरा ट्रॉला पलटकर ईको वैन पर गिर गया। हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई, दो घायल हैं। घटना मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात देर रात करीब 3 बजे की है।

सीएम यादव ने उमरिया को दी सौगातें

उमरिया में 53.85 करोड़ की योजनाओं का भूमिपूजन-लोकार्पण किया

उमरिया (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने उमरिया जिले के पाली में बुधवार को राज्य स्तरीय पेसा महासम्मेलन में मध्यप्रदेश डे-राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के ऋण वितरण किए। मुख्यमंत्री 14.71 करोड़ रुपए की चार नई परियोजनाओं का भूमिपूजन किया। इस अवसर मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने उमरिया जिले के पाली में राज्य स्तरीय पेसा महासम्मेलन में लोक नृतकों के नृत्य भी किए।

यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुधवार को उमरिया के पाली में कही। उन्होंने यहां गोरैया पंचायत में पेसा ग्राम पंचायतों और ग्राम सभाओं के प्रतिनिधियों के सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री के साथ विधायक बांधवगढ़ शिवनारायण सिंह, सांसद शहडोल हिमाद्री सिंह, पूर्व मंत्री के ज्ञान सिंह भी मौजूद रहे। सीएम ने विकास का संकल्प भी दिलवाया।

सीएम ने कहा कि प्रदेश के हर जिले में शव वाहन दिया जाएगा। इससे किसी को भी शव ले जाने में दिक्कत नहीं होगी। अस्पताल में गरीब मरीज की मौत होने पर शव को उसके घर पहुंचाने का जिम्मा सरकार का है।

जो हमसे टकराएगा, चूर-चूर हो जाएगा। हमारी सेना ने पाकिस्तान की सेना को धूल चटा दी। बदलते दौर में देश बदला। पीएम ने भी कहा है कि दुश्मन अगर गोली चलाएगा, तो उसे गोले से जवाब मिलेगा।

इस मौके पर सीएम ने मुख्यमंत्री 14.71 करोड़ रुपए की चार नई परियोजनाओं का भूमिपूजन किया। मानपुर नगर पालिका में अमृत 2.0 के तहत 7 करोड़ का नाला डायवर्सन और एसटीपी का निर्माण होगा।

मानपुर में 5.57 करोड़ की तरल अपशिष्ट प्रबंधन योजना बनेगी। धनवार में 1.39 करोड़ का मिडिल स्कूल बनेगा। मानपुर के वार्ड 7 में 75 लाख रुपए का नया कार्यालय भवन का निर्माण होगा।

ये विकास कार्य होंगे

- भीमा डोंगरी में 7.81 करोड़ का सोहागपुर-मानपुर मार्ग और नरवार में 5.88 करोड़ का कौड़िया मार्ग शामिल है। चंसुरा और जलधरा में 3.7-3.7 करोड़ के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किए जाएंगे।
- मानपुर और बांधवगढ़ विधानसभा क्षेत्रों में नल जल योजनाएं प्रारंभ की जाएंगी। मानपुर विधानसभा के 13 गांवों में 48 लाख से 86 लाख रुपए की योजनाएं शुरू होंगी।
- बांधवगढ़ विधानसभा के काशपानी में 48 लाख, मानपुर विधानसभा के चाका में 47 लाख और गोरैया में 44 लाख रुपये की नल जल योजना का लोकार्पण होगा।

भोपाल में होगा अटल बिहारी वाजपेयी जयंती पर कार्यक्रम

सीएम ने कहा कि पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर सालभर मेले लगाए जाएंगे। बड़ा कार्यक्रम भोपाल में अक्टूबर महीने में किया जाएगा। सीएम ने कहा कि कांग्रेसी कहते हैं कि भगवान का नाम नहीं लेंगे, तो क्या रावण या कंस का नाम लेंगे। इनको तो शर्म आती नहीं है।

सुप्रभात

अंतिम समय जब कोई नहीं जाएगा साथ
एक वृक्ष जाएगा
अपनी गौरैयों–गिलहरियों से बिछुड़कर
साथ जाएगा एक वृक्ष
अग्नि में प्रवेश करेगा वही मुझ से पहले

'कितनी लकड़ी लगेगी'
शमशान की टालवाला पूछेगा
ग़रीब से ग़रीब भी सात मन तो लेता ही है

लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में
कि बिजली के दाहघर में हो मेरा संस्कार
ताकि मेरे बाद
एक बेटे और एक बेटी के साथ
एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में।

– नरेश सक्सेना

चार राज्यों में अक्टूबर 2026 से जातीय जनगणना

पहले फेज में हिमाचल, लद्दाख, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड, बाकी राज्यों में 1 मार्च 2027 से होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार दो फेज में जातीय जनगणना कराएगी। गृह मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि पहले फेज की शुरुआत 1 अक्टूबर 2026 से होगी। इसमें 4 पहाड़ी राज्य- हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं।

1 मार्च 2027 से दूसरा फेज शुरू होगा। इसमें देश के बाकी राज्यों में जनगणना शुरू होगी। गृह मंत्रालय ने अपने प्रेस रिलीज में बताया कि जातियों की गणना के साथ-साथ जनसंख्या जनगणना भी कराने का फैसला लिया गया है। इससे जुड़ा नोटिफिकेशन 16 जून 2025 तक आधिकारिक राजपत्र में पब्लिश किया जाएगा।

केंद्र ने 30 अप्रैल 2025 को जातीय जनगणना कराने का ऐलान किया था। देश में आजादी के बाद यह पहली जातीय जनगणना होगी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा था कि जातीय जनगणना को मूल जनगणना के साथ ही कराया जाएगा।

कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल जाति जनगणना कराने की मांग करते रहे हैं। देश में पिछली जनगणना 2011 में हुई थी। इसे हर 10 साल में किया जाता है। इस हिसाब से 2021 में अगली जनगणना होनी थी, लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण इसे टाल दिया गया था। गृह मंत्रालय ने बुधवार को प्रेस रिलीज में बताया कि जातीय जनगणना दो फेज में कराई जाएगी।

2011 में सामाजिक-आर्थिक गणना हुई, आंकड़े जारी नहीं

मनमोहन सिंह सरकार के दौरान 2011 में सामाजिक-आर्थिक और जातिगत जनगणना करवाई गई थी। इसे ग्रामीण विकास मंत्रालय, शहरी विकास मंत्रालय और गृह मंत्रालय ने करवाया था। हालांकि इस सर्वेक्षण के आंकड़े कभी भी सार्वजनिक नहीं किए गए। ग्रामीण विकास मंत्रालय की वेबसाइट पर इसके एससी-एसटी हाउसहोल्ड के आंकड़े ही जारी किए गए हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 5 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

27 राज्यों में फैला, कोरोना का नया वैरिएंट

4302 एक्टिव केस, 44 मौतें

नई दिल्ली/मुंबई/बेंगलुरु/तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। देश में कोरोना के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। मंगलवार को ही 300 नए केस मिले। सबसे ज्यादा गुजरात में 108 और महाराष्ट्र में 86 मामले सामने आए। इस तरह देश

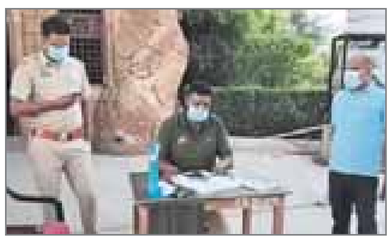

में एक्टिव केसों की संख्या 4302 पहुंच गई है। कोरोना 27 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से फैल चुका है। हालांकि 9 राज्यों में अब तक एक भी मामला नहीं है। सबसे ज्यादा 1373 एक्टिव केस केरल में हैं। वहीं महाराष्ट्र 510 केसों के साथ दूसरे नंबर है। कोरोना के नए वैरिएंट्स से देश में जनवरी से अब तक 44 मौतें हो चुकी हैं। इनमें से 37 मरीजों की मौत बीते 5 दिन में हुई है। महाराष्ट्र में मंगलवार को 4 मरीजों ने जान गई है। राज्य में मरने वाला की संख्या 14 पहुंच गई है। इसके अलवा बीते दिन दिल्ली, गुजरात और तमिलनाडु में भी 1-1 मौत हुई है।

दिव्यांगजन अपनी क्षमता, योग्यता, संघर्षशीलता और सकारात्मकता के आधार पर समाज में अपना स्थान बनाते हैं : मुख्यमंत्री

राज्य सरकार दिव्यांगजन को शासकीय नौकरियों (सीधी भर्ती) में दे रही है अतिरिक्त 2 प्रतिशत आरक्षण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि दिव्यांगजन अपनी क्षमता, योग्यता, संघर्षशीलता और सकारात्मकता के आधार पर समाज में अपना स्थान बनाते हैं। यह आत्मविश्वास ही उन्हें विशेष पहचान देता है। मध्यप्रदेश सरकार उन्हें हर स्तर पर प्रोत्साहित करने और सहयोग प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि परमात्मा हमारे शरीर में भले ही कोई एक गुण कम करता है, लेकिन बदले में कई गुण बढ़ाकर भी देता है। दिव्यांगजन समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं। उनकी अपने-अपने क्षेत्र में योग्यताएं हैं। राज्य सरकार ने दिव्यांगजनों के लिए शासकीय नौकरियों (सीधी भर्ती) में अतिरिक्त 2 प्रतिशत आरक्षण दिया है। सरकार की भावना सर्वे भवन्तु सुखिनः रही है। दिव्यांगजन के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं। उनकी परेशानियां दूर करने के लिए सरकार सदैव तत्पर है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिव्यांग शब्द प्रदान करने से समाज का दृष्टिकोण सकारात्मक रूप से बदला है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दिव्यांगजन को नियुक्ति पत्र तथा अन्य हितलाभ वितरण कार्यक्रम को पंडित खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एवं संस्थान के सभागार में संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ईश्वर ने पृथ्वी पर हमारे जन्म की रचना की है। परमात्मा ने जरूरतमंदों के लिए कुछ

बेहतर पुण्य कर्म करने का अवसर भी दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महाकवि सूरदास, अष्टावक्र, सकुरात, स्वामी रामभद्राचार्य, सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री रविंद्र जैन का उदाहरण देते हुए कहा कि शारीरिक सौंदर्य और शारीरिक पूर्णता से नहीं अपितु विशेषज्ञता पूर्ण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देकर इन महान व्यक्तियों ने समाज में योगदान दिया और इतिहास में स्थान बनाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोक निर्माण, पुरातत्व और जल संसाधन विभागों के दिव्यांगजन को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। उन्होंने हितग्राहियों को स्मार्टफोन एवं मोटराइज्ड साइकिल का वितरण भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दिव्यांग अधिकार अधिनियम 2016 की ब्रेल लिपि में विकसित पुस्तिका का विमोचन किया। कार्यक्रम में लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह तथा सामाजिक न्याय मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय तथा विधायक श्री भगवान दास सबनानी विशेष रूप से उपस्थित थे। दिव्यांग विद्यार्थियों ने इस अवसर पर स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री डॉ.यादव तथा अतिथिगण को तुलसी का पौधा भेंट कर स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोक निर्माण मंत्री श्री राकेशसिंह के आज ही के दिन जन्म दिवस होने पर उनका अभिवादन किया तथा शुभकामनाएं दी।

प्रदेश में 2600 पदों पर की गई दिव्यांगजन की भर्ती- सामाजिक न्याय एवं समाज कल्याण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश की संस्कृति को संजोए रखने के लिए संकल्पित हैं। उनके नेतृत्व में राज्य सरकार गरीब, किसान (अन्नदाता), युवा और नारी कल्याण के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। दिव्यांगजन के लिए भी अनेक कल्याणकारी कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मार्गदर्शन उनकी संवेदनशीलता परिलक्षित होती है। दिव्यांगजनों को शिक्षण-प्रशिक्षण, कौशल उन्नयन, छात्रवृत्ति आदि का लाभ भी दिया जा रहा है। देश भर में दिव्यांगजन के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है, लेकिन मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उन्हें नौकरियों में 6 प्रतिशत आरक्षण दिया है। प्रदेश में 2600 पदों पर दिव्यांगजनों की भर्ती की गई है। दिव्यांगजन को कृत्रिम अंगों के लिए भटकना न पड़े इस उद्देश्य से उनकी सुविधा और सुगमता सुनिश्चित करने के लिए के लिए कृत्रिम अंग वितरण के लिए जिला स्तर पर कैंप लगाए जा रहे हैं।

इलॉन मस्क के पिता कुर्ता-पायजामा में अयोध्या पहुंचे

● हाथ जोड़कर नमस्कार किया; बेटी भी साथ, रामलला के दर्शन किए

अयोध्या (एजेंसी)। दुनिया के सबसे अमीर कारोबारी इलॉन मस्क के पिता इरॉल मस्क बुधवार को अयोध्या पहुंचे। वे दिल्ली से प्राइवेट जेट से अयोध्या एयरपोर्ट पहुंचे। उनके साथ बेटी एलेक्जेंड्रा मस्क, मोटिवेशनल स्पीकर

विवेक बिंद्रा समेत 16 लोग आए हैं। कुर्ता-पायजामा पहने इरॉल मस्क एयरपोर्ट से सीधे राम मंदिर पहुंचे। वहां दर्शन-पूजन के बाद हनुमानगढ़ी रवाना हो गए। करीब 40 मिनट तक मंदिर परिसर में रहे। इसके बाद हनुमानगढ़ी में 15 मिनट रुकेंगे। यहां मीडिया से बातचीत का कार्यक्रम है, हालांकि बाद में उसे कैंसिल कर दिया गया है। श्री लेयर सिक्योरिटी का इंतजाम है। ड्रोन, सीसीटीवी से निगरानी की जा रही है।

उज्जैन में स्पिरिचुअल एंड वेलनेस समिट आज

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 'वेलनेस-एक नई सोच' विषय पर करेंगे संवाद

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर वर्ष 2025 को 'उद्योग एवं रोजगार वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री का उद्देश्य प्रदेश में आर्थिक विकास को गति देना, औद्योगिक विस्तार को प्रोत्साहित करना और व्यापक स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित करना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इसी श्रृंखला में उज्जैन में 5 जून गुरुवार को आयोजित 'स्पिरिचुअल एंड वेलनेस समिट' का शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन विभाग द्वारा होटल अंजुश्री में आयोजित इस समिट में फायरसाइड चैट सत्र 'वेलनेस के लिए एक नई सोच' विषय पर संवाद भी करेंगे। मुख्यमंत्री समिट में भाग लेने वाले वेलनेस सेक्टर के प्रमुख निवेशकों, नीति-निर्माताओं एवं संबंधित संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ वन-टू-वन बैठक भी करेंगे।

इस समिट का उद्देश्य मध्यप्रदेश को वैश्विक वेलनेस हब के रूप में स्थापित करना तथा उज्जैन को वेलनेस सेक्टर की प्रमुख केंद्र-स्थली के रूप में अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाना है। इस आयोजन के माध्यम से योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, जनजागरूकता, आध्यात्मिकता तथा वेलनेस आधारित उद्योगों में निवेश और सहयोग को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा। औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन विभाग द्वारा प्रदेश के अलावा राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर विभिन्न अवसरों पर निवेश संवर्धन, कौशल विकास एवं रोजगार आधारित कार्यशालाएं, एक्सपो एवं कॉन्क्लेव आदि आयोजित किये जायेंगे। वेलनेस समिट को सफल बनाने के लिए आनंद, पर्यटन एवं आयुष विभाग द्वारा समन्वित प्रयास एवं सक्रिय सहयोग किया जा रहा है। भारत के हृदयस्थल में स्थित उज्जैन एक प्राचीन और धार्मिक नगरी के रूप में प्रसिद्ध है। यह का शांत वातावरण, प्राकृतिक संसाधनों और पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के कारण वेलनेस सेक्टर के लिए आदर्श स्थल भी है। एक दिवसीय समिट में प्रख्यात आध्यात्मिक संत / साधक, वेलनेस सेक्टर के प्रमुख निवेशक, नीति-निर्माता, आयुष और स्वास्थ्य विशेषज्ञ, वेलनेस तथा टूरिज्म ऑपरेटर्स आदि भाग लेंगे।

कार्यक्रम के मुख्य सत्र को मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन संबोधित करेंगे। प्रमुख सचिव संस्कृति एवं पर्यटन विभाग रोडमेप फॉर वेलनेस सेक्टर विषय पर प्रस्तुतिकरण देंगे। परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के स्वामी चिदानंद सरस्वती द्वारा सत्र को संबोधित किया जायेगा।

वेलनेस सेक्टर के विभिन्न विषयों पर होगी चर्चा

समिट में वेलनेस सेक्टर के विकास, नीति-निर्माण, सार्वजनिक-निजी भागीदारी, सस्टेनेबल वेलनेस इन्फ्रास्ट्रक्चर और निवेश संभावनाओं पर आधारित उच्चस्तरीय पैनल चर्चाएं होंगी। सत्र की शुरुआत 'आइडियेटिंग द पार्टनरशिप मॉडल' विषय पर पैनल चर्चा के साथ होगी जिसमें विषय-विशेषज्ञ अपनी बात रखेंगे। इस सत्र में इस बात पर चर्चा होगी कि वेलनेस इंफ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ करने, गुणवत्ता मानकों को बेहतर बनाने और विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में सेवाओं की पहुंच बढ़ाने में वेलनेस सेक्टर को निवेश और सहयोग के लिए बनी नीतियाँ किस तरह प्रेरित कर सकती हैं। सत्र में 'वेलनेस इको सिस्टम और वर्कफोर्स डेवलपमेंट' विषय पर पैनल चर्चा भी आयोजित की जाएगी। इस चर्चा में विशेषज्ञ पारंपरिक औषधीय प्रणालियों के समावेश, अनुसंधान में निवेश की आवश्यकता और आधुनिक चिकित्सा के साथ तालमेल जैसे पहलुओं पर प्रकाश डालेंगे। समिट मध्यप्रदेश को भारत एवं विश्व के वेलनेस मानचित्र पर स्थापित करने, वेलनेस क्षेत्र में नीति, नवाचार और निवेश के त्रिसूत्रीय मार्गदर्शन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

भोपाल में 10वीं की छात्रा को अपहरण कर किया रेप

ऑटो चालक ने अपने घर में बंधक बनाकर रखा; पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के निशातपुरा इलाके 10वीं कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा का अपहरण कर रेप का मामला सामने आया है। वारदात को एक ऑटो चालक ने पीड़िता को अगवा करने के बाद अपने घर में बंधक बनाकर अंजाम दिया है।

पीड़िता के गर्भवती होने पर पूरे मामले का खुलासा हुआ। तब परिजनों के साथ थाने पहुंची किशोरी ने आरोपी ऑटो चालक पर किडनैपिंग, बंधक बनाकर रेप और पास्को एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की। पुलिस मामले की जांच कर रही है। सब इंस्पेक्टर एमएल अहिरवार के मुताबिक करोंद में रहने वाली 16 वर्षीय किशोरी स्कूली छात्रा है। वह अपने नाना-नानी के साथ रहती है। मार्च महीने में उसकी मुलाकात ऑटो चलाने वाले अनिल उर्फ सोनू उर्फ मनुआ से हुई थी। 8 मार्च को ऑटो चालक पीड़िता को अगवा कर अपने साथ पिपलानी में स्थित उसके घर में ले गया। जहां उसने पीड़िता को कमरे में बंद कर उसके साथ दुष्कर्म किया। उसके बाद से वह लगातार पीड़िता का शोषण कर रहा था।

पेट दर्द के बाद प्रेग्नेंसी का खुलासा हुआ - इसी बीच पीड़िता को पेट दर्द और उल्टियां होने की शिकायत हुई तो परिजन ने डॉक्टरों को दिखाया। जहां उन्हें पता चला कि वह गर्भवती है।

पंजाब का एक और यूट्यूबर जासूसी के आरोप में गिरफ्तार

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब पुलिस ने पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में यूट्यूबर जसबीर सिंह को गिरफ्तार किया है। जसबीर सिंह रूपनगर के महलां गांव का रहने वाला है और उसके यूट्यूब चैनल 'जान महल' पर 10 लाख से ज्यादा सब्सक्राइबर्स हैं। वह 3 बार पाकिस्तान जा चुका है।

पुलिस की जांच में सामने आया है कि वह ISI एजेंट शाकिर उर्फ जट्ट रंधावा के संपर्क में था। साथ ही हरियाणा से गिरफ्तार यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा और पाकिस्तानी उच्चायोग से निष्कासित अधिकारी एहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश से भी कॉन्टैक्ट में था।

संसद का मानसून सत्र 21 जुलाई से 12 अगस्त तक

रिजिजू बोले- ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा को तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का मानसून सत्र 21 जुलाई से शुरू होगा। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को नई दिल्ली में इसकी जानकारी दी। रिजिजू ने बताया कि

यह सत्र 21 जुलाई से 12 अगस्त तक चलेगा। किरेन रिजिजू ने कहा- सरकार नियमों के तहत सत्र में किसी भी विषय पर चर्चा को तैयार है। साथ ही बताया कि सत्र के दौरान जस्टिस वर्मा के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पेश हो सकता है। सरकार ने मानसून सत्र का ऐलान विपक्ष के स्पेशल सेशन की मांग के बीच की है।

पहलगाम हमले और ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा को तैयारः रिजिजू

रिजिजू ने कहा- सरकार का कहना है कि संसद के आगामी मानसून सत्र के दौरान विपक्ष अगर नियमों के तहत चर्चा की मांग करता है, तो हम पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा के लिए तैयार हैं। आगामी सत्र के दौरान सरकार इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाने की भी तैयारी में हैं।

वर्मा के महाअ+भियोग प्रस्ताव पर सभी को एकजुट रहना जरूरी

दिल्ली हाईकोर्ट के जज जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ महाअभियोग प्रस्ताव पर किरेन रिजिजू ने कहा, जस्टिस वर्मा के खिलाफ महाअभियोग न्यायपालिका में भ्रष्टाचार से जुड़ा मामला है। इसमें किसी भी तरह की राजनीति की गुंजाइश नहीं है।

गुरुद्वारे की जमीन को वक्फ बोर्ड ने बताई अपनी संपत्ति

सुप्रीम कोर्ट पहुंचा मामला; अदालत ने याचिका की खारिज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के शाहदरा स्थित एक गुरुद्वारे की जमीन को वक्फ भूमि बताते हुए एक याचिका सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गई। दिल्ली वक्फ बोर्ड का दावा था कि शाहदरा में जिस जमीन पर गुरुद्वारा बना हुआ है, वह वक्फ की जमीन है और आजादी से पहले वहां एक मस्जिद थी।

लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ बोर्ड की याचिका को खारिज कर दिया और कहा कि गुरुद्वारा कई दशकों से वहां पर है, इसलिए वक्फ बोर्ड को पीछे हट जाना चाहिए। इसके पहले दिल्ली हाईकोर्ट ने भी वक्फ बोर्ड की याचिका को खारिज कर दिया था।

शाहदरा इलाके में स्थित है गुरुद्वारा

ये पूरा मामला शाहदरा स्थित गुरुद्वारे की जमीन से जुड़ा है। इसे वक्फ की संपत्ति बताते हुए दिल्ली वक्फ बोर्ड ने वहां मस्जिद होना का दावा किया था। बोर्ड की तरफ से पेश हुए वकील संजय घोष ने कहा कि निचली अदालतों में मस्जिद होने के दावे को स्वीकार किया था।

हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने इस मांग को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि जब गुरुद्वारा वहां अच्छी तरह संचालित हो रहा है, तो उसे रहने दें। एक धार्मिक संरचना पहले से चल रही है, इसलिए वक्फ बोर्ड को खुद पीछे हट जाना चाहिए। जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने कहा कि आपको खुद ही दावे को छोड़ देना चाहिए।

2010 में वक्फ बोर्ड की याचिका को दिल्ली हाई कोर्ट ने भी खारिज कर दिया था, जिसके बाद बोर्ड ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। याचिका में कहा गया था कि वहां मस्जिद तकिया बब्बर शाह स्थित थी और जमीन वक्फ को दी गई थी। हालांकि प्रतिवादी का तर्क था कि संपत्ति वक्फ की नहीं रह गई, क्योंकि उसके तत्कालीन मालिक मोहम्मद अहसान ने इसे 1953 में बेच दिया था।

राहुल गांधी की कांग्रेसी नेताओं को दो-टूक

● गुटबाजी से नुकसान सहन नहीं, संगठन में सिफारिश नहीं चलेगी, 30 से पहले जिला अध्यक्ष बनेंगे

चंडीगढ़ (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी बुधवार को (4 जून) हरियाणा दौरे पर रहे। उन्होंने करीब 3 घंटे तक चंडीगढ़ में पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में 'संगठन सृजन कार्यक्रम' के तहत राज्य के नेताओं और ऑब्जर्वरों की मीटिंग ली।

कांग्रेस सूत्रों के मुताबिक राहुल गांधी ने बैठक में नेताओं को दो-टूक में कहा कि संगठन बनाने में किसी नेता की सिफारिश नहीं चलेगी। उन्होंने कहा कि गुटबाजी से पार्टी को नुकसान सहन नहीं होगा। उधर, प्रदेश प्रभारी बीके हरि प्रसाद ने कहा 30 जून से पहले जिला अध्यक्ष बना लिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि काम के बीच गुटबाजी नहीं आनी चाहिए। ऐसा होता है तो एक्शन लिया जाएगा।

हिमाचल में बर्फबारी, पहाड़ों पर बढ़ी ठंड

3 जिलों में भारी बारिश हुई: टूरिस्ट को गर्म कपड़े लाने की एडवाइजरी

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के लाहौल स्पीति जिला की अधिक ऊंची चोटियों पर सुबह ताजा हिमपात हुआ। आमतौर पर जून में बर्फ नहीं गिरती। मगर इस बार जून में भी बर्फबारी हो रही है। आज सुबह के वक्त लाहौल स्पीति के लांगचा गांव में बर्फ के फाहे गिरे। घाटी में इससे मौसम ठंडा हो गया है। वहीं आज 6 जिलों में भारी बारिश और तूफान का ऑरेंज अलर्ट है। मौसम विज्ञानी संदीप शर्मा ने बताया कि विभाग के पास बर्फबारी का रिकॉर्ड केवल उन स्टेशन का रहता है, जहां उनके वेदर स्टेशन हैं। जिस जगह आज सुबह बर्फ गिरने की सूचना है, वहां पर विभाग का वेदर स्टेशन नहीं है।

इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि जून में पहली बार बर्फ गिरी है। मगर उन्होंने माना कि जून में बर्फ गिरना सामान्य नहीं है।

3 जिलों में हुई भारी बारिश- वहीं बीती रात में शिमला, मंडी और बिलासपुर जिला के कई क्षेत्रों में भारी बारिश और तेज तूफान भी चला। मंडी जिला के करसोग में सबसे ज्यादा 64.1 मिलीमीटर बारिश हुई। कुफरी में 45.0 मिलीमीटर, शिमला में 40.2 मिलीमीटर, बिलासपुर के घाघस में 37.0 और नयना देवी में 34.6 मिलीमीटर बारिश हुई।

ऊंचे पहाड़ों पर लौटी ठंड

बारिश-बर्फबारी के बाद अधिक ऊंचे क्षेत्रों में ठंड लौट आई है। शिमला का न्यूनतम तापमान सामान्य से 7.2 डिग्री नीचे गिरने के बाद 9.2 डिग्री सेल्सियस रह गया है। अन्य शहरों का तापमान भी सामान्य से नीचे गिरा है। गर्म शहरों में शुमार कांगड़ा का तापमान भी नॉर्मल से 5.6 डिग्री नीचे लुढ़कने के बाद 15.4 डिग्री, पालमपुर का 6.4 डिग्री कम होने के बाद 13.5 डिग्री, नाहन का 6.1 डिग्री गिरने के बाद 17.3 डिग्री, और मनाली का सामान्य से 0.4 डिग्री कम होने के बाद 10.3 डिग्री सेल्सियस तापमान रह गया है।

भाजपा बोली-कांग्रेस के सरेंडर कारनामे कैलेंडर में भरे पड़े

● राहुल जैसा बयान आतंकियों ने भी नहीं दिया, कहा था-ट्रम्प के फोन से नरेंद्र सरेंडर हुए

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा ने बुधवार को कहा कि नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद भी राहुल गांधी में परिपक्वता और गंभीरता नहीं आई है। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को सरेंडर बताना उनकी खतरनाक मानसिकता दिखाता है।राहुल गांधी ने ऐसा बयान दिया है जो पाकिस्तानी सेना प्रमुख ने भी नहीं बोला, किसी आतंकी संगठन ने नहीं बोला, मसूर अजहर और हाफिज सईद ने भी नहीं बोला।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की घोषणा भारत सरकार या भाजपा के किसी प्रवक्ता ने नहीं देश की सेना ने की है। राहुल ने सरेंडर शब्द इस्तेमाल करके सेना का अपमान किया है।राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा था कि ट्रम्प का एक फोन आया और नरेंद्र जी तुरंत सरेंडर हो गए।

पार्टी हेडक्वार्टर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, कांग्रेस सरकार ने 1965 में जीता हाजी पीर का दर्रा सरेंडर कर दिया, 1960 में सिंधु का 80 प्रतिशत पानी सरेंडर कर दिया।

4.50 करोड़ से होगा वार्ड-71 का विकास

महापौर–विधायक ने ड्रेनेज लाइन, सड़कों के कार्य का किया भूमिपूजन

इंदौर (एजेंसी)। विधानसभा-4 के वार्ड-71 का विकास 4.50 करोड़ रुपए की लागत से किया जाएगा। बुधवार को संजीवनी क्लीनिक, उद्यान, सड़क-पानी की लाइन, ड्रेनेज लाइन, स्टॉर्म वाटर लाइन सहित अन्य कार्यों का महापौर पुष्य मित्र भार्गव और विधायक मालिनी गौड़ ने भूमिपूजन किया। इस मौके पर महापौर पुष्य मित्र भार्गव ने कहा- जब महापौर बना, तब दो संकल्प मन में थे, गरीब को सस्ती और निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा मिले और बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। इन दोनों दिशा में ठोस काम किए गए हैं। पिछले तीन साल में 65 संजीवनी क्लीनिक स्थापित किए जा चुके हैं, जिससे वार्ड स्तर पर आमजन को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध हो रही हैं। साथ ही गरीब परिवारों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए 18 नए स्कूल बनकर तैयार हो चुके हैं। महापौर ने बताया कि भविष्य को ध्यान में रखते हुए नर्मदा जल प्रदाय योजना के चौथे चरण का काम तेजी से चल रहा है, जिससे इंदौर की आने वाली पीढ़ी को शुद्ध पेयजल मिल सकेगा। यह काम आगामी तीन साल में पूरा हो जाएगा। शहर में 450 करोड़ रुपए की लागत से 23 नई सड़कें बनाई जा रही हैं। 22 छोटे-बड़े ब्रिज का काम भी शुरू हो गया है। अगले दो साल में यह मूर्त रूप ले लेगा। इंदौर को नंबर वन शहर बनाए रखने के लिए निगम द्वारा डिजिटलाइजेशन, सोलर ऊर्जा, जल संरक्षण, सड़क निर्माण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस मौके पर क्षेत्रीय विधायक मालिनी गौड़, पार्षद हरप्रीत कौर लूथरा, योगेश गेंदर, पूर्व जनप्रतिनिधि, वार्ड के संगठन पदाधिकारी और बड़ी संख्या में रहवासी उपस्थित रहे।

प्लास्टिक के खिलाफ नगर निगम की कार्यवाही

इंदौर में प्रतिबंधित पॉलीथिन, प्लास्टिक चम्मच व अन्य सामग्री जब्त, संस्थानों पर 1.25 लाख का जुर्माना

इंदौर (एजेंसी)। नगर निगम ने पॉलीथिन कैरी बैग एवं प्लास्टिक डिस्पोजल सामग्री रखने वाले व्यापारियों पर बुधवार को कार्यवाही करते हुए स्पॉट फाइन किया। इस सामग्री का संग्रहण, विक्रय और उपयोग पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है। इसके बाद भी संबंधित प्रतिष्ठान इस सामग्री का उपयोग कर रहे थे। जोन 15 के वार्ड-71 में अपर आयुक्त अभिलाष मिश्रा के निर्देशन में स्वास्थ्य अधिकारी गौतम भाटिया, सीएसआई अनिल सिरसिया, सीएसआई पंकज धौलपुरे और वार्ड दरोगा राहुल लोट ने संयुक्त रूप से दबिश दी। दबिश के दौरान सन्मति ट्रेडर्स पर पॉलीथिन और प्लास्टिक के चम्मच मिले। टीम ने सन्मति ट्रेडर्स पर 25 हजार रुपए का स्पॉट फाइन किया। इसके अलावा टीम ने स्कीम नंबर 71 में सन्मति ट्रेडर्स के सामने स्थित एक गोदाम में छापेमारी की।

200 कट्टों में मिली प्रतिबंधित सामग्री- छापे के दौरान गोदाम में 150 कट्टों में पॉलीथिन एवं 50 से ज्यादा कट्टों में प्लास्टिक चम्मच संग्रहित मिले। जिस पर टीम ने गोदाम को सील कर दिया। इसी तरह जोन 12 के वार्ड 65 में भी कार्रवाई की गई। यहां पर प्रतिबंधित पॉलीथिन और प्लास्टिक सामग्री मिलने पर संबंधित प्रतिष्ठान पर 1 लाख रुपए का स्पॉट फाइन किया गया।

नगर निगम की अपील- नगर निगम ने आमजन से अपील की है कि प्रतिबंधित पॉलीथिन एवं प्लास्टिक उत्पादों का प्रयोग न करें और पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें। उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

टंकी में डूबी 8 महीने की बच्ची, मौत

पुलिस को हत्या की आशंका, मां पर शक ; ढक्कन बंद था, परिजन आधा घंटे ढूंढते रहे

मायरा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 8 महीने की बच्ची मायरा का शव घर के आंगन में बनी हौज (पानी की टंकी) में मिला। हौज का ढक्कन बंद था। ऊपर से पानी की मोटर रखी थी। परिजन और पड़ोसी बच्ची को आधे घंटे तक ढूंढते रहे। जब हौज का ढक्कन हटाया तो बच्ची का शव देखा। घटना द्वारकापुरी थाना क्षेत्र में प्रजापत नगर में बुधवार सुबह की है। परिजन की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। प्रारंभिक जांच में पुलिस ने हत्या की आशंका जताई है। शक की सुई बच्ची की मां वर्षा पर है, जो मानसिक रूप से अस्वस्थ बताई जा रही है।

8 फीट गहरी हौज में पड़ा था शव

थाना प्रभारी सुशील पटेल के अनुसार, पुलिस को सुबह करीब 10 बजे सूचना मिली कि आठ माह की बच्ची की हौज में डूबने से मौत हो गई है। जब पुलिस मौके पर पहुंची, तो देखा कि बच्ची का शव करीब आठ फीट गहरी हौज में पड़ा था।

इंदौर के रजत की कप्तानी, पहली बार आईपीएल जीती आरसीबी

पिता बोले- ऑलराउंडर है बेटा, बचपन में अपने से बड़े लड़कों के साथ खेलता था

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के रजत पाटीदार की कप्तानी में आखिरकार रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु (आरसीबी) को आईपीएल की ट्रॉफी मिल ही गए। 17 साल से आईपीएल में आरसीबी ने कई कप्तान बदले पर रजत इस टीम के लिए लकी चार्म साबित हुए। रजत ने इस आईपीएल में 15 मैच में 143.77 के स्ट्राइक रेट से 312 रन बनाए। इस सीजन वे दो फिफ्टी भी लगा चुके हैं। अब तक रजत आईपीएल में 1111 रन बना चुके हैं। रजत के पिता मनोहर ने बताया कि रजत का बचपन अपने से बड़े लड़कों के साथ क्रिकेट खेलते हुए निकला। बेटा ऑलराउंडर है। राइट हैंडेड बैट्समैन तो है ही ऑफ स्पिनर भी बहुत अच्छा है। रजत पाटीदार 2021 से आरसीबी की फ्रेंचाइजी के साथ जुड़े हुए हैं। उन्होंने इंजरी रिप्लेसमेंट के तौर पर 2022 में वापसी की थी। इस सीजन से पहले रजत पाटीदार 27 आईपीएल मैचों में 158.85 के स्ट्राइक रेट से 799 रन बना चुके हैं। उनके नाम एक शतक और 7 अर्धशतक शामिल हैं। रजत के कप्तान बनने पर विराट कोहली ने उनका सपोर्ट भी किया था।

10 साल की उम्र में सीनियर्स के साथ खेलते थे- रजत का जन्म 1 जून 1993 को इंदौर में हुआ था। रजत 8 साल के थे, तब वे एक क्रिकेट क्लब में शामिल हो गए और बाद में दादाजी ने एक अकादमी में दाखिला दिलाया। रजत ने अपने करियर की शुरुआत एक गेंदबाज के रूप में की और अंडर-15 के बाद बैटिंग पर फोकस किया। 10 साल के होते-होते अपनी उम्र से बड़े लड़कों के साथ मैच खेलने लगे थे। 21 दिसंबर 2023 को रजत ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू किया। पिता मनोहर कहते हैं कि जब भी रजत इंदौर में होता है, वह खजराना गणेश के दर्शन करने जरूर जाता है। उसे मां के हाथ का खाना बहुत पसंद है। वैसे उसके इंदौर में रहने पर अधिकांश समय क्रिकेट एकेडमी में ही बीतता है, लेकिन आईपीएल में कप्तानी मिलने के बाद से वह बैंगलुरु में अधिकांश समय रहा।

रजत का आईपीएल में प्रदर्शन

फरवरी 2021 में आईपीएल में एंट्री के बाद रजत पहले सीजन में चार मैचों में केवल 71 रन ही बना पाए और बाद में उन्हें रिलीज कर दिया गया। 2022 की आईपीएल नीलामी में अनसोल्ड रहे, लेकिन बाद में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु ने उन्हें मिड–सीजन रिप्लेसमेंट के तौर पर साइन कर लिया। 25 मई 2022 को, 2022 इंडियन प्रीमियर लीग के एलिमिनेटर मैच में, उन्होंने लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ नाबाद 112 रन की मैच जिताऊ पारी खेली। 2023 इंडियन प्रीमियर लीग से पहले उन्हें रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु ने रिटेन किया, लेकिन चोट के कारण आईपीएल 2023 से चूक गए। 2024 इंडियन प्रीमियर लीग में उन्होंने 13 पारियों में 30.38 की औसत और 177.13 की स्ट्राइक रेट से 395 रन बनाए, जिसमें 5 अर्धशतक शामिल थे।

2015 से रणजी ट्रॉफी में एंट्री ली- सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024-25 में, रजत पाटीदार को मध्यप्रदेश क्रिकेट टीम का कप्तान बनाया गया, जहां वे 9 पारियों में 61.14 की औसत और 186.08 की स्ट्राइक रेट से 5 अर्ध शतकों के साथ 428 रन बनाकर टूर्नामेंट के दूसरे सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी थे। रजत पाटीदार के नाम रणजी ट्रॉफी में 5वां सबसे तेज शतक लगाने का रिकॉर्ड भी है, उन्होंने हरियाणा के खिलाफ सिर्फ 68 गेंदों में 100 रन बनाए। इस मैच के अंत में उनका स्कोर 159 रन था। 30 अक्टूबर 2015 को 2015-16 रणजी ट्रॉफी में प्रथम श्रेणी में डेब्यू किया। 8 जनवरी 2018 को 2017-18 जोनल टी 20 लीग में मध्यप्रदेश के लिए अपना 20-20 डेब्यू किया। 2018-19 रणजी ट्रॉफी में मध्यप्रदेश के लिए आठ मैचों में 713 रन बनाकर सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी थे।झ अगस्त 2019 में, उन्हें 2019-20 दलीप ट्रॉफी के लिए इंडिया ब्लू टीम की टीम में शामिल किया गया। 2015 में रणजी ट्राफी में रजत पाटीदार ने एंट्री ली थी।

श्रेयस अय्यर और कोहली के रिप्लेसमेंट में वनडे में दिखे- अक्टूबर 2022 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरीज के लिए वन-डे इंटरनेशनल टीम में शामिल हुए। फरवरी 2023 में उन्हें श्रेयस अय्यर की चोट के कारण न्यूजीलैंड के खिलाफ एक दिवसीय टीम में शामिल किया। हालांकि रजत दोनों मौकों पर प्लेइंग इलेवन में जगह बनाने में नाकाम रहे। 21 दिसंबर 2023 को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वनडे डेब्यू में 16 गेंदों में 22 रन बनाए। जनवरी 2024 में, उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के पहले दो मैचों के लिए भारत की टीम में विराट कोहली की जगह टीम में शामिल किया गया। 2 फरवरी 2024 को सीरीज के दूसरे मैच में अपना टेस्ट डेब्यू किया। इसमें उन्होंने 41 रन ही बनाए।

केकेआर के कप्तान वेंकटेश रजत की कप्तानी में खेल चुके- रजत पाटीदार ने गेंदबाज के रूप में करियर की शुरुआत की थी। अंडर-15 के बाद उन्होंने बल्लेबाजी पर फोकस किया। 2014 में फुटबॉल खेलते समय घुटने में चोट लगने के बाद उन्हें सर्जरी भी करानी पड़ी थी। रजत 8 महीने मैदान से दूर रहे। बल्लेबाजी की टेक्नीक को और बेहतर करने के लिए पाटीदार ने पूर्व भारतीय बल्लेबाज अमय खुरासिया से ट्रेनिंग ली।झ उन्होंने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में 2019 से 2024 तक मध्यप्रदेश की कमान संभाली। पाटीदार ने इस दौरान 12 मैचों में जीत दर्ज की जबकि चार में शिकस्त का सामना करना पड़ा। रजत ने अपनी कप्तानी में मध्यप्रदेश को 2024-25 एसएमएटी फाइनल में पहुंचाया था, जहां मुंबई से मात मिली थी। इस सीरीज में केकेआर के उप कप्तान इंदौर के वेंकटेश अय्यर भी खेल चुके हैं। 2024-25 एसएमएटी में रजत पाटीदार दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज थे। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने 9 पारियों में 61.14 की औसत से 428 रन बनाए थे।

रजत ने आरसीबी को बनाया चैंपियन : जीत का जश्न मनाने राजवाड़ा पर जमकर की आतिशबाजी

आईपीएल के 18वें सीजन का फाइनल मैच पंजाब किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच अहमदाबाद में खेला गया। इंदौर के रजत पाटीदार ने ऋ्क्क को पहली बार आईपीएल की ट्रॉफी दिलवाई। इसे लेकर राजवाड़ा पर जश्न का माहौल बन गया। यहां युवा बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए और आरसीबी की जीत का जश्न मनाने लगे। कई युवाओं ने पटाखे फोड़े और कई ने भारत माता की जय के नारे लगाए। 2008 से शुरू हुए आईपीएल में यह टीम तीन बार 2009, 2011 और 2016 में फाइनल में पहुंची लेकिन एक बार भी चैंपियन नहीं बन सकी। पिछले तीन साल से फाफ डूप्लेसिस और उसके पहले विराट कोहली भी कप्तान रह चुके हैं, लेकिन टीम एक बार भी ट्रॉफी नहीं उठा सकी।2025 के आईपीएल में आरसीबी रजत के भरोसे गोल्ड मैडल उठाने की रणनीति बनाई। दरअसल कप्तानी के बारे में रजत को पिछले आईपीएल खत्म होने के बाद ही इशारा कर दिया गया था। तब रजत ने टीम मैनेजमेंट से कहा था कि पहले मैं स्टेट टीम की कप्तानी करना चाहूंगा।

परिचित पर ही छेड़छाड़ का आरोप

जूनी इंदौर में दो बहनों से अश्लील हरकत, पॉक्सो एक्ट में केस दर्ज

इंदौर (एजेंसी)। जूनी इंदौर थाना क्षेत्र में दो नाबालिग बहनों से छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। आरोप उनके ही पारिवारिक परिचित काशीराम पारिक पर है, जो कई वर्षों से उनके घर आता-जाता था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पॉक्सो एक्ट और छेड़छाड़ की धाराओं में मामला दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं। पुलिस के मुताबिक, बड़ी बहन ने बताया कि करीब तीन साल पहले जब वह घर पर अकेली थी, तब काशीराम ने उसके साथ अश्लील बातें कीं और उसका हाथ पकड़ लिया। लड़की ने कहा कि वह शोर मचा देगी, तो आरोपी वहां से भाग गया। डर और शर्म के कारण उसने यह बात किसी को नहीं बताई।

छोटी बहन के साथ हरकत करने लगा काशीराम

बड़ी बहन ने बताया कि नवंबर 2024 तक आरोपी किसी न किसी बहाने उसे परेशान करता रहा। इसके बाद 3 मई 2025 को जब उसकी छोटी बहन ने बातचीत में खुलासा किया कि काशीराम उसके साथ भी अश्लील हरकतें करता है और गलत तरीके से छूता है, तब बड़ी बहन ने उसे पूरी बात बताई। इसके बाद दोनों बहनों ने हिम्मत दिखाते हुए अपनी मां को सारी जानकारी दी। फिर परिजन के साथ जूनी इंदौर थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई।

पुलिस ने काशीराम पारिक के खिलाफ आईपीसी की छेड़छाड़ की धाराओं और पॉक्सो एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर लिया है।

कोर्ट में केस चलने के बाद भी आरोपी ने नहीं छोड़ा पीछा

बाणगंगा थाना क्षेत्र में रहने वाली 19 वर्षीय युवती के साथ लगातार छेड़छाड़ और धमकी देने के मामले में पुलिस ने आरोपी राहुल पोरवाल के खिलाफ केस दर्ज किया है। मामले की जांच शुरू कर दी है। आरोपी छत्रपति नगर का निवासी है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि एक साल पहले राहुल उसे शादी का झांसा देकर अपने साथ ले गया था और इस दौरान उसके साथ दुष्कर्म किया। इस मामले में युवती के परिजनों ने थाने में शिकायत दर्ज कराई थी, जिसके बाद केस कोर्ट में चल रहा है। आरोपी कुछ समय जेल में भी रहा।

इंदौर में एक और कोरोना मरीज मिला

अहमदाबाद से लौटे बुजुर्ग संक्रमित, ओमिक्रॉन की दो नई सब–लाइनिज की पुष्टि, 7 एक्टिव केस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में कोरोना का एक मरीज और मिला है। 62 वर्षीय बुजुर्ग की अहमदाबाद की ट्रैवल हिस्ट्री मिली है। सीएमएचओ के मुताबिक मरीज को होम आइसोलेट किया है। अभी उसकी स्थिति सामान्य है। इसके सहित इंदौर में अब तक 24 कोरोना पॉजिटिव पाए गए। इनमें से सात मरीज बाहर के हैं। इंदौर में अभी 7 एक्टिव केस हैं। इधर मध्यप्रदेश में कोविड-19 के ओमिक्रॉन वेरिएंट की नई सब लाइनिज की पुष्टि हुई है। यह पुष्टि पुणे स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी में कराई गई जीनोम सीक्वेंसिंग के जरिए हुई है। इंदौर के सात कोविड पॉजिटिव मरीजों की होल जीनोम सिक्वेंसिंग रिपोर्ट में दो सब लाइनिज एक्सएफजी और एलएफ .7.9 पाए गए हैं। ये वर्तमान में राज्य में सक्रिय हैं।झ हाल ही में एमजीएम मेडिकल कॉलेज इंदौर को मिली रिपोर्ट के अनुसार इन सात सैंपलों में से पांच में XFG लाइनिज पाई गई।

जबकि दो नमूनों में एलएफ.7.9 की पहचान हुई है।

ये दोनों ओमिक्रॉन (बीए.2 जैसे) से संबंधित हैं। इनका परीक्षण ऑक्सफोर्ड नैनोपोर सीक्वेंसिंग प्लेटफॉर्म के जरिए किया गया। एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अरविंद घनघोरिया ने बताया कि पुणे से आई रिपोर्ट में पता चला है इसमें बीए 2 ओमिक्रॉन डिटेक्ट हुआ है। यह सामान्य वायरस है जो घातक नहीं है।

सभी कोरोना मरीज को सामान्य सर्दी–खांसी, सभी की ट्रैवल हिस्ट्री

अभी तक इंदौर में मिले सभी कोरोना मरीजों की हालत ठीक है। सभी के सैंपल जीनोम सिक्वेंसिंग के लिए भोपाल भेजे गए हैं। मरीजों ने सामान्य सर्दी, खांसी होने पर प्राइवेट लैब में जांच कराई थी। इनमें कोरोना के हल्के लक्षण दिखे। कुछ मरीजों की गुजरात, महाराष्ट्र, केरल आदि राज्यों की ट्रैवल हिस्ट्री है।

डॉक्टरों की सलाह : सतर्क रहें, घबराएं नहीं

डॉ. वीपी पांडे का कहना है कि कोविड वेरिएंट हर साल बदल रहे हैं, लेकिन अब तक जो वैरिएंट सामने आए हैं, वे पहले के मुकाबले अधिक घातक नहीं हैं। अधिकांश केस में मरीज घर पर ठीक हो जाते हैं। हालांकि डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर पेशेंट्स को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए और समय पर इलाज कराना चाहिए।

हनीमून मनाने गए इंदौर के युवक की हत्या हुई थी

शिलांग में पेड़ काटने वाले हथियार से मारा गया, पत्नी अब भी लापता

इंदौर (एजेंसी)। मेघालय में इंदौर के ट्रांसपोर्टर राजा रघुवंशी की मौत के मामले में बड़ा खुलासा हुआ है। पूर्वी खासी हिल्स के एसपी विवेक सिम ने बताया कि राजा रघुवंशी की हत्या पेड़ काटने के हथियार से की गई है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई है। एसपी विवेक सिम ने बताया कि हत्या में इस्तेमाल किया गया हथियार भी पुलिस ने जब्त कर लिया है। अब जल्द ही इस मामले में खुलासा किया जाएगा। बता दें कि हनीमून पर मेघालय के शिलांग गए इंदौर के राजा रघुवंशी का शव 11 दिन बाद सोमवार को एक गहरी खाई में मिला था। मंगलवार को शव का पोस्टमॉर्टम किया गया। राजा की पत्नी सोनम रघुवंशी अभी भी लापता है। जिसकी तलाश में एनडीआरएफ भी सर्च ऑपरेशन चला रही है। परिजन राजा का अंतिम संस्कार इंदौर में ही करेंगे। शव लाने के लिए प्रक्रिया चल रही है। बताया जा रहा है कि मंगलवार को टिकट नहीं मिली थी। संभावना है कि बुधवार या गुरुवार तक शव इंदौर लाया जाएगा।

राजा के भाई ने की सीबीआई जांच की मांग

राजा रघुवंशी के भाई विपिन रघुवंशी ने मंगलवार को मीडिया से बातचीत में अपहरण और हत्या की आशंका जताई है। विपिन ने इस मामले में सीबीआई जांच की मांग की है। साथ ही मेघालय पुलिस पर मामले को दबाने का आरोप लगाया है। भाई विपिन ने कहा, राजा का पर्स, ब्रेसलेट, गले की चेन, बैग, अंगूठी और पावर बैंक आदि बरामद नहीं हुए हैं। पूरे मामले की अच्छे से जांच की जाए। हम चाहते हैं कि बहू सोनम जीवित मिले।

राजा और सोनम के साथ गाइड था

सोहरा के डबल डेकर (लिविंग रूट) घूमने के लिए राजा ने एक गाइड को लिया था, वे नीचे गए और घूमकर ऊपर आए। वापसी के वक्त उन लोगों के साथ बातचीत हुई थी। राजा ने बताया था कि एक जगह कॉफी पी, लेकिन कॉफी अच्छी नहीं लगी तो फेंक दी और अब वे केले खा रहे हैं। इसके बाद लौटेंगे। आखिरी बार बातचीत जिस दिन गुम हुए उस दिन 01.43 पर हुई थी।

जीपीएस ट्रैकर से पता चला, कुछ देर रुकी थी स्कूटी

पुलिस के मुताबिक राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी 23 मई को नोंग्रियाट गांव के होटल से निकलने के कुछ घंटे बाद ही लापता हो गए थे। यह गांव उस जगह से 20 किलोमीटर दूर है। जहां सोमवार को राजा का शव मिला था। इसी के पास मावक्मा गांव में जीपीएस ट्रैकर से पता चला कि दंपती द्वारा इस्तेमाल की गई एक्टिवा स्कूटी 23 मई को कुछ देर के लिए यहां रुकी थी। लेकिन, वेइसा डोंग इलाके से जहां राजा का शव बरामद हुआ था। वहां से 20 से 25 किलोमीटर दूर है।

स्थानीय पुलिस और सरकार मामले को दबा रही

विपिन ने मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराड संगमा से मांग की है कि दिल्ली से सीबीआई पूरे मामले की जांच करें। स्थानीय पुलिस को नहीं लगता कि यहां ऐसी घटनाएं हो सकती हैं। अगर पुलिस का कहना सही है तो स्कूटी शव से 25 किलोमीटर दूर क्यों मिली। शव खाई में क्यों मिला, वहां पांच फीट की दीवार है। ऐसे में आत्महत्या नहीं कर सकता। विपिन ने कहा, राजा और सोनम इंदौर से आए थे, इसलिए किसी से किसी तरह की दुश्मनी नहीं हो सकती। अगर कुछ हुआ भी है तो स्थानीय लोगों का हाथ हो सकता है। राजा-सोनम की शादी उनकी मर्जी से हुई थी। शादी को लेकर दुखी होंगे ऐसी कोई बात नहीं है। मेघालय सरकार तथ्यों को दबाना चाहती है।

संपादकीय

भारत को न्यौता न देने का अर्थ

कनाडा में इसी माह होने जा रहे जी7 के तीन दिनी शिखर सम्मेलन में मेजबान कनाडा द्वारा भारत को निमंत्रण नहीं भेजे जाने को विपक्षी कांग्रेस ने मुद्दा बना दिया है और किसी हद तक वह है भी। यह शिखर सम्मेलन कनाडा के अल्बर्टा के कनानास्किस रिसॉर्ट में 15 से 17 जून तक होने जा रहा है। हालांकि भारत इस संगठन का सदस्य नहीं है, लेकिन जी7 मेजबान विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था होने के नाते भारत सहित दुनिया के चुनिंदा देशों को बतौर विशेष आंमत्रित त्यौता देते रहे हैं। प्रमुख वैश्विक मंच होने के नाते भारतीय प्रधानमंत्री इसमें हिस्सा लेते रहे हैं। खास बात यह है कि कनाडा ने अभी तक शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए पीएम मोदी को निमंत्रण नहीं भेजा है। यही नहीं पीएम कोर्नी ने चुनाव जीतने के बाद भारत कनाडा रिश्तों में फिर से सुधार करने की दिशा में भी कोई तैयारी या उत्साह अब तक नहीं दिखाया है। इसका अर्थ यही है कि कनाडा की नई सरकार भी सिख अलगाववादियों के दबाव में है; और वहां सरकार भले ही बदल गई हो, लेकिन देश का डीप स्टेट भारत विरोधी लाइन पर ही काम कर रहा है। आजादी के बाद से ही भारत और कनाडा के रिश्ते आम तौर पर सौहार्द्रपूर्ण ही रहे हैं। बहुत से भारतवंशी वहां रहते हैं। लेकिन दोनो देशों के बीच सम्बन्ध सितम्बर 2023 में तब तनावपूर्ण हो गए, जब कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रुडो ने आरोप लगाया कि खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत सरकार के एजेंट शामिल हैं। निज्जर की जून 2023 में कनाडा के सरे में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। भारत ने ट्रुडो के आरोप को बेतुका बताते हुए खारिज कर दिया। इसके बाद दोनों देशों ने एक दूसरे के राजनयिकों को निकाल दिया। कनाडा पुलिस व सुरक्षा एजेंसियां निज्जर हत्या की अभी भी जांच कर रही हैं, लेकिन उसमे कुछ भी ठोस नहीं निकला है। बिना सबूतों के भारत पर आरोप लगाना पूर्व पीएम की कूटनीतिक अपरिपक्वता भी थी। तब माना गया था कि चूंकि ट्रुडो की सत्ता खालिस्तान समर्थक सिखों के समर्थन पर टिकी है, इसलिए वो भारत पर आरोप लगा रहे हैं। लेकिन इस साल हुए चुनाव में ट्रुडो और उनकी पार्टी चुनाव हार गई और वर्तमान पीएम कोर्नी की लिबरल पार्टी सत्ता में आई। समझा गया कि यह कनाडावासियों का कट्टरपंथी खालिस्तानियों को जवाब है और अब नए पीएम भारत के साथ कनाडा के रिश्तों में फिर गर्माहट लाने की गंभीर कोशिशें करेंगे। कोर्नी की जीत पर पीए मोदी ने उन्हें बधाई भी दी थी। लेकिन लगता है, सब बेकार गया है। कोर्नी सरकार भी ट्रुडो की लाइन पर चलती दिख रही है। हालांकि बीते दिनों कनाडा की विदेश मंत्री अनीता आनंद ने भारतीय विदेश मंत्री डॉ.एस. जयशंकर से बात की थी, लेकिन उसका भी कोई खास नतीजा नहीं निकला। अब अगर कनाडा से शिखर सम्मेलन का न्यौता आया भी तो भारत से मोदी उसमें नहीं जाएंगे। ऐसा छह साल में पहली बार होगा। कांग्रेस इसी मुद्दा बनाकर मोदी सरकार और भाजपा को घेर रही है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने में होने वाले जी7 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अनुपस्थिति को भारत के लिए बड़ा कूटनीतिक झटका बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि मोदी सरकार की कूटनीति पूरी तरह विफल हो गई है। कश्मीर मामले में भी हमने अमेरिका की मध्यस्थता को स्वीकार कर लिया है। गौरतलब है कि ग्रुप ऑफ सेवन (जी7) पचास वर्षों से वैश्विक नीति समन्वयन का मंच रहा है, लेकिन विशेषज्ञ इस समूह की प्रासंगिकता पर लगातार सवाल उठाते रहे हैं। बावजूद इसके कनाडा द्वारा भारत को न न्यौतना गंभीर सांकेतिक अर्थ लिए हुए है।

राहुल गांधी का रास्ता आसान लगता है आपको?

लोकोक्तियाँ यूँ ही नहीं बनतीं। सदियों की दास्तानें और पीढ़ियों के अनुभव लोकोक्ति की शक्ल में सामने आते हैं। बतियाने-गपियाने में लोकोक्तियाँ बड़ी मदद करती हैं और खूब मजा देती हैं। लेकिन जब कोई लोकोक्ति खुद पर लागू होती है तो हर बयान अधूरा लगने लगता है। इसी दशा में मैं, आज का अपना यह अधूरा बयान लिख रहा हूँ।

नजरिया

विष्णु बैरागी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

वो कहते हैं ना - बाबाजी तो कम्बल छोड़ना चाहते हैं लेकिन कम्बल बाबाजी को नहीं छोड़ता - वही बात आज मुझ पर लागू हो गई। पत्रकारिता छोड़े बरसों-बरस हो गए। समाचारों की दुनिया से भी गए दो-ढाई बरसों से दूरी बनी हुई है। रोजमर्रा की जिन्दगी जीने में न तो कोई कमी लग रही न ही कोई अधूरापन। लेकिन अच्छे-सच्चे दोस्त आपको अपने होने का अहसास कराते रहते हैं। ऐसे ही अलग-अलग जगहों पर रह रहे तीन मित्रों ने सवेरे-सवेरे फोन पर पूछा - 'राहुल के भोपाल वाले भाषण पर तुम्हें क्या कहना है?' मेरे पास अनभिज्ञता जताने के सिवाय कोई चारा नहीं था। मुझसे, अँधेरे-बन्द कमरे में उस काली बिल्ली का अता-पता पूछा जा रहा था जिसके बारे में कोई, कुछ नहीं जानता था। दो ने अपने-अपने हिसाब से मुझे राहुल के भाषण का सार समझाया। तीसरे को, कोशिश करते-करते मेरी समझ और ग्राह्य-शक्ति का अनुमान हो आया। झिड़कते हुए कहा - 'अखबार पढ़। सब समझ कर बताना।' 'जो हुकुम मेरे आका' की तर्ज पर अखबार देखे। पढ़ते-पढ़ते, अवचेतन में सोया, पत्रकारिता का 'अमीबा' सुप्तावस्था झटक कर 'फुल-स्विंग' से हरकत में आ गया।

राहुल के अखबारी भाषण में बहुत सारी बातें हैं। इस भाषण पर काफी-कुछ लिखा-कहा जाएगा। (वैसे भी, राहुल अभी 'बेस्ट सेलेबल आइटम' हैं।) पहली नजर में मुझे लगा - राहुल काँग्रेस में दो बदलाव चाह रहे हैं। पहला, पार्टी में वास्तविक लोकतन्त्र लाना और दूसरा, पार्टी में पीढ़ी का बदलाव - वह भी एक झटके में। इसी सिलसिले में उन्होंने कहा कि उनकी नई काँग्रेस में 'जो जिलाध्यक्ष होगा वही काँग्रेस चलाएगा'। इसी बात ने मुझे चौंकाया। खुरदरी, कस्बाई पत्रकारिता और दादा स्व. श्री बालकवि बैरागी के कारण मैंने काँग्रेस को काफी पास से देखा-जाना है। इतने पास से कि स्थानीय स्तर पर छोटी-मोटी भविष्यवाणी कर सकूँ। इसी आधार पर कह रहा हूँ - राहुल की भावना साकार होना यदि असम्भव नहीं है तो आसान भी नहीं है। 'असम्भवप्राय:' और 'दुसाध्य' जैसे विशेषण मेरी इस बात पर चस्पा किए जा सकते हैं। मुझे लग रहा है कि इस जरूरी और नेक काम में कहीं राहुल अकेले न पड़ जाएँ।

एक रोचक संस्मरण मेरी बात अधिक स्पष्ट कर देगा।

बात 1980 के लोक सभा चुनावों की है। जनता पार्टी की सरकार धराशायी हो चुकी थी। संघ की सदस्यता पर अड़े रहने के कारण भारतीय जनसंघ ने अलग होकर भारतीय जनता पार्टी का स्वरूप ग्रहण कर लिया था। काँग्रेस यद्यपि सत्ता में नहीं थी लेकिन चुनावों को लेकर काँग्रेसी अति-उत्साही थे। पार्टी पर संजय गाँधी और उनकी 'कोटरी' का कब्जा हो चुका था। 'फौलादी-महिला' इन्दिराजी, अपने अनियंत्रित बेटे के सामने एक लाचार माँ बन गई थीं। 'इन्दिरा इज इण्डिया' ने 'संजय इज इण्डिया' की शकल अख्तियार कर ली थी।

मैं उन दिनों, दवाइयाँ बनानेवाली एक लघु औद्योगिक इकाई में भागीदार था और सरकारी अस्पतालों और जिला स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालयो से अपनी इकाई के लिए क्रयादेश हासिल करने के लिए पूरे प्रदेश के जिला मुख्यालयों की यात्राएँ किया करता था। पत्रकारिता छोड़े मुश्किल से ढाई बरस हुए थे। सो, पत्रकारिता का कीड़ा मानो चौबीसों घण्टे काटता ही रहता था।

अपने धन्धे के सिलसिले में छिंदवाड़ा पहुँचा हुआ था। तब तक, काँग्रेस के युवराज संजय गाँधी के परम मित्र, 'इन्दिरा गाँधी के तीसरे बेटे' कमलनाथ को छिंदवाड़ा से काँग्रेसी उम्मीदवार घोषित किया जा चुका था। यह उनका पहला चुनाव था। हवाओं में चुनाव कम और कमलनाथ ज्यादा पसरे हुए थे।

काम-धन्धा निपटा कर, शाम को सड़कों पर निकला तो महसूस हुआ कि काँग्रेसी भले ही 'छिंदवाड़ा का नया नाथ: कमलनाथ-कमलनाथ' का नारा लगा रहे हैं लेकिन कमलनाथ की उम्मीदवारी से अधिसंख्य काँग्रेसी बेचैन है। मालूम हुआ कि पुराने काँग्रेसी तो सारे के सारे न केवल असहज बल्कि असहमत, असन्तुष्ट और क्रुद्ध-क्षुब्ध हैं। पत्रकारिता के कीड़े ने मेरे व्यापारी को परे धकेल दिया।

शाम ढल कर रात में बदलने लगी थी। मैं काँग्रेस चुनाव कार्यालय पहुँचा। कोई बीस-पचीस लोग थे। एक कोने में तीन साप्ताहिक अखबारों की थप्पियों के ढेर रखे थे। तीनों में, मुखपृष्ठ से लेकर अन्तिम पृष्ठ तक, सचित्र कमलनाथ ही कमलनाथ थे। दूसरे कोने में बीसियों तरह की प्रचार सामग्री के ढेर लगे हुए थे।

अजनबी को अपने बीच पाकर सब सतर्क हुए। मैंने दादा का नाम लेकर अपना परिचय दिया। लगभग सबके सब दादा को जानते थे। मेरा काम आसान हो गया।

रस्मी बातों से बातों का सिलसिला शुरु हुआ। अपरिचय और अजनबीपन बहुत जल्दी लगभग समाप्त हो गया। अंगुली तो शुरु में ही मेरी पकड़ में आ चुकी थी। 'पहुँची' भी जल्दी पकड़ में आ गई। मैं हतप्रभ रह गया यह जानकर कि वहाँ मौजूद सारे के सारे (जी हाँ, सारे के सारे) लोग कमलनाथ को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। 'पार्टी अनुशासन' और 'हाईकमान का आदेश' के अधीन मुँह बन्द कर, मन ही मन भुनभुनाते हुए काम कर रहे थे। मैंने 'थो ऽ ऽ ा ऽ ड़ी सी' पूछताछ की तो मानो प्रेशर कुकर का ढक्कन खुल गया।

किस्सा कोताह यह कि, संजय गाँधी के उम्मीदवार के रूप में जब कमलनाथ को उम्मीदवार घोषित किया तो असन्तोष का लावा फूट कर सड़कों पर बह आया। छिंदवाड़ा के काँग्रेसियों का गुस्सा और असन्तोष सौ-टका वाजिब था। आपातकाल के बाद हुए 1977 के लोक सभा चुनावों में मतदाताओं ने काँग्रेस को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया था। खुद इन्दिराजी हार गई थीं। लेकिन मध्य प्रदेश की 40 लोक सभा सीटों में से छिंदवाड़ा वह एकमात्र लोकसभा सीट थी जहाँ से, काँग्रेस जीती थी। पण्डित गार्गी शंकर मिश्र वहाँ के एकछत्र और 'लोकप्रिय-नेता' से कहीं आगे बढ़कर 'सर्वप्रिय-लोक पुरुष' थे। इलाके में उन्हें 'भाटो' (जीजा) पुकारा जाता था। बवाल बना हुआ छिंदवाड़ा एक ही सवाल पूछ रहा था - 'भाटो क्या कसूर? यही कि उन्होंने जनता पार्टी के साम्राज्य को ध्वस्त कर काँग्रेस की लौ जलाए रखी?' 'बाहरी उम्मीदवार' कमलनाथ को अपना उम्मीदवार कबूल करने को कोई काँग्रेसी तैयार नहीं था।

जिला काँग्रेस की अनौपचारिक बैठक हुई और तय हुआ कि दिल्ली जाकर हाई कमान से सीधी बात की जाए। निर्णयानुसार 'भाटो' को उम्मीदवार बनवाने के लिए छिंदवाड़ा जिला काँग्रेस की भभकती, धधकती, उबलती पूरी कार्यकारिणी दिल्ली रवाना हुई। जाने वालों को तो विश्वास था ही, समूचे छिंदवाड़ा जिले को भी विश्वास कि जानेवाले, 'भाटो' की उम्मीदवारी लेकर ही लौटेंगे।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। जो 'भाटो-भाटो' के नारे लगाते हुए गए थे वे सबके सब 'कमलनाथ-कमलनाथ' का तुमुलनाद करते लौटे। दिल्ली में किस-किससे मुलाकात हुई, क्या बात हुई, किसने-क्या कहा, किसने सुना, किसने नहीं सुना और आखिकार भाटो की बलि क्यों ली गई, यह जानने को उतावले लोगों को आज तक जवाब नहीं मिला। 'कमलनाथमय' होकर लौटनेवालों के पास एक ही जवाब था - 'जो हुआ, सो हुआ। अब कमलनाथ ही अपने नाथ हैं।' और लोक सभा चुनावों में काँग्रेस के उम्मीदवार के रूप में तबसे अब तक छिंदवाड़ा में किसी को पण्डित गार्गी शंकर मिश्र की याद नहीं आई।

पाँच बरस बाद इस बात को आधी सदी हो जाएगी। आप-हम-सब इतने बरसों से काँग्रेस को, काँग्रेसियों और काँग्रेसी चाल-चलन को देख रहे हैं। राहुल का रास्ता इतना आसान लगता है आपको?

दहलीज पर संकट, अब भी खामोश रहेंगे?

पर्यावरण दिवस विशेष

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

अब यह सवाल नहीं रह गया कि जलवायु परिवर्तन हो रहा है या नहीं। प्रश्न यह है कि हम इसके साथ कैसे जी रहे हैं, और इसकी कीमत कौन चुका रहा है? पिछले कुछ दशकों से लगातार चेतावनियां दी जा रही हैं, लेकिन हालिया घटनाएं और अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक शोध हमें यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि यह संकट अब कल्पनाओं का नहीं, हमारे जीवन की सच्चाई का हिस्सा बन चुका है।

Science पत्रिका में हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन ने हिमालय क्षेत्र को लेकर गंभीर चिंता जताई है। इस अध्ययन के अनुसार यदि ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन इसी दर से जारी रहा, तो सदी के अंत तक हिन्दूकुश हिमालय क्षेत्र की लगभग 80 प्रतिशत बर्फ समाप्त हो सकती है। यह केवल एक भौगोलिक संकट नहीं है—यह करोड़ों लोगों के जीवन, पानी और खेती का संकट है। हिमालय एशिया की प्रमुख नदियों—गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु आदि—का स्रोत है। इस बर्फ का पिघलना इन नदियों के प्रवाह और भविष्य को अनिश्चित बना देगा।

इस अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि वैश्विक तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि तक यदि हम उत्सर्जन पर लगाम लगा पाएं, तब भी बर्फ के बड़े हिस्से का नुकसान अपरिहार्य है। यह चेतावनी उन तमाम वैश्विक मंचों और राजनीतिक इच्छाशक्ति के खोखलेपन को उजागर करती है जो जलवायु परिवर्तन को महज़ 'अंतरराष्ट्रीय विषय' मानते हैं।

इसी के साथ एक और संकट अब ज़मीनी अनुभवों से जुड़ने लगा है—रातों का असहनीय तापमान। हाल ही में प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट में यह स्पष्ट हुआ है कि जलवायु परिवर्तन का स्वास्थ्य पर भी असर पड़ने लगा है। यह भी सामने आया है कि दुनिया के सबसे गर्म देशों में भारत का स्थान भी प्रमुख है। इस साल अप्रैल महीने में भारत के कई इलाकों में सामान्य से अधिक तापमान दर्ज किया गया। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट, वर्ल्ड इकॉनमिक सिचुएशन एंड

प्रॉस्पेक्ट्स मिड ईयर अपडेट, की रिपोर्ट को गंभीरता से लेने की जरूरत है। इसके मुताबिक देश में गर्म दिनों की तुलना में गर्म रातों की संख्या बढ़ रही है।

मुंबई, दिल्ली, भोपाल, अहमदाबाद और हैदराबाद जैसे अन्य शहरी इलाकों में गर्मी का जोखिम बढ़ना खतरे की घंटी है। महानगरों और कस्बों में अब वह रातें आम होती जा रही हैं जब पारा 30 डिग्री से नीचे नहीं उतरता। ऐसे हालातों में शरीर को न तो राहत मिलती है और न ही गहरी नींद। इसका असर कामकाजी वर्ग, विशेषकर निर्माण मजदूर, रिक्शाचालक, छोटे व्यापारी और बुजुर्गों पर गहराई से पड़ रहा है।

शोध बताते हैं कि अत्यधिक गर्म रातों का संबंध हृदय रोग, मानसिक तनाव, और थकान से है। जब तापमान रात में भी नहीं गिरता, तो शरीर का थर्मल बैलेंस बिगड़ जाता है। ऐसे में यह संकट केवल पर्यावरणीय नहीं, सामाजिक और आर्थिक असमानता का दर्पण भी बन गया है।

इस पृष्ठभूमि में जलवायु न्याय की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। जिन लोगों का कार्बन उत्सर्जन सबसे कम है—आदिवासी, ग्रामीण, मेहनतकश वर्ग—उन्हें ही जलवायु परिवर्तन की सबसे भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। इस असमानता को पाटे बिना कोई भी समाधान टिकाऊ नहीं हो सकता।

हमारे विकास मॉडल को भी कठघरे में खड़ा करने की ज़रूरत है। हिमालयी क्षेत्र में अनियंत्रित पर्यटन, सड़क निर्माण, खनन और बड़े-बड़े बाँधों ने पारिस्थितिक तंत्र को पहले ही कमज़ोर कर दिया है। जब बर्फ पिघलती है या झीलें टूटती हैं, तो इसके पीछे सिर्फ 'प्राकृतिक कारण' नहीं होते, बल्कि मानव निर्मित हस्तक्षेपों की लंबी श्रृंखला होती है।

इसी तरह शहरों में कंक्रीट का जंगल और हरियाली का अभाव 'हीट आइलैंड' इफेक्ट को बढ़ा रहा है। नतीजा यह होता है कि शहर रात में भी गर्मी को सोखते रहते हैं और वह गर्मी नागरिकों को झुलसाती रहती है। यदि शहरों की डिज़ाइन में पेड़, जल स्रोत, वेंटिलेशन और टिकाऊ निर्माण सामग्री को प्राथमिकता दी जाए, तो इस संकट को कम किया जा सकता है।

समस्या यह है कि जलवायु परिवर्तन को अभी भी आम जनजीवन से जोड़कर नहीं देखा जा रहा है। यह केवल जलवायु सम्मेलन, नीति पत्रों या तकनीकी चर्चा तक सीमित है, जबकि यह बच्चों की पढ़ाई, महिलाओं के श्रम, और बुजुर्गों के स्वास्थ्य का भी सवाल है।

जलवायु संकट से निपटने की लड़ाई केवल वैज्ञानिकों या नीति-निर्माताओं की चिंता भर से नहीं जीती जा सकती। जब तक स्थानीय समुदायों को इस संघर्ष का सक्रिय सहभागी नहीं बनाया जाएगा, तब तक कोई भी नीति ज़मीनी स्तर पर प्रभाव नहीं छोड़ पाएगी। अब वक्त आ गया है कि मौसम के बदलते मिजाज को गंभीरता से लेते हुए हम जलवायु संकट के प्रति सजग और सक्रिय हों।

आज देश के कई हिस्सों में युवा, किसान, महिलाएं और सामाजिक संगठन स्थानीय स्तर पर जल स्रोतों के संरक्षण, वृक्षारोपण और टिकाऊ जीवनशैली को अपनाने में जुटे हैं। ऐसे प्रयासों को व्यापक समर्थन और नीति-स्तरीय स्वीकृति मिलनी चाहिए।

मौजूदा जलवायु संकट का समाधान केवल 'मुकाबला' नहीं, बल्कि 'सहजीविता' में है। जब तक यह मूल सोच नहीं बदलेगी, तब तक वैज्ञानिक चेतावनियाँ केवल रिपोर्टों में दबकर रह जाएंगी, और असली संकट हमारे जीवन को भीतर तक झुलसाता रहेगा।

क्या इस पर्यावरण दिवस पर हम चेतेंगे, अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकारेंगे और बदलाव की शुरुआत करेंगे? प्रकृति अब और इंतज़ार नहीं कर सकती।

अपनी सुरक्षा को लेकर हम भयभीत क्यों?

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

आज के समाज की सबसे बड़ा प्रश्न है सुरक्षा। सुरक्षा चाहे किसी की भी हो। आए दिन हम समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि फलाने ने रास्ते चलते किसी स्त्री को मानसिक प्रताड़ना दी या फिर शारीरिक प्रताड़ना दी। यहां तक कि आप किसी भी उम्र के हो। आपको एक भय लगा रहता है कि क्या आप सच में कैब में जाना चाहते हैं या कैब की अपेक्षा आप पैदल जाना चाहते हैं? किसी भी पब्लिक ट्रांसपोर्ट की जहां तक बात है तो ये कोई गुप्त बात नहीं है कि पब्लिक ट्रांसपोर्ट में स्त्रियों को मानसिक या शारीरिक यातना का सामना करना पड़ता है। यह है कि क्यों करना पड़ता? क्या हम और हमारा समाज जिसे हम बहुत ही संतुलित और पढ़ा-लिखा कहते है, सच में स्त्रियों की स्थिति में सुधार ला पा रहा है?

यह सच है कि आज के युवा बहुत पढ़े लिखे है। आज का समाज पहले के समाज से अलग है। हाँ, मैं तो कहूँगी कि बहुत अलग है, लेकिन मात्र पढ़ाई के मामले में अलग है। हम कह सकते हैं हम पढ़े लिखे हो रहे हैं। हम बहुत आधुनिक हो रहे हैं। आधुनिकता का हर सामान हमारे भावी पीढ़ी के पास है। यदि भावनाओं की बात की जाए तो उसमें इतनी कमी है जिसके बारे में सोच कर भी शर्म आती है। एक स्त्री होने के नाते मैं किसी और की बात न करके अपनी ही बात करूं तो जब मुझे अपने घर से बाहर कहीं जाना होता तब मेरी भी पब्लिक ट्रांसपोर्ट में फर्स्ट परेफरेंस कार न होकर एक ऑटो ही होता है क्योंकि दिमाग के किसी एक कोने में यह डर बना रहता है, कि ऑटो ही ठीक है। कहीं कुछ हो गया तो कूद तो पाएंगे। लेकिन यह लिखना, यह सोचना अपने आप में ही शर्मसार करने वाला है। क्यों कुछ हो जाए? आखिर क्यों हम पहले यह सोचे की कुछ हो ही जायेगा? परन्तु दु:ख की बात है कि कितने लोगों के साथ अनहोनी घटनाएं नहीं होती? क्या हम अपने समाज को एक सही संरचना दे पा रहे है? क्या हमारी बेटियां, हमारी बहनें, यहाँ तक कि उम्रदराज महिलाएं भी सुरक्षित है? अगर है तो कितनी? इस सवाल का जवाब हम सब के पास है, लेकिन बोलना कोई नहीं चाहता। अगर किसी एक लड़की को हम चलते फिरते फब्तियां कसे और सोचे की हमने कौन सा उसे शारीरिक कष्ट दिया है? पर उन फब्तियों का प्रहार उसके मन उसकी आत्मा पर कितना गहरा होता है। इसका अंदाजा शब्दों में लगाना कठिन है।

मानसिक प्रताड़ना शारीरिक प्रताड़ना से कहीं ज्यादा पीड़ादायक होती है। एक स्त्री को जब घर से बाहर काम के लिए जाना पड़ता है तो सबसे पहला प्रश्न होता है कि वह अपनी सुरक्षा किस-किस से और कब तक करें? क्या स्त्रियों का काम सिर्फ यही रह गया कि पहले तो वह घर का काम करें फिर बाहर जाकर काम करें और यही देखती रहे कि कौन उसके लिए खतरा है? हम क्यों नहीं अपने समाज में एक सुरक्षित माहौल दें पाने में सफल हो रहे है? आए दिन हम बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के नारे लगाते है पर सच में क्या हम बेटियों को बचा पा रहे है? कैसे मात्र पढ़ने से बेटियां बच जाएंगी? तो किस प्रकार बचेंगी बेटियां? बेटों की सही परवरिश से ही हमारी बेटियाँ भी बच पाएंगी। पहला स्कूल यानी घर। जब वहाँ पर स्त्री के लिए मानसिकता बदलेगी तब बेटे एक अच्छे समाज का निर्माण कर पाएंगे। तब तक कहीं न कहीं हम सबके अंदर एक भय बना रहेगा।हमारे सामने ही कई ऐसी घटनाएं होती हैं कि जब किसी स्त्री को प्रताड़ित किया जाता है और लोग वीडियो बना लेते है। क्या कभी किसी वीडियो बनाने वाले ने स्त्री की रक्षा की? इस ऑडियो और वीडियो के जमाने में हम अपने आप को मॉडर्न तो बहुत बना रहे हैं लेकिन उतने ही अब हमारी मानसिक नपुंसकता भी बढ़ती जा रही है। अपने भीतर के पुरुष के अहम को शांत करने के लिए हम अपनी ही कमजोरी का तमाशा बना रहे है, पर यह हम है कौन? क्या इसी हम से हमारी बेटियों के साथ-साथ हमारे भीतर का पुरुष तो नहीं डरा हुआ कि कहीं हमारे जैसा कोई पुरुष हमारे घर की बच्ची का इंतजार तो नहीं कर रहा? यह सवाल जब तक हमारी सोच पर हावी रहेगा तब तक हमारा समाज में पुरूषों से अधिक लाचार कोई अन्य न होगा। हमें यह भी विचार करना चाहिए कि किसी एक पुरुष की गलती के कारण कई ईमानदार पब्लिक ट्रांसपोर्ट वाले चाहे वह कैब वाले हो, टैक्सी वाले हो, ऑटो वाले हो या किसी दफ्तर और अन्य किसी भी जगह में कार्यरत हो, उनपर भी प्रश्नचिह्न लगता है। यदि हम एक आदर्श समाज चाहते है तब उसके निर्माण का दायित्व भी हमारा ही है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

खुशनुमा पल का हाईवे

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भारत वह भूमि है, जहां जीव अपने आनंद के लिए नई-नई जगह तलाशते रहता है। यह उतना ही सत्य है, जितना सूर्य का उगकर डूब जाना। आनंद रस में डूबने के लिए इस भू-भाग पर पार्क, खंडहर, निर्माणाधीन मल्टी स्टोरीज और यहां तक कि पांच सितारा होटल्स का भी उपयोग किया जाता है, लेकिन फिर भी संतुष्टि न मिले तो इंसान इतना उत्कंठित हो जाता है कि खुशनुमा पल बिताने के लिए रोड पर आ जाता है। रोड भी ऐसा-वैसा नहीं आठ पट्टीधारी तीसरी आंख से सुसज्जित। इसमें मानव की भूल कहां?

सरकारों ने भी तय कर लिया है कि उत्कंठित, उत्तेजित और मन से व्यथित मानव की सहायतार्थ अपने सारे राष्ट्रीयकृत राजमार्गों को खुशनुमा पल बिताने के लिए ओपन किया जाएगा। यह बकबास नहीं, पिछले महीने में हुई राष्ट्रीयकृत राजमार्ग पर घटित उस घटना से संदर्भित है, जिसने देश ही नहीं विदेश में भी हमारी धाक जमाई। ऐसे खुशनुमा पल बिताने वाले अखंड त्यागी के ही माध्यम से भले ही यह संदेश पुलिस ने भी ग्रहण किया कि इंसान को खुशनुमा पल बिताने के लिए चाहरदीवारी की जरूरत नहीं, पर्दा प्रथा का हम विरोध राजा राममोहन राय के जमाने से करते आ रहे हैं। हमारे बुजुर्ग यह कहते-कहते गोलोक धाम चले गए कि इंसान की कुछ 'हरकते' पर्दे में ही ठीक लगती हैं। अब देखिए, टीवी चैनल पर आने वाले सीरियल में पर्दा प्रथा को किस तरह दरकिनार कर उखाड़े बदन के समागिंलगन दृश्य परिवारों के बीच इनकी टीआरपी बढ़ा रहे हैं। इतना ही नहीं सीरियल में सास की भी सास बूढ़ी नहीं होती। राजमार्ग जैसे अर्ध दृश्य तो घरों के ड्राइंग रूम में खुशी-खुशी देखे जा रहे हैं और हम हैं कि सीरियल को एक से 10 नंबर का खिताब देकर दौड़ में बनाए रखने का नैतिक दायित्व भी निभा रहे हैं। जैसा कि पिछले दिनों पुलिस के समक्ष जब यह बयान आया कि 'मैं तो वहां कुछ खुशनुमा पल बिताने के लिए गया था', इसमें बुरा क्या? मुआ कैमरा ही अपना मुंह छिपा लेता। कम से कम कैमरा ही शर्मसार हो जाता। ऐसे वक्त में विद्युत विभाग की अपनी पूरी कर्तव्य परायणता निभाता है। कमबख्त बिजली भी उस वक्त बंद नहीं की। अब यहां कैमरे की क्वालिटी पर शायद ही कोई सवाल नहीं उठाए। टेस्टिंग हो गई कि तस्वीरें साफ-सुथरी और बेहतरीन खींचता है। खैर, पुलिस को अपनी गलती का अहसास हुआ और खुशनुमा पल जी कर आए 'बंदे' को जमानत दे दी वह भी 'एआई के युग में और कहा- जा, जी ले अपनी जिंदगी'।

पुलिस को भी भान नहीं रहा कि पूरा घटनाक्रम जीवन में खुशियां तलाशने के लिए सरेआम किया गया। इसमें किसी का नेता हो जाना कोई दोष तो नहीं है। नेता भी इंसान ही होते हैं। इंसानों को अपने खुशनुमा पल जीने का हक है। चाहे वह परदे में हों या फिर सड़क पर। मुझे, आज से 55 साल पहले आई फिल्म आन मिलो सजना के गीत के मुखड़े की लता मंगेश्कर द्वारा गाई वह पंक्ति याद आ गई जिसमें 'किशोर दा के पूछने पर फिर कब मिलोगी, कहां...जुमेरात को आधी रात को, इस पर जबाव आता है कि वहीं....जहां कोई आता-जाता नहीं' अब बताइए जब इंसान खुशनुमा होने के लिए 55 साल पहले ही सजग थे तो आज इतना बवंडर क्यों? कुछ तो सोचना चाहिए न और फिर गलती इंसानों से ही होती है, जानवर तो बेचारे हैं.... ! उनका क्या? उधर, दल ने निर्णय किया कि अब मिस्ड कॉल अभियान बंद कर दिया जाएगा। इससे बहुत फजीहत हो रही है। 'जुबान तो जुबान' मन भी बेकाबू हो रहा है। उधर, पार्श्व में यह स्वर उभरा 'मन क्यों बहका रे बहका आधी रात को.... ।'

पर्यावरण दिवस विशेष

डॉ. चित्रा माली
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विवि वर्धा के कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र की प्रभारी

पर्यावरणीय नैतिकता ही सबसे बड़ा विश्व धर्म

मनुष्य जिस जगत-प्रकृति से घिरा हुआ है उसका मनुष्य के चिंतन के साथ और उसके कार्य के साथ आंतरिक योग है। यदि मनुष्य का संसार नितांत 'मानवमय' हो उठे,यदि मनुष्य के पीछे-पीछे प्रकृति भी उसमें प्रवेश न कर सके,तो हमारे विचार और कर्म कलुषित तथा व्याधिग्रस्त होंगे,अपनी मलिनता के अथाह सागर में आत्महत्या कर बैठेंगे। प्रकृति हमारे बीच नित्य काम करते हुए भी यह दिखाती है कि वह चुपचाप खड़ी है, जैसे हम ही काम-काज में व्यस्त हो और वह बेचारी केवल अलंकार की वस्तु हो। सर्वप्रथम जब भारतीय सभ्यता का विकास हुआ,लोग एक-दूसरे से बिल्कुल सटकर नहीं बैठे,उन्होंने एक साथ जमा होकर भीड़ नहीं जमाई। यहां वृक्ष-नदी-सरोवर का मनुष्य के साथ लोग बना रहा।

जैन दर्शन के आचारंग सूत्र के अनुसार किसी एक जीवन अथवा जीव समूह को अथवा संपूर्ण परिवेश को समेटे रखने वाली सभी भौतिक वस्तुओं और परिस्थिति का वह जाल जो अंततः उसके रूप तथा अस्तित्व को निर्धारित करता है 'पर्यावरण' कहलाता है। पर्यावरणजनित वनस्पतियों और मनुष्य में कई समानताएं भी है जैसे दोनों का जन्म होता है, दोनों बढ़ते हैं, दोनों अनित्य हैं, दोनों अशाश्वत हैं। प्रकृति मनुष्य के साथ मनुष्य के संबंधों को और मनुष्य के व्यवहार को पर्यावरणीय नैतिकता से जोड़ने का कार्य करता है,जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को संरक्षित रखा जा सके। पर्यावरण का जो संरक्षण हमें प्राप्त है,उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संरक्षित और संवर्धित रखने का दायित्व भी हम सभी का है।

गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर अपने निबंध 'तपोवन' में पश्चिम से आ रही नगर संस्कृति का जिसमें प्रकृति का घोर शोषण होता है के विरोध में भारत की अरण्य संस्कृति की उच्चता को स्थापित करते है। वे भारतीय तथा यूरोपियों के प्रकृति संबंधी दृष्टिकोण में अंतर भी प्रकट करते है जो यूरोपीय वर्चस्ववाद का प्रतिरोध है। वे लिखते है कि मनुष्य जिस जगत-प्रकृति से घिरा हुआ है उसका मनुष्य के चिंतन के साथ और उसके कार्य के साथ आंतरिक योग है। यदि मनुष्य का संसार नितांत 'मानवमय' हो उठे,यदि मनुष्य के पीछे-पीछे प्रकृति भी उसमें प्रवेश न कर सके,तो हमारे विचार और कर्म कलुषित तथा व्याधिग्रस्त होंगे,अपनी मलिनता के अथाह सागर में आत्महत्या कर बैठेंगे। प्रकृति हमारे बीच नित्य काम करते हुए भी यह दिखाती है कि वह चुपचाप खड़ी है,जैसे हम ही काम-काज में व्यस्त हो और वह बेचारी केवल अलंकार की वस्तु हो। सर्वप्रथम जब भारतीय सभ्यता का विकास हुआ,लोग एक-दूसरे से बिल्कुल सटकर नहीं बैठे,उन्होंने एक साथ जमा होकर भीड़ नहीं जमाई। यहां वृक्ष-नदी-सरोवर का मनुष्य के साथ लोग बना रहा। यहां मनुष्य भी था,निर्जन स्थान भी था,निर्जनता से भारत का चित्त जड़ नहीं हुआ,वरन उसकी चेतना और भी उज्ज्वल हो उठी। हम कह सकते हैं कि शायद दुनिया में और कहीं ऐसा न हुआ होगा। पहले-पहल जब लोग एक स्थान पर जमा होकर नगर बसाते थे तो उनकी यह रचना सभ्यता के आकर्षण से नहीं होती थी। शत्रुओं के आक्रमण से बचने के लिए लोग किसी सुरक्षित स्थान पर एकत्रित होने लगे। जहां भी अनेक मनुष्य एक स्थान पर साथ-साथ रहने लगते हैं वहां उनके प्रयोजन और बुद्धि को एक विशिष्ट रूप मिल जाता है और सभ्यता की अभिव्यक्ति होने लगती है। लेकिन भारतवर्ष में आश्चर्यजनक बात देखी गई। यहां सभ्यता का मूल स्रोत नगर में नहीं, बल्कि वन में था। प्राचीन भारत में वन की विजनता ने मानवीय बुद्धि को पराजित नहीं किया, वरन एक ऐसी शक्ति प्रदान की जिससे उस वनवासजन्य सभ्यता की धारा ने सारे भारत को अभिषिक्त किया। आज भी उस धारा का प्रवाह रुका नहीं है। भारत ने अपनी सभ्यता का परिचय मुख्य रूप से ऐश्वर्य के उपकरणों द्वारा नहीं दिया। इस सभ्यता के कर्णधार अरण्य-निवासी,अल्पवसन तपस्वी थे। मनुष्य जाति का इतिहास जीव-धर्मी है। एक निगूढ़ प्राण-शक्ति उसे आगे बढ़ाती है। वह लोहे-पीतल की तरह सांचे में ढालने की चीज नहीं है। हो सकता है कि किसी विशेष समय पर

बाजार में किसी विशेष सभ्यता का भाव बहुत तेज हो जाए लेकिन सारे मानव-समाज को ही कारखाने में ढालकर फैशन से प्रभावित मूढ़ खरीददारों को खुश करने की आशा बिलकुल व्यर्थ है। छोटे पैरों को सौंदर्य का अभिजात लक्षण मानकर चीन की स्त्रियों ने कृत्रिम उपायों से अपने पैरों को संकुचित बनाना चाहा। लेकिन इस प्रयत्न से उन्हें छोटे पैर नहीं,बल्कि विकृत पैर मिले।भारत भी यदि जबरदस्ती अपने-आपको यूरोपीय आदर्शों पर ढाले तो वह प्रकृत यूरोप नहीं बन सकता विकृत भारत ही बन सकता है। एक देश का दूसरे देश के साथ यथार्थ संबंध अनुकरण पर नहीं आदान-प्रदान पर आधारित होता है। जो चीज हमारे पास अधिक मात्रा में है वही अगर अन्य के पास भी हो, तो हम दोनों में लेन-देन नहीं चल सकता। भारत यदि विशुद्ध रूप से भारत न हो तो विदेशियों के बाजार में मजदूरी करने के अतिरिक्त दुनिया में उसका कोई प्रयोजन नहीं रहेगा। ऐसी दशा में वह आत्म-सम्मान बोध खो देगा और अपने आप में उसे आंनद प्राप्त नहीं होगा। भारतवर्ष ने जिस सत्य को अपने निश्चित भाव से उपलब्ध किया है वह सत्य क्या है? वह सत्य प्रधानतः वणिक-वृति नहीं है,स्वदेशिकता नहीं है, स्वराज्य नहीं है-वह है विश्व-बोध। इस सत्य की भारत के तपोवन में साधना हुई है। चूने-गारे से बने नगरों के विस्तार के सामने उन्होंने प्राचीन वन संस्कृति जिसने तपोवन की अवधारणा उत्पन्न की उसके महत्व के बारे में विस्तार से लिखा। लेकिन वर्तमान समय में पूंजीवादी व्यवस्था ने अधिक उपभोग करने की प्रणाली को जन्म दिया है जो उपभोक्तावादी संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। इसी संदर्भ में रवींद्रनाथ टैगोर का एक लेख 'रॉबरी ऑफ द सॉइल' जो आज से कई वर्षों पूर्व लिखा गया था,वह आज भी प्रासंगिक है। टैगोर का मानना है कि एक उच्चस्तरीय जीवनशैली की जो चाह पहले समाज के एक छोटे हिस्से में ही व्याप्त थी, वह महत्वाकांक्षा के रूप में अब समाज के एक बड़े हिस्से में फैल गई है। इसी के परिणामस्वरूप हर कहीं पानी खत्म हो रहा है तो कहीं पेड़ों की कटाई हो रही है और धरती बंजर हो रही है। आधुनिक सभ्यता लक्ष्मी का आसन जिस कमल पर विद्यमान है वह ईट और लकड़ी का बना है-वह नगर है। उन्नति का सूर्य जैसे-जैसे आकाश में ऊपर उठता है, इस विशाल कमल की पंखुड़िया खिल-खिलकर चारों और व्याप्त हो जाती हैं। इस चूने-गारे के विस्तार को रोकना पृथ्वी के लिए असंभव सा हुआ जा रहा है। गांधी जी ने भी इस उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति का लगातार विरोध किया,वे हमेशा अपरिग्रह के सिद्धांत पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित करते रहे। गांधी जी ने प्रकृति और मनुष्य के रिश्तों को परस्पर सहयोग के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान की जिसमें गांधी जी ने कहा कि 'प्रकृति हर मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है लेकिन किसी भी एक मनुष्य के लालच को पूरा करने में वह असमर्थ है'। इसलिए प्रकृति से आवश्यकता अनुसार ग्रहण किया जाना चाहिए और इसके एवज में हमें प्रकृति का संवर्धन और संरक्षण करना चाहिए। जो हमारे परस्पर सहयोग और प्रेम पर टिकी व्यवस्था है। गांधी जी के अनुसार सृष्टि के प्रेम का नियम ही ईश्वर का नियम है जो हमें पर्यावरण और जीवजगत से जोड़कर एक दूसरे का सहचर बनाता है। उपभोक्तावादी संस्कृति के पराधीन होकर आज हम विनाश के इस जश्न में शामिल रहेंगे और प्रति वर्ष की भांति हमारे द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर फ़ोटो शेयर कर पर्यावरण का संरक्षण किया जाएगा। जल,जंगल,जमीन से जुड़े महत्वपूर्ण सवाल है जो विकास और खासकर व्यक्ति या कहें सीधे सीधे जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। आज जमीनी स्तर पर कार्यरत विभिन्न समाज सेवियों को इन प्रश्नों से टकराने की जरुरत है। पर्यावरण विषय के अनुशासनों को शैक्षणिक स्तर पर पाठ्यक्रमों में शामिल तो किया गया है लेकिन अभी तक राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर पर्यावरणीय नैतिकता की आवश्यकता है ताकि मानवीय सभ्यता के एक सुनहरे भविष्य के लिए और मानवीय अस्तित्व को बचाने के लिए छोटे से स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक ईमानदारी से प्रयास किए जाएं। ताकि तपोवन की संस्कृति और अरण्य-निवासियों के अस्तित्व को बचाया और बनाया रखा जा सके जिसके लिए वे लगातार संघर्ष कर रहे हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस

आरबी त्रिपाठी
लेखक स्तंभकार हैं।

लवली मौसम या जलवायु परिवर्तन का असर

पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन तथा प्रदूषण पर बात शुरू करने के पहले आइये पिछले दिनों की हेडलाइंस जो सुर्खियों में रही उन पर नजर डालते हैं। एक ऐसे वक्त जब भीषण प्रचंड गर्मी से लोग बेहाल होते हैं तब आईटी सिटी बेंगलुरू से लेकर केरल, तमिलनाडु, कोंकण गोवा, पुणे, मुंबई, बारामती से लेकर मध्यप्रदेश के कई स्थानों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली एनसीआर तक आंधी-तूफान तथा कहीं-कहीं भारी बारिश, आकाशीय बिजली से मौतें और बद्रीनाथ हाईवे पर लंबा जाम लगने से तीर्थयात्रियों को हो रही परेशानी पढ़ने-सुनने को मिल रही थी। तभी बीती 24 तथा 25 मई को मुंबई में भारी बारिश, जलभराव की वजह से जनजीवन प्रभावित हुआ और वहाँ की जीवन रेखा लोकल ट्रेन का संचालन भी इससे अछूता नहीं रहा।

विश्व पर्यावरण दिवस के एक पखवाड़े पूर्व से ही देश विदेश में मौसम के अलग-अलग नजारे सामने आने लगे थे। यह ग्लोबल वार्मिंग या अलनीनो का प्रभाव था या धरती के तापमान बढ़ने का असर कि फिर मौसम की अनिश्चिता। इतना अवश्य है कि हमारे देश से लेकर विदेशों तक कमोबेश मौसम के विविध रूप सामने आ रहे हैं। कहीं प्रचंड गर्मी से बढ़ता तापमान तो कहीं असमय की भारी बारिश, भूस्खलन, आंधी-तूफान, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाएं। ऐसे में श्रीनगर में लैंड करने वाली फ्लाइट एयर टर्बुलेंश में फंसकर पड़ोसी पाकिस्तान के एयर स्पेस का इस्तेमाल करना चाहती थी लेकिन पाक ने अनुमति नहीं देकर अमानवीयता का पुनः परिचय दिया। अंततः पायलट ने साहस और सूझबूझ से उसे सुरक्षित लैंड कराया।

पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन तथा प्रदूषण पर बात शुरू करने के पहले आइये पिछले दिनों की हेडलाइंस जो सुर्खियों में रही उन पर नजर डालते हैं। एक ऐसे वक्त जब भीषण प्रचंड गर्मी से लोग बेहाल होते हैं तब आईटी सिटी बेंगलुरू से लेकर केरल तमिलनाडु, कोंकण गोवा, पुणे मुंबई बारामती से लेकर मध्यप्रदेश के कई स्थानों, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली एनसीआर तक आंधी-तूफान तथा कहीं कहीं भारी बारिश, आकाशीय बिजली से मौतें और बद्रीनाथ हाईवे पर लंबा जाम लगने से तीर्थयात्रियों को हो रही परेशानी पढ़ने-सुनने को मिल रही थी। तभी बीती 24 तथा 25 मई को मुंबई में भारी बारिश, जलभराव की वज़ह से जनजीवन प्रभावित हुआ और वहाँ की जीवन रेखा लोकल ट्रेन का संचालन भी इससे अछूता नहीं रहा।

इस बीच बीती 28 मई को मौसम विभाग ने दक्षिण-पश्चिम मानसून के अनुकूल रहने से जून से सितंबर तक सामान्य से अधिक यानी 106 प्रतिशत बारिश का अनुमान व्यक्त किया है जो एक सुखद संभावना कही जायेगी। हालांकि यह भी सच है कि मौसम विभाग जब मानसून के तीन दिन के भीतर मुंबई पहुंचने की भविष्यवाणी कर रहा था तब उसके पहले ही मुंबई पानी- पानी हो चुकी थी। उधर दिल्ली एयरपोर्ट टर्मिनल एक पर पानी भरने से एक सैकड़ा फ्लाइट्स प्रभावित हुई। तो हिमाचल प्रदेश के कुल्लू के पास बादल फटने से वाहन बहने लगे थे।

जब दिन-प्रतिदिन मानसून के आगे बढ़ने और समय से पहले केरल पहुंचने की संभावनाएं बताई जा रही थी तब राजस्थान के सरहदी इलाकों बाड़मेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, जोधपुर आदि में तापमान 45 डिग्री से भी कहीं- कहीं अधिक बना हुआ था। मध्यप्रदेश के खजुराहो और नौगांव आदि में भी पारा इसी तरह 45 डिग्री को छू रहा था।

वैश्विक परिदृश्य की संक्षेप में बात की जाये तो आस्ट्रेलिया में इस दौरान भारी वर्षा से बाढ़ की स्थिति से लोगों को आ रही मुश्किलों की तस्वीरें सामने आ रही थी तो रूस के एक भाग में जंगलों में भीषण आग और हमारे देश में कुछेक वन क्षेत्रों में आग से अमूल्य पेड़ों, कीमती वनस्पति संपदा के नष्ट होने पर चिंता जाहिर की जा रही थी। अक्सर खबरों की दुनिया में कहा जाता है कि फलां ख़बर जंगल में आग की तरह फैल गई लेकिन जब वास्तविकता में जंगलों में आग फैलती है तो तब कुछ उपाय एकदम नहीं सूझते फिर भले ही आग पर काबू के लिये हेलीकॉप्टर से ही क्यों ना पानी का छिड़काव किया जाये। जंगल की आग का

अपना अलग गणित है।

सो, कुल मिलाकर लब्बोलुआब यह है कि हम इंसान तो कभी सुधर सकते नहीं इसलिये यह कहना कि पर्यावरण संरक्षण के लिये बड़ी तादाद में पौधरोपण कर उनकी हिफाज़त और देखरेख का जिम्मा लें, प्लास्टिक और उससे बनी वस्तुओं का इस्तेमाल कम करें, पॉलिथिन के उपयोग को भूल जायें और एसी का इस्तेमाल कम से कम करें ताकि तापमान में वृद्धि रोकी जा सके, बारिश की अमूल्य बूंदों को सहेजें जिससे कि भूमिगत जल भंडार बढ़ सकें, ऐसी बातें कितने लोगों को सुहाती होगी? ज्यादातर लोगों के ऐसी बातें गले ही नहीं उतरती बल्कि इनके विपरीत ही आचरण करना पाया जाता है। सड़कों पर खड़ी किसी लग्जरी कार के समीप से गुजरिये तो आपको लगेगा आग के गोले के पास के निकले हैं। लेकिन इसकी फिक्र कितनों को है कि हम देखादेखी कितने लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रहे हैं। बड़े भवनों में बहुतायत से लगे ऐसी दिन रात आग उगलते रहते हैं।

ऐसे में भोपाल, इंदौर, राजगढ़ समेत दूरस्थ देहातों से सामने आये कुछ प्रयास सुखद बयार की तरह प्रतीत होते हैं। राजधानी भोपाल के अयोध्या बायपास के समीप लगभग 8 हजार पेड़ों की कटाई को रोकने के लिये लोग सड़क पर उतर आये और रक्षा सूत्र बांधकर चिपको आंदोलन सरीखा दृश्य उपस्थित किया। पर्यावरण मंच के तले इस मुहिम में बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी रही। पेड़ बचेंगे या नहीं यह तो आने वाले वक्त में पता लगेगा लेकिन भोपाल की यह मुहिम सराहनीय और अन्य के लिये अनुकरणीय है। इसी तरह की मुहिम भोपाल के तुलसी नगर, शिवाजी नगर में कटने जा रहे दरख्तों को बचाने के लिये भी पिछले साल चलाई गई थी।इन कोशिशों में सहभागी लोग सही मायने में 'पर्यावरण के पहरुए' कहे जाने चाहिये। इंदौर में बिजली की खपत में बचत के लिये एक अच्छी पहल शुरू की गई। यहाँ रिकॉर्ड संख्या में सोलर सिस्टम लगाये गये हैं। इंदौर नगर निगम का नया भवन भी ग्रीन एनवायरमेंट के पैटर्न पर होगा। पिछली बरसात में शहर के आसपास तकरीबन 51 लाख पौधे लगाने का अभियान चलाया गया था।

उधर राजगढ़ जिले में बने मोहनपुरा डेम से सूखी बंजर पड़ी पहाड़ी इलाके की तस्वीर बदल गई है। महाराष्ट्र के आमलनेर में महिलाओं ने आगे आकर वहाँ की सूखी नदी को रिचार्ज कर वाटर मैनेजर प्रोग्राम शुरू किया। इससे चार साल में ही भूजल स्तर में वृद्धि हुई। सो पर्यावरण से जुड़े कोई भी काम महज सरकारों के भरोसे नहीं हो सकते। इसके लिये खुद लोगों को आगे आना होगा। बड़े-बड़े सेमिनार, सम्मेलन से कोई चमत्कार होता तो अब तक हो जाता। पर्यावरण महकमे तथा एप्को जैसी संस्थाओं की स्टडी और शोध कार्यों को धरातल पर उतारना होगा। साथ ही ध्वनि, वायु प्रदूषण को रोकने और प्लास्टिक के इस्तेमाल को बंद करने की दिशा में ठोस उपाय आज के वक्त की जरूरत है।

इस दफा पर्यावरण दिवस 'प्लास्टिक से मुक्ति' की थीम पर केन्द्रित है। यानी प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग को कम से कम करने हेतु सामूहिक कोशिशों की दरकार है। एक रिपोर्ट के मुताबिक मनुष्य शरीर में किसी ना किसी रूप में हजारों माइक्रो प्लास्टिक कण प्रविष्ट कर चुके हैं जो सेहत की दृष्टि से खतरे की घंटी है। पानी की बॉटल्स, प्लास्टिक बर्तन, सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल को यथासंभव रोकना चाहिये।

पर्यावरण के क्षरण का जिम्मेदार कौन?

प्लास्टिक प्रदूषण

प्रो. नीलिमा गुप्ता
(कुलपति, डॉ हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय)

हमारा दैनिक जीवन कई तरह के प्रदूषण को बढ़ावा देता है, जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। हम वनों की कटाई और वनस्पति विनाश में योगदान कर रहे हैं, जिससे जैव विविधता को खतरा है। हम प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग कर रहे हैं, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है। हम तमाम तरह की ऊर्जा की बर्बादी कर रहे हैं, जिससे प्राकृतिक संसाधनों की लगातार कमी हो रही है। 'विश्व पर्यावरण दिवस 2025' की थीम 'प्लास्टिक प्रदूषण को हराना' है। जिसका उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण के प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करना है।

वैश्विक स्तर पर 3.2 बिलियन लोगों के प्रभावित होने के साथ, पर्यावरण क्षरण दुनिया के 30 प्रतिशत से अधिक भूमि क्षेत्र और विकासशील देशों में 40 प्रतिशत भूमि को प्रभावित कर रहा है। माना जाता है कि भूमि क्षरण 1.5 बिलियन लोगों के जीवन को प्रभावित करता है और मानवजनित गतिविधियों और जलवायु परिवर्तन के कारण हर साल 15 बिलियन टन उपजाऊ मिट्टी नष्ट हो जाती है। पिछले 10 वर्षों में औसत तापमान 1.1 डिग्री बढ़ गया है। 2030 तक 1 डिग्री तापमान और बढ़ने की संभावना है। समुद्री स्तर 4.4 एमएम प्रति वर्ष बढ़ रहा है और समुद्र में कार्बन डाई ऑक्साइड 380-3 पीपीएम से 402.0 पीपीएम की वृद्धि हुई है। कार्बन डाई ऑक्साइड बढ़ने से समुद्रीय पानी में अम्ल बढ़ने से जलीय मूंगा चट्टान खतरे में आ गए हैं। पर्यावरण क्षरण एक गंभीर समस्या है जो पूरे विश्व में फैल रही है। इसके कारण विविध हैं और इसके प्रभाव भी व्यापक हैं। पर्यावरण के क्षरण द्वारा दिनोंदिन प्राकृतिक संसाधनों में गिरावट आ रही है। प्रदूषण, वनोन्मूलन, और जलवायु परिवर्तन इस क्षरण के उदाहरण हैं। पर्यावरण क्षरण एक गंभीर समस्या है जिसका सामना आज पूरी दुनिया कर रही है।

औद्योगिक प्रदूषण के कारण, पर्यावरण का तेजी से क्षरण हो

रहा है। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन और पेड़ों की कटाई बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे पर्यावरण का क्षरण भी बढ़ रहा है। यह जानना आवश्यक है कि इस क्षरण का जिम्मेदार कौन है और क्यों यह क्षरण लगातार बढ़ता जा रहा है? इस समय भारत की जनसंख्या विश्व भर में सबसे अधिक है। बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है, जिससे उनमें कमी आ रही है। वनों की कटाई से जैव विविधता को खतरा है और मिट्टी का क्षरण हो रहा है। वायु, जल और मिट्टी के प्रदूषण से पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है। पर्यावरण क्षरण का एक कारण तथा जीवाश्म ईंधन के दोहन भी हैं। कृषि गतिविधियों से मिट्टी का क्षरण, लवणता और पोषक तत्वों की हानि बढ़ती जा रही है। पर्यावरणीय गिरावट से हवा, पानी और मिट्टी जैसे संसाधनों की गुणवत्ता में कमी, पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश, आवास का विनाश, वन्यजीवों का विलुप्त होना और प्रदूषण के माध्यम से पर्यावरण की निरंतर गिरावट आना सर्वविदित है। पर्यावरण में किसी भी परिवर्तन या गड़बड़ी को क्षरण के रूप में परिभाषित किया जाता है जो हानिकारक या अवांछनीय हैं। पर्यावरणीय गिरावट की प्रक्रिया पर्यावरणीय मुद्दों के प्रभाव को बढ़ाती है जो पर्यावरण पर स्थायी प्रभाव छोड़ती है।

पर्यावरण क्षरण के प्रभाव से मिट्टी का क्षरण होता है, उपजाऊ भूमि की कमी होती है और जैव विविधता पर विपरीत प्रभाव से पारिस्थितिक तंत्र को खतरा बढ़ जाता है। जलवायु परिवर्तन से मौसम के स्वरुप में बदलाव होता है और प्राकृतिक आपदाएं बढ़ जाती हैं। पिछले 10 वर्षों में औसत तापमान 1.1 डिग्री बढ़ गया है। 2030 तक 1 डिग्री तापमान और बढ़ने की सम्भावना है। समुद्री स्तर 4.4 एमएम प्रति वर्ष बढ़ रहा है और समुद्र में कार्बन डाई ऑक्साइड 380.3 पीपीएम से 402.0 पीपीएम हो गया है जिसकी वजह से जलीय अम्ल बढ़ा है तथा जलीय मूंगा चट्टान को खतरे की सीमा पार कर रहे हैं। आज तक का सबसे गर्म वर्ष 2024 रहा है और उम्मीद है कि आगे आने वाले समय में मौसम और अधिक गर्म, अम्लीय, समुद्री स्तर में वृद्धि, अधिक तीव्र आंधी, सूखा, प्रजातियों का हनन और अधिक स्वास्थ्य जोखिम भविष्य में दस्तक देंगे।

इस विषम स्थिति में आखिर हमारी जिम्मेदारी क्या है? हमारा दैनिक जीवन कई तरह के प्रदूषण को बढ़ावा देता है, जैसे कि वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। हम वनों की कटाई और वनस्पति विनाश में योगदान कर रहे हैं, जिससे जैव विविधता को खतरा है। हम प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग कर रहे हैं, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है। हम तमाम तरह की ऊर्जा की बर्बादी कर रहे हैं, जिससे प्राकृतिक संसाधनों की लगातार कमी हो रही है।

विश्व पर्यावरण दिवस 2025 की थीम 'प्लास्टिक प्रदूषण को हराना' है। जिसका उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण के प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करना है। प्लास्टिक प्रदूषण को हम शिक्षा और जागरूकता, व्यक्तिगत प्रयास तथा स्थानीय सफाई अभियानों में भाग लेकर और दूसरों को भी प्रेरित करके सामूहिक गतिविधियों द्वारा कम कर सकते हैं।

आज वह समय आ गया है कि हम गंभीरता से सोचें कि हमें क्या करना चाहिए जो हम क्षीण होते हुए पर्यावरण को बचा सकें? हमें पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अपनानी चाहिए। जैसे कि ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करना और प्लास्टिक का उपयोग कम करना। 'एक राष्ट्र, एक मिशन प्लास्टिक प्रदूषण का अन्त' की भावना को व्यापक रूप देना होगा। हमें वृहद स्तर पर वृक्षारोपण कर वनों की सुरक्षा करनी चाहिए। प्रदूषण को नियंत्रण करने के उचित उपाय करने चाहिए, जैसे कि वाहनों का उपयोग कम करना और स्वच्छ ईंधन का उपयोग करना। हमें पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए और आम जन मानस को भी जागरूक करना चाहिए। प्रदूषण नियंत्रण के उपाय करने से पर्यावरण को बचाया जा सकता है तथा ऊर्जा का संरक्षण करके हम पर्यावरण क्षरण को कम कर सकते हैं। इस पर्यावरण दिवस पर, सब मिलकर प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए कार्य करें, हम पर्यावरण की रक्षा के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाएं और एक स्वच्छ और हरित भविष्य के लिए काम करें।

शहर के 33 वार्डों के लोगों को मिलेगी गंदे पानी और खुली नालियों से मुक्ति

शहर में बिछेगी 163 किमी लंबी सीवरेज पाइप लाइन, होगा अंतर्राज्यीय बस टर्मिनल का निर्माण

संजय द्विवेदी

बैतूल। शहर में सीवरेज लाइन निर्माण के लिए शासन से 101 करोड़ रुपए की मंजूरी मिल गई है। इस योजना के अंतर्गत शहर के सभी वार्डो में सीवरेज अंडरग्राउंड पाइप लाइन बिछाई जायेगी और अत्याधुनिक सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जायेगा। जिसके लिए बैतूल विधायक हेमन्त खण्डेलवाल एवं कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने संयुक्त रूप से निरीक्षण कर नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग की दो महत्वपूर्ण योजनाओं सीवरेज प्रोजेक्ट के अंतर्गत एसटीपी प्लांट एवं अंतर्राज्यीय बस टर्मिनल के निर्माण स्थल का जायजा लिया है। निरीक्षण बडोरा क्षेत्र में माचना नदी के उस पार, करबला के पास स्थित पुराने बस स्टैंड के लिए आरक्षित भूमि पर किया गया। इस भूमि का उपयोग एसटीपी प्लांट और आईएसबीटी निर्माण के लिए प्रस्तावित है। दरअसल विधायक हेमन्त खण्डेलवाल द्वारा शासन से 101 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत कराई गई है। यंहा उल्लेखनीय हैं कि घरों से निकलने वाले निस्तार के गंदे पानी को रिसाइकिल कर दोबारा से उपयोग में लिए जाने के लिए शहर में सीवरेज प्रोजेक्ट की डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) नगरीय प्रशासन को भेजी गई थी। जिसे मंजूरी मिल गई है।

खुली नालियां भी लोगों के लिए परेशानी- शहर के 33 वार्डों में गंदे और निस्तारी के पानी की निकासी के लिए नालियों के निर्माण में काफी पैसा खर्च होता है। कई वार्ड ऐसे भी हैं, जहां नालियाँ ना होने या टूट फुट हो जाने से रहवासियों को मुसीबतें झेलना पडता है। ज्यादा परेशानी नालियों के खुले रहने से उठानी पड़ती है। नालियां खुली होने से नालियों में कचरा तो एकत्रित होता ही है, साथ ही नालियों के जाम होने और गंदगी के कारण मच्छरों की समस्या भी उत्पन्न होती है। ऐसे में सीवरेज लाइन निर्माण के प्रोजेक्ट से नागरिकों को खुली नालियों से मुक्ति और शहर की जनता को गंदगी आदि से निजात मिल सकेगी। साथ ही स्वच्छ वातावरण भी मिल पायेगा।

बनेगा 16 एमएलडी क्षमता वाला ट्रीटमेंट प्लांट- घरों के सेटिक टैंक और बाथरूम से निकलने वाले गंदे पानी को रिसाइकिल कर शुद्ध किए जाने के लिए 16 एमएलडी क्षमता का ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जाएगा। यह ट्रीटमेंट प्लांट प्रतिदिन 1 करोड़ 70 लाख लीटर प्रदूषित पानी को रिसाइकिल कर शुद्ध करेगा, ताकि इसका उपयोग अन्य कार्यों के लिए किया जा सके। ट्रीटमेंट प्लांट को इसलिए बड़ा बनाया जा रहा हैं ताकि भविष्य में यदि घरों की संख्या बढ़ती हैं या शहर का विस्तार होता हैं तो प्लांट का संचालन ठीक तरह से हो सके। इसके साथ ही परियोजना के पूर्ण होने पर माचना नदी में नालों का गंदा पानी गिरना बंद हो जाएगा।

शहर में 163 किमी बिछेगी पाइप लाइन- शहर के 33 वार्डों में 163 किमी लंबी सीवरेज की पाइप लाइनों का जाल बिछाया जाएगा। शहर में 17 हजार 55 घरों के सेप्टिक टैंक और बाथरूम के गंदे पानी की निकासी के लिए कनेक्टिंग पाइप लाइन बिछाई जाएगी, जिसे सीवरेज की मेन लाइन से जोड़ा जाएगा। घरों से निकलने वाला यह गंदा पानी एक जगह एकत्रित कर उसे रिसाइकिल किया जाएगा। इससे जहां लोगों को गंदे पानी से होने वाली समस्याओं से मुक्ति मिल जाएगी। वहीं शहर भी प्रदूषण से मुक्त होगा। रिसाइकिल के बाद पानी का उपयोग अन्य कार्यों के लिए किया जा सकेगा। नपा सूत्रों के मुताबिक जो पानी रिसाइकिल होगा, उसका उपयोग पेड़-पौधों, बगीचों को पानी देने के लिए किया जा सकता है।

शहर के तीन स्थानों पर बनेंगे पंपिंग स्टेशन- सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट संचालन के लिए शहर में तीन अलग-अलग स्थानों पर पंपिंग स्टेशन बनाए जाएंगे। पंपिंग स्टेशन के लिए अभिनंदन सरोवर के पीछे, कोठीबाजार मोक्षधाम के सामने और सदर बाजार में जमीन चिन्हित की गई हैं। नपा के मुताबिक इन पंपिंग स्टेशनों में ग्रेविटी के जरिए गंदे पानी को पहुंचाया जाएगा। पंपिंग स्टेशनों में 200 हॉर्स पॉवर से ज्यादा की मोटरें लगी होंगी। इन मोटरों की मदद से गंदे पानी को पंप कर सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट तक भेजा जाएगा। जब यह पानी प्लांट में पहुंचेगा, तो प्लांट की मदद से इस गंदे पानी को ट्रीट कर दोबारा से इस्तेमाल करने लायक बनाया जाएगा। ज्यादा पानी एकत्रित होने पर शुद्ध किए पानी को नदी में छोड़ दिया जाएगा।

सीवरेज प्रोजेक्ट और आईएसबीटी निर्माण के लिए किया निरीक्षण

बैतूल विधायक हेमन्त खण्डेलवाल एवं कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने संयुक्त रूप से निरीक्षण कर नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग की दो महत्वपूर्ण योजनाओं सीवरेज प्रोजेक्ट के अंतर्गत एसटीपी प्लांट एवं अंतर्राज्यीय बस टर्मिनल के निर्माण स्थल का जायजा लिया। निरीक्षण बडोरा क्षेत्र में माचना नदी के उस पार,

करबला के पास स्थित पुराने बस स्टैंड के लिए आरक्षित भूमि पर किया गया। इस भूमि का उपयोग एसटीपी प्लांट और आईएसबीटी निर्माण के लिए प्रस्तावित है। बता दे कि आईएसबीटी के निर्माण से जिले में परिवहन सुविधा में सुधार होगा, रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे और समग्र क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलेगा। इसके साथ ही यह टर्मिनल मंडी मार्ग से बेहतर कनेक्टिविटी भी प्रदान करेगा। आईएसबीटी के लिए लगभग 3 हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता बताई गई है। निरीक्षण के दौरान नायब तहसीलदार श्याम सिंह उईके, हल्का पटवारी राजिक अली, धर्मेन्द्र पंवार, संजय मौरे एवं श्री विजय राठौर उपस्थित थे।

इनका कहना है –

नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग की दो महत्वपूर्ण योजनाओं सीवरेज प्रोजेक्ट के अंतर्गत एसटीपी प्लांट एवं अंतर्राज्यीय बस टर्मिनल का निर्माण होना है। जिसके लिए बैतूल विधायक और जिला कलेक्टर ने अधिकारियों के साथ निर्माण स्थलों का जायजा लिया है।

–सतीश मटसेनिया,
सीएमओ नगपालिका बैतूल

गजेंद्र मीणा होंगे खंडचिकित्सा अधिकारी, डॉ. पंचम लौटेंगे मूल पदस्थापना के स्थान सेहरा

विधायक ने लिखा पत्र, सीएमएचओ ने कलेक्टर से की अनुशंसा

बैतूल/मुलताई। डॉ. पंचम सिंह अपनी मूल पद स्थापना चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र विकासखंड चांदबेहड़ा सेहरा उनके मुल पदस्थाना पर वापस भेजे जाएगे। उनके स्थान पर मुलताई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के खंड चिकित्सा अधिकारी के रूप में डॉक्टर गजेंद्र मीणा नियुक्त किए जाएंगे। विधायक चंद्रशेखर देशमुख के पत्र के आधार पर सीएमएचओ मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बैतूल राजेश परिहार ने जिला कलेक्टर को डॉ. पंचम को मुलताई से हटाने एवं डॉक्टर मीणा को पदस्थ करने की अनुशंसा कर दी है अब शीघ्र ही गजेंद्र मीणा मुलताई खंड चिकित्सा अधिकारी होंगे। विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने जिला कलेक्टर एवं जिला स्वास्थ्य अधिकारी बैतूल को संबोधित करते हुए एक पत्र लिखा था, जिसमें डॉक्टर पंचम की कार्य प्रणाली पर असंतोष व्यक्त करते हुए कहा गया था कि सुचारु

चिकित्सकीय कार्य व्यवस्था के दृष्टिगत डॉ. पंचमसिंग चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चांदबेहड़ा विकास खंड सेहरा को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुलताई में खंड चिकित्सा अधिकारी का प्रभार सौंपा गया था, किंतु इनकी पदस्थी के पश्चात मुलताई की स्वास्थ्य सेवाएं सुचारु होने के बजाय दिनो-दिन बिगड़ती जा रही है, जिसकी शिकायत स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित आम जनता द्वारा की जाकर डॉ. पंचम सिंग को हटाकर अन्य डॉ. को खंड चिकित्सा अधिकारी नियुक्त कराने की मांग की जा रही है। विधायक ने अपने पत्र में लिखा हैं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुलताई के प्रभारी खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. पंचम सिंग को अपनी मूल पदस्थापना स्थल सेहरा करते हुए, उनके स्थान पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बरखेड में पदस्थ डॉ. गजेंद्र मीणा को खंड चिकित्सा अधिकारी मुलताई नियुक्त किए जाने हेतु त्वरित कार्रवाई की जाए।

इनका कहना है -

डॉ. गजेंद्र मीणा को मुलताई खंड चिकित्सा अधिकारी बनाए जाने के आदेश कर फाइल अनुमोदन के लिए जिला कलेक्टर को भेज दी गई है। मुलताई में अन्य डॉक्टरों की नियुक्ति भी शीघ्र ही की जाएगी।

– राजेश परिहार, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बैतूल,

विधायकों की मौजूदगी में लांच हुई होंडा शाइन 100 ओबीडी-2

आदित्य होंडा शोरूम में हुआ जोरदार आयोजन

बैतूल। होंडा की सबसे अधिक बिकने वाली बाइक होंडा शाइन के सफलतम 2 वर्ष पूर्ण होने पर कंपनी द्वारा नई होंडा शाइन 100 सीसी की लांचिंग बैतूल के होंडा के अधिकृत डीलरशिप आदित्य होंडा शोरूम में की गई। इस मौके पर बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे एवं घोड़ाडोंगरी विधायक गंगाबाई उइके ने आहूजा परिवार के वरिष्ठ सदस्य हरबंश आहूजा और पूर्व सांसद सुभाष

आहूजा की विशेष मौजूदगी में होंडा शाइन 100 लांच की गई। आदित्य होंडा शोरूम के संचालक आदित्य आहूजा ने इस मौके पर जानकारी देते हुए बताया कि होंडा कंपनी ने इस वर्ष होंडा ने शाइन 100 को अपडेट के साथ लांच किया है। यह माडल ओबीडी-2 बी मानकों के अनुरूप इंजन और अपडेटेड स्टिकर्स हैं। श्री आहूजा ने बताया कि पावर के लिहाज से 2025 शाइन को 100 सी.सी. सिंगल-सिलेंडर, एयर कूल्ड इंजन से लैस रखा गया है, जिसमें एक ट्यूबलर फ्रेम है. यह इंजन 7.61 बीएचपी का पावर और 8.05 एनएम का टॉर्क प्रोड्यूस करता है। इस अवसर पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, चार्टेड अकाउंटेंट प्रदीप खंडेलवाल, अरुण किलेदार, योगी खंडेलवाल, भाजपा मंडल अध्यक्ष विक्रम वैद्य, विकास मिश्रा, सुनील द्विवेदी, नितिन बारसकर, सुनील पवार एवं तरुण ठाकरे, कैलाश बंडू धोटे, पवन यादव, पिंटू नितेश परिहार, अभिषेक जोशी के अलावा होंडा के जिले के विभिन्न सब डीलरों मौजूद थे। कार्यक्रम के अंत में आदित्य होंडा संचालक राजेश आहूजा और राकेश आहूजा ने आयोजन में शामिल हुए जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य लोगों का आभार माना।

प्रदेश में ई-ऑफिस प्रणाली के क्रियान्वयन में बैतूल प्रथम

बैतूल जिले के 58 कार्यालय ई-ऑफिस प्रणाली से जुड़ने से फाइलों का हो रहा तेजी से निराकरण

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशानुरूप शासन की गतिविधियों को त्वरित, पारदर्शी और पेपरलेस बनाने के उद्देश्य से प्रदेश में ई-ऑफिस प्रणाली का संचालन किया जा रहा है। इस दिशा में बैतूल जिले ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल कर प्रदेश में ई-ऑफिस मूवमेंट में पहला स्थान प्राप्त किया है। बैतूल की इस उपलब्धि के पीछे आयुक्त नर्मदापुरम संभाग के.जी. तिवारी और कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी का सतत मार्गदर्शन और निगरानी प्रमुख कारण रहा। दोनों अधिकारियों ने जिले में ई-ऑफिस प्रणाली को प्रभावशाली ढंग से लागू करने के लिए विभागों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया और तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराया। जिसके बाद बैतूल जिले के 58 कार्यालय ई-ऑफिस प्रणाली से जुड़े है। इससे समय की बचत होने के साथ ही फाइलों के निराकरण में तेजी आई है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी के निर्देशन में जिले के सभी विभागों के मैदानी कार्यालय को भी तेजी से कि ऑफिस प्रणाली से जोड़ा जा रहा है। मैदानी कर्मचारियों और अधिकारियों ई ऑफिस प्रोफाइल बनाई जा रही है। कलेक्टर सतत ई ऑफिस मूवमेंट की मॉनिटरिंग कर रहे हैं, जिसका परिणाम रहा कि बैतूल प्रदेश का पहला जिला बन गया है, जहां सभी एसडीएम कार्यालयों को जिला कार्यालय से ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से जोड़ा गया है।

फाइलों की रियल टाइम मॉनिटरिंग

ई ऑफिस का लाभ यह है कि अब किसी भी फाइल की गति और स्थिति को रियल टाइम में देखा जा सकता है, जिससे अनावश्यक देरी और भ्रम की स्थिति समाप्त हो गई है। ई-ऑफिस प्रणाली से न केवल सरकारी कामकाज में पारदर्शिता आएगी, बल्कि आम नागरिकों को भी सेवाओं का समय पर और प्रभावी लाभ मिल सकेगा।

मोदी सरकार के 11 साल पूर्ण होने पर अनेक कार्यक्रम करेगी भाजपा

संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर जिला कार्यशाला संपन्न

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर कार्यशाला संपन्न हुई। मोदी सरकार के 11 साल पूर्ण होने पर विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन भाजपा करेगीं इस हेतू कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए प्रदेश उपाध्यक्ष एवं संभागीय संगठन प्रभारी पंकज जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकारें विरासत को संवारने के साथ विकास का काम कर रही हैं। यही कारण है कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश लगातार तरक्की कर रहा है और भारत विकसित देशों के श्रेणी में चौथे पायदान पर पहुंच गया है। भारतीय जनता पार्टी अपनी सरकारों के कामकाज के दम पर देश और प्रदेश में लगातार सरकारें बना रही हैं। हमें इन कामों, योजनाओं और हमारी सरकार की उपलब्धियों को इस अभियान के दौरान बूथ स्तर तक पहुंचाना है। केंद्र सरकार की उपबल्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कार्यकर्ता करेंगे। 11 वर्षों के कार्यकाल पर होने वाले मुख्य कार्यक्रमों में प्रोफेशनल मीट का कार्यक्रम होगा। वहीं विकसित भारत संकल्प सभा मंडलो पर की जावेगी। शक्ति केन्द्र पर चौपाल लगाकर हमें युपीए सरकार की खामियां व एनडीए सरकार की उपलब्धियां जनता के बीच रखनी है। जिला संगठन प्रभारी सुजीत जैन ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2014 में सत्ता संभालने के बाद से सत्ता को जनता की सेवा का माध्यम बनाकर निरंतर हर क्षेत्र और वर्ग के कल्याण के कार्य कर रहे हैं। जिसे सेवा सुशासन से गरीब कल्याण के ग्यारह वर्ष के रूप में हमें मनाना है। जिस तरह से पिछले कार्यक्रम जैसे तिरंगा यात्रा, लोकमाता देवी अहिल्या बाई होल्कर की जन्म जयंती और आजीवन सहयोग निधि में बैतूल प्रदेश में प्रशंसा प्राप्त की है। उसके बाद आगामी कार्यक्रमों की सफलता के लिए अतिरिक्त परिश्रम करने की आवश्यकता है। पिछले कार्यक्रमों पर भी संगठन की नजर थी। अब अपेक्षाएं बढी है। लेकिन हर कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए सफल कार्यक्रम करेगें। कार्यशाला की प्रस्तावना रखते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि पूर्व में हुए कार्यक्रमो की अभूतपूर्व सफलता के साथ हमें मोदी जी के 11 वर्ष के कार्यकाल सहित विश्व पर्यावरण दिवस, आपातकाल की बरसी, योग दिवस और डा.श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान और जन्मजयंती के कार्यक्रम करना है। कार्यशाला के दौरान आजीवन सहयोग निधि अभियान में अभूतपूर्व सफलता के लिए अभियान के संयोजक दीपक सलूजा व सह संयोजक अतीत पंवार का अंगवस्त्र पहनाकर सम्मान किया गया। वहीं देवी अहिल्या बाई होल्कर त्रिशताब्दी जन्मसमारोह की उत्कृष्ट सफलता के लिए अभियान के संयोजक कृष्णा गायकी को सम्मानित किया गया। कार्यशाला में आगामी कार्यक्रमो के संयोजको ने संक्षिप्त रूप रेखा बताई। कार्यक्रम का समापन जन गण मन के साथ हुआ। कार्यशाला का संचालन जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने किया एवं आभार उपाध्यक्ष इंद्रपाल पुण्डे ने व्यक्त किया। इस दौरान मंच पर विधायक हेमंत खंडेलवाल, डा.योगेश पंडाग्रे, गंगा उइके, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पंवार प्रमुख रूप से मौजूद रहे। कार्यशाला में पार्टी के जिला पदाधिकारी, मंडल प्रभारी, मोर्चा जिलाध्यक्ष, प्रकोष्ठों के जिला संयोजक, मंडल अध्यक्ष, जिला पंचायत सदस्य, नगर पालिका अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, जनपद पंचायत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कार्यक्रमो के मंडल संयोजक उपस्थित रहे।

बीएमएस भवन पाथाखेड़ा में इंटीग्रेटेड हेल्थ केम्प आयोजित

बैतूल। मध्यप्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण समिति भोपाल के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश एड्स नियंत्रण सोसायटी भोपाल की सहायक संचालक श्रीमती मोनल सिंह की उपस्थिति एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार, जिला नोडल अधिकारी डॉ. आनंद मालवीय के मार्गदर्शन में बुधवार को बीएमएस भवन पाथाखेड़ा में इंटीग्रेटेड हेल्थ केम्प आयोजित किया गया। हेल्थ केम्प में स्वास्थ्य जांच की गई, जिसमें ब्लड शुगर की जांच, बीपी की जांच, एचआईवी स्क्रीनिंग, सिफिलिस स्क्रीनिंग, टीबी स्क्रीनिंग, हेपेटाइटिस बी की स्क्रीनिंग एवं चिकित्सक द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया। काउंसलर सह डाटा मैनेजर दिनेश भावरकर द्वारा ग्रुप काउन्सलिंग कर एचआईव्ही एवं एड्स, एसटीआई, हेपेटाइटिस एवं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की गई। पोस्टर और लीफलेट के माध्यम से आमजन को जागरूक किया गया और आईईसी के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की गई। जो हितग्राही अधिक हाई रिस्क में थे, उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र घोडाडोंगरी एवं जिला चिकित्सालय बैतूल रैफर किया गया ताकि उन्हें आगे की जांच और उपचार के लिए आवश्यक सुविधाएं मिल सकें। हेल्थ केम्प में कुल हितग्राहियों की संख्या 160 रही।

फॉरेस्ट रेस्ट हाउस ऑफ बैतूल पुस्तक का किया विमोचन

महुआ बिस्किट बना ग्रामीणों की आय का जरिया, बैतूल वन वृत्त को मिला आईएसओ प्रमाणपत्र

बैतूल। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख असीम श्रीवास्तव ने 3 जून को बैतूल प्रवास के दौरान बैतूल वन वृत्त अंतर्गत किए जा रहे वानिकी कार्यो, अधोसंरचना विकास कार्यो और अवैध कटाई पर नियंत्रण की दिशा में की जा रही कार्रवाईयों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने वन विद्यालय बैतूल में प्रशिक्षु वनरक्षकों से संवाद किया और उनकी समस्याएं व प्रशिक्षण से जुड़े विषयों पर चर्चा की। वन विद्यालय में वनरक्षकों एवं शासकीय वन कर्मचारियों के लिए बनाए गए नवीन जिम व लॉकर रूम सुविधा का विधिवत उद्घाटन किया गया। साथ ही फॉरेस्ट रेस्ट हाउस ऑफ बैतूल नामक पुस्तक का विमोचन किया गया, जिसे सुश्री बासु कनौजिया वन संरक्षक वन वृत्त बैतूल के मार्गदर्शन में प्रशिक्षु भारतीय वन सेवा अधिकारी अक्षत जैन द्वारा तैयार किया गया है। कार्यक्रम में जानकारी दी गई कि बैतूल जिला लगभग 39 प्रतिशत वन क्षेत्र से आच्छादित है, जिसमें पहाड़ी, मैदानी भागों के साथ-साथ नदियां व नाले भी शामिल हैं, जो इस क्षेत्र को एक मनोरम स्वरूप प्रदान करते हैं। दक्षिण (सा.) वनमंडल बैतूल को वन सुरक्षा, वनवर्धन, अधोसंरचना विकास एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ठ कार्य करने पर आईएसओ 9001:2015 गुणवत्ता प्रबंधन एवं आईएसओ 14001:2015 पर्यावरण प्रबंधन मानकों के अनुरूप प्रमाणपत्र प्रदान किया गया है।

भौराढाना में संचालित हो रही महुआ बेकरी यूनिट

उत्तरी वनमंडल के भौरा परिक्षेत्र अंतर्गत ग्राम भौराढाना में इको सिस्टम सर्विसेस इम्प्रूवमेंट प्रोजेक्ट के तहत ग्रामीण आजीविका संवर्धन हेतु महुआ बेकरी यूनिट द्वारा महुआ बिस्किट तैयार किए जा रहे हैं। इस उत्पाद को एफएसएसएआई में पंजीकृत किया गया है और स्थानीय बाजार में विक्रय के लिए उपलब्ध कराया गया है, जिससे स्थानीय ग्रामीणों को रोजगार के नए अवसर मिले हैं। अवैध कटाई पर कठोर कार्रवाई करते हुए उत्तर (सा.) वनमंडल द्वारा योजनाबद्ध तरीके से वन माफिया राजू वाड़िवा के गिरोह के विरुद्ध कार्रवाई की गई। 18 अक्टूबर 2024 की रात तस्करी करते हुए पकड़े गए ट्रक से 17 घनमीटर सागौन जब्त किया गया था। अपराधी अंधेरे का लाभ उठाकर फरार हो गए थे। इसके बाद टीम बनाकर की गई विशेष कार्रवाई में सागर जिले में स्थित एक आरामशीन से अवैध रूप से काटे गए 70 घनमीटर सागौन की लकड़ी बरामद की गई। इस सराहनीय कार्य के लिए संबंधित कर्मचारियों को प्रमाणपत्र और सम्मान निधि देकर प्रोत्साहित किया गया।

पर्यावरण विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

कृतज्ञ

महँगी लग्जरी कार का रास्ते में बंद हो जाना सामान्य बात नहीं थी। गनीमत थी कि गाड़ी सड़क के किनारे पर थी, वरना धक्का लगाकर एक ओर करनी पड़ती। ड्राइवर के साथ नागेश्वर बाबू ने भी रबर के जलने की गंध महसूस की। ड्राइवर ने अनुरोध किया- 'सर, लगता है कि गाड़ी की वायरिंग में कोई फॉल्ट आ गया है। भीषण गर्मी है इसलिए आग पकड़ने की संभावना के चलते सावधानी बतौर कार से बाहर निकलना उचित होगा।' ड्राइवर की बात सही थी। दोपहर का समय था, वातावरण का तापमान पैंतालीस डिग्री सेल्सियस को लाँघ रहा था। अपनी फैक्ट्री के प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए आवंटित जमीन पर लगे वृक्षों को काटने की अनुमति संबंधी याचिका के सिलसिले में नागेश्वर बाबू की सचिव स्तर के बड़े अफसर के साथ महत्वपूर्ण मीटिंग होनी थी। अप्रत्याशित व्यवधान से उन्हें मीटिंग में समय पर पहुंच पाने में संदेह होने लगा। यह बैठक बड़ी मुश्किल से तय हुई थी, एक बार टली तो पता नहीं कितने दिन में हो। मीटिंग टलने का मतलब था जमीन से पेड़ों की कटाई में देरी और अंततः फैक्ट्री के प्रोजेक्ट में विलंब से आर्थिक नुकसान।

झुँझलाते हुए नागेश्वर बाबू गाड़ी से बाहर आए तो महसूस हुआ जैसे किसी गरम भट्ठी में पहुंच गए हों। उन्हें चिलचिलाती धूप में बाहर निकलने की आदत नहीं थी। ऐसी आदत हो भी क्यों? बड़े बिजनेसमैन नागेश्वर बाबू के बंगले में सभी कमरे वातानुकूलित थे। सूरज कितनी भी आग बरसाता रहे, उनका परिवार आलीशान मकान में बड़े आराम से रहता था। हर तरह की सुख-सुविधा मौजूद थी वहाँ। आज भी वे सुकून से तैयार होकर बंगले से निकले और गर्मी से बचने के लिए दस कदम दूर खड़ी कार तक तेज कदमों से पहुंचे। शानदार वातानुकूलित कार के भीतर आरामदेह सीट पर बैठे नागेश्वर बाबू मन ही मन अधिकारी के सामने अपने मामले को पेश करने की रिहर्सल करने लगे। इस काम के लिए अधिकारी के ऑफिस तक पहुंचने में लगनेवाला डेढ़ घंटे का यात्रा समय पर्याप्त था। बीच में थोड़ा रास्ता ऐसा था जहां अभी बस्ती नहीं बसी थी, जंगल जैसा था। नागेश्वर बाबू की कार वहीं खराब हुई थी। उन्होंने अपने निजी सहायक को गाड़ी खराब होने की सूचना दे दी थी। तत्काल दूसरी गाड़ी भेजने का इंतजाम किया जाने लगा फिर भी आधा घंटा लगना ही था। मीटिंग के समय को पुनर्निर्धारित किया जा रहा था।

गर्मी से बेहाल नागेश्वर बाबू तपती धूप में खड़े थे तभी आसपास जमीन खोदते और पत्थर तोड़ते मजदूरों में से एक उनके पास आ गया- 'साहब, सिर में रूमाल बांध लीजिए, पानी पी लीजिए। लू से बचे रहेंगे।' नागेश्वर बाबू ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए उस गरीब आदमी को देखा जो सिर पर पुराना गमछा लपेटे, पाँवों में टायर की चप्पल डाले, मैले-कुचैले, फटे-पुराने पाजामा कमीज पहने उन्हें ज्ञान देने की हिमाकत कर रहा था। पता नहीं क्यों, शायद गर्मी से घबराकर नागेश्वर बाबू ने अनिच्छा से जेब से सुगंधित रूमाल निकाला और सिर पर लपेट लिया। ड्राइवर ने गाड़ी में रखी पानी की बोतल ला दी जिससे कुछ घूंट उन्होंने पी लिए। ड्राइवर ने बोनट खोला तो वहाँ हल्का सा धुआँ दिखाई दिया। यानी न गाड़ी चलने लायक थी, न अंदर बैठने लायक। दुपहरी की गर्मी में खड़े नागेश्वर बाबू की हालत खराब हो रही थी। उन्हें इतनी तकलीफ बर्दाश्त करने की आदत नहीं थी। वही मजदूर फिर उनसे बोला- 'धूप बहुत तेज है, आप उधर पेड़ के नीचे आ जाइए।' बेबसी में नागेश्वर बाबू पेड़ की ओर चल दिए। दरवाजे के बाहर बंगले के पोर्च में खड़ी कार तक पांच कदम चलने में नखरे दिखानेवाले नागेश्वर बाबू चिलचिलाती धूप में पचास कदम कैसे चल रहे थे, अनुमान लगाया जा सकता है। वे पसीने से तरबतर हो गए। कुछ कदमों पर सामने खड़ा पेड़ उन्हें कोसों दूर लग रहा था। गर्मी से बेहाल नागेश्वर बाबू जैसे ही हरे-भरे पेड़ की घनी छाँव में पहुँचे, उन्हें लगा जैसे स्वर्ग मिल गया हो। साथ आए मज़दूर ने एक पत्थर को अपने गमछे से साफ किया और उनसे बैठने का आग्रह किया। नागेश्वर बाबू ने इस बार मुँह नहीं बिचकाया, चुपचाप बैठ गए। भीषण गर्मी से मिली राहत ने उनके चेहरे की भाव-भंगिमाओं को तनाव मुक्त कर दिया। नागेश्वर बाबू ने सिर उठाकर पेड़ को निहारा और बोले, 'थैंक्यू।' उनके मन के एक कोने में इच्छा आकार ले रही थी कि अधिकारी के साथ उनकी मीटिंग का नया समय तय न हो।

भारतीय रेलवे ने अनधिकृत स्वचालित बुकिंग पर नकेल कसी

बुकिंग वेबसाइट पर वास्तविक उपयोगकर्ताओं की पहुंच को बढ़ावा दिया

नईदिल्ली। एआई-संचालित बॉट शमन ने वास्तविक टिकट बुकिंग को बढ़ाया; 2.5 करोड़ संदिग्ध उपयोगकर्ता आईडी निष्क्रिय की गई। 22 मई, 2025 को एक मिनट में 31,814 टिकट बुक किए गए, जो टिकट बुकिंग में एक रिकॉर्ड उपलब्धि है।

बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव ने लॉगिन में वृद्धि की; वित्त वर्ष 2024-25 में दैनिक औसत बढ़कर 82.57 लाख हो गया।

भारतीय रेलवे ने पारदर्शिता, सुरक्षा और उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए, अपने टिकटिंग बुनियादी ढांचे में व्यापक डिजिटल बदलाव किया है। अत्याधुनिक एंटी-बीओटी सिस्टम के इस्तेमाल और एक प्रमुख कंटेंट डिलीवरी नेटवर्क (सीडीएन) सेवा प्रदाता के साथ एकीकरण के माध्यम से, रेलवे ने अनधिकृत स्वचालित बुकिंग पर काफी हद तक अंकुश लगाकर वास्तविक उपयोगकर्ताओं के लिए वेबसाइट की पहुंच में सुधार किया है।

नए सिस्टम ने सभी बॉट ट्रैफ़िक को प्रभावी रूप से कम कर दिया है, जो तत्काल योजना के पहले पांच मिनट के दौरान चरम पर होता है। इस अवधि के दौरान कुल लॉगिन प्रयासों में बॉट ट्रैफ़िक का हिस्सा 50 प्रतिशत तक होता है। यह वृद्धि वास्तविक उपयोगकर्ताओं के लिए बेहतर पहुंच सुनिश्चित करती है। इसका परिणाम यह हुआ कि टिकट बुकिंग के लिए 2.5 करोड़ संदिग्ध उपयोगकर्ता आईडी निष्क्रिय कर दी गई हैं। 22 मई, 2025 को एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की गई, जिसमें 31,814 टिकटों की प्रति मिनट सबसे अधिक बुकिंग हुई, जो इस उन्नत प्लेटफ़ॉर्म की मज़बूती और मापनीयता को दर्शाता है।

टिकट बुकिंग प्रणाली में किए गए सुधार इस प्रकार है

87 प्रतिशत सामग्री को तेज़ लोड समय और कम सर्वर लोड के लिए सीडीएन के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है।

परिष्कृत एआई एल्गोरिदम का उपयोग करके बॉट ट्रैफ़िक का सक्रिय पता लगाना और उसे कम करना।

संदिग्ध उपयोगकर्ता आईडी को सक्रिय रूप से निष्क्रिय करना और साइबर अपराध पोर्टल के माध्यम से शिकायत दर्ज करना

पंढरपुर में करुणाधाम धर्मशाला का भूमि पूजन

भोपाल। करुणाधाम आश्रम द्वारा श्री पंढरपुर धाम में धर्मशाला का भूमि पूजन गुरुवार 5 जून को किया जा रहा है। आश्रम के श्री शाश्वत शांडिल्य ने बताया कि पीठाधीश्वर गुरुदेव श्री सुदेश शांडिल्य महाराज और ममतामयी श्रीमाँ श्रीमती शाण्डिल्य धर्मशाला का भूमि पूजन करेंगे। इसके बन जाने से श्रद्धालुओं को सुविधा होगी। करुणाधाम आश्रम भक्तों की सेवा के लिए धर्मशाला का निर्माण प्रारंभ कर रहा है। गंगा दशहरा के दिन इसका भूमि पूजन 5 जून को पंढरपुर धाम में होने जा रहा है। जल्द ही धर्मशाला श्रद्धालुओं की सेवा के लिए तैयार होगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और प्रदेश संगठन महामंत्री ने जताया शोक

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने राजगढ़ के पूर्व जिला महामंत्री श्री गोपाल खत्री के दुःखद निधन पर शोक व्यक्त किया है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने एवं परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

मेपकास्ट द्वारा पूरे प्रदेश में पैंतीस सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से मनाया जाएगा विश्व पर्यावरण दिवस

भोपाल। म.प्र.विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, म.प्र. शासन) द्वारा दिनांक 05 जून , 2025 को पूरे प्रदेश में 35 से अधिक स्थानों पर विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया जा रहा है। उक्त आयोजन में प्रदेश के विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, वैज्ञानिक संस्थान एवं अन्य संस्थाएं भी सहभागिता करेंगी। परिषद परिसर में ''सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन स्टेम एजुकेशन'' विद्यार्थियां के लिए पर्यावरण आधारित हैंड्स ऑन, टेक्निकल शो, आयोजित किया जायेगा । इस अवसर पर सभी के लिए 'आओ करके देखे' के अंतर्गत इको फ्रेंडली माटी शिल्प उत्पाद बनाने पर भी कार्यशाला आयोजित की जाएगी।

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद भोपाल के अंतर्गत संचालित सेंटर फॉर क्रिएटिव लर्निंग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित इस विशेष शैक्षणिक एवं जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन विज्ञान भवन, नेहरू नगर, भोपाल में दिनांक 5 जून 2025 को प्रातः 10ः00 बजे से किया जाएगा। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना का प्रसार करना तथा नवीन वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक समाधानों के प्रति रुचि उत्पन्न करना है। इस अवसर पर कक्षा 6वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों हेतु विभिन्न शिक्षण गतिविधियों का संचालन किया जाएगा,

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में होगा 6 जून को लोकमाता अहिल्याबाई पर आयोजन

भोपाल। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल एवं लोकमाता अहिल्याबाई त्रि शताब्दी जयंती समारोह आयोजन समिति के संयुक्त तत्वाधान में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के ज्ञान विज्ञान भवन में लोकमाता अहिल्याबाई पर केंद्रित एक समारोप सत्र का आयोजन दिनांक 6 जून 2025 को दोपहर 3ः00 बजे से किया जाएगा। इस सत्र में मुख्य वक्ता सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्वनी उपाध्याय रहने वाले हैं। इस आयोजन के मुख्य अतिथि वरिष्ठ उद्योगपति एवं दौलत राम समूह के प्रबंध निदेशक श्री सीपी शर्मा जी रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री एसके जैन करेंगे। लोकमाता अहिल्याबाई का यह 300वां जयंती वर्ष है। इस अवसर पर पूरे देश में उनके कृतित्व और व्यक्तित्व पर अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। लोकमाता अहिल्याबाई अपने शासनकाल में पूरे देशभर में किए गए निर्माण और धार्मिक उत्थान के कार्यों के लिए जानी जाती हैं।

बेतवा उद्गम को पुनर्जीवित करने लोक श्रमदान की सार्थक पहल

भोपाल। बेतवा मध्य भारत की प्रमुख नदियों में से एक है, जो मध्यप्रदेश के रायसेन ज़िले के झिरी वन ग्राम से निकलकर लगभग 600 किलोमीटर का सफ़र तय कर उत्तर प्रदेश के हमीरपुर के पास यमुना नदी से मिलती है। विश्व की लगभग सभी नदियों की तरह ही बेतवा भी संकटग्रस्त है। अब से करीब 18 महीने पहले जल-स्तर के घटने से इतिहास में पहली बार झिरी से निकलने वाली इसकी मूल धारा सूख गई। इसके कारण हैं -

1. जंगलों की अंधाधुंध कटाई, जल रोक सकने में सक्षम बड़े वृक्षों का नाश।

2. कृषि विस्तार, जिसमें खेती की ज़मीन बढ़ने के साथ-साथ गेहूँ, मूँग, इत्यादि जल की अधिक माँग करने वाली फ़सलें उगाना, वह भी वर्ष में तीन बार।

बेतवा को बचाने के लिए वर्ष 2022 में डॉ. आर. के.पालीवाल और डॉ. सुरेश गर्ग ने बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण यात्रा समूह का गठन किया था। यह यात्रा बेतवा उद्गम स्थल झिरी के जीर्णोद्धार से शुरू हुई थी और लगभग 200 किलोमीटर दूर कुरवाई तक गई थी, जिसमें बेतवा के किनारे बसे गांवों, कस्बों और शहरों में व्यापक जनजागरण व जनसंपर्क किया था। इस अभियान से देश भर के प्रकृति और पर्यावरण प्रेमी जुड़े थे।

डॉ. पालीवाल मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के प्रिंसिपल चीफ कमिश्नर इनकम टैक्स रहे हैं। वे अब ग्राम सेवा समिति भोपाल के माध्यम से समग्र ग्राम विकास, जैविक खेती और प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र से जुड़े हैं, जिसके तहत बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण यात्रा भी आती है। डॉ सुरेश गर्ग वरिष्ठ सर्जन हैं और गांधी विचार के विविध रचनात्मक कार्यों से जुड़े हैं।

बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण यात्रा समूह ने 9 मार्च को इस मुद्दे पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया था, जिसको लेकर क्रमशः 22 मार्च, 14 व 27 अप्रैल को बेतवा उदगम स्थल झिरी में बैठकें हुईं व साथ ही साथ निरंतर झिरी वासियों से जनसंपर्क हुआ। निष्कर्ष यह निकला कि बरसात शुरू होने से पहले सरकारी स्तर पर और बेतवा समूह के

समाजसेवियों के श्रमदान से झिरी क्षेत्र में जल संचय व भंडारण के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाएँ -

1. श्रमसप्ताह के दौरान श्रमदान से आस-पास के पत्थरों से चेक डैम बनाना; बहुत ज़्यादा लागत और निर्माण में लंबी अवधि की वजह से बड़े बाँधों की तुलना में छोटे-छोटे चैक डैम पर्यावरण की दृष्टि से भी बेहतर हैं और उन्हें स्थानीय लोग सामूहिक रूप से आसानी से खुद भी बना सकते हैं।

2. किसानों से बात कर उनके खेतों में गड्ढे करके रेनवॉटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था करना।

3. ग़रीब किसानों को फलदार पौधे दान कर धीरे-धीरे फलों के पौधों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना ताकि बेतवा उदगम के आसपास घने जंगल जैसा परिवेश बने और किसान गेहूँ जैसी ज़्यादा पानी खर्च करने वाली खेती से दूर रहें।

इस 25 से 31 मई तक चले श्रम सप्ताह में प्रतिदिन 2 सत्र होते थे। एक सुबह, दूसरा शाम को। बेतवा श्रमदान सप्ताह शिविर का पहला दिन 25 मई को था। जिसमें समाज के घर फूंक पर्यावरण सेवी जन सेवा करने सुदूर आदिवासी गांव में निस्वार्थ श्रमदान करने के लिए बेतवा उद्गम पर जुटे। पहले दिन बेतवा उद्गम के पुजारी की झोंपड़ी की मरम्मत और उद्गम की साफ सफाई की गई। गाँव के लगभग पचास परिवारों को गेहूँ, मूँग जैसी ज़्यादा पानी ख़र्च करने वाली खेती की जगह धीरे-धीरे फलों के पौधों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि बेतवा उदगम के आसपास घने जंगल जैसा परिवेश बने व जल-स्तर बढ़े। ऐसे कुछ परिवारों के खेतों में मानसून के दौरान पौधरोपण के लिए गड्ढे खोदे गए। पहाड़ी से उतरती प्राकृतिक जलधारा पर आसपास बिखरे पड़े पत्थरों से चैक डैम बनाना, इत्यादि।

डॉ. आर के पालीवाल और डॉ. गर्ग के अलावा इस दिन के श्रमदान में डॉ कुसुम गर्ग , सेंट मेरी पी.जी. कॉलेज के प्रोफेसर और एन.एस.एस. इंचार्ज अरविंद द्विवेदी और उनके दो एनएसएस कैडेट शिष्य , गंज बासौदा के प्रतिष्ठित समाजसेवी विनोद पटेरिया व युवा फाउंडेशन भोपाल के संस्थापक परीक्षित सिंह और कुछ अन्य समाजसेवियों ने भी इसमे हिस्सेदारी की।

बेतवा श्रमदान के दूसरे दिन एनएसए के विद्यार्थियों और गांव के बच्चों ने सुबह सवेरे ही श्रमदान की शुरुआत कर दी। भोपाल के पर्यावरण प्रेमी शरद सिंह कुमरे टीम ने भी सुबह के श्रमदान शिविर में सहभागिता की। डॉ आर के पालीवाल और परीक्षित सिंह भी श्रमदान में शामिल हुए। इस दिन - कुछ किसान परिवारों के खेत में फलदार पौधे लगाने के लिए गड्ढे खोदे गए, एक चेकडैम बनाया गया। श्रमदान के तीसरे दिन 27 मई को बाहर से आए श्रमदानियों और गांव के बच्चों ने 5 चैक डैम बनाए। कुल सात चैक डैम बने। इस अभियान में एन.जी.ओ. पाठशाला के संस्थापक डॉ. परशुराम तिवारी, पर्यावरण प्रेमी अभ्युदय केलकर और रेहटी के युवा राज यादव भी जुड़े। श्रमदानियों ने वृक्ष वितरण हेतु कई घरों में जाकर जनसंपर्क किया।

शिविर के चौथे दिन 20 ग्रामीण बच्चों ने श्रमदान किया और 3 चैक डैम बने। पांचवें भी चेक डैम बने। शिविर में भोपाल की समाज सेविका श्रीमती विधुलता गोस्वामी ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। बैतूल की नमन सेवा समिति से आए 6 श्रमदानियों ने भी उल्लेखनीय कार्य किया। इंदौर के डॉ. पवन कुशवाहा व उनके 3 साथियों ने भी श्रमदान किया। छत्तीसगढ़ के रिटायर्ड आईएफएस अधिकारी कौशलेंद्र सिंह ने भी हिस्सेदारी की। छठे दिन गंज बासौदा के श्रमदान दल से आए 9 साथियों ने चौंकाने तेजी से चैक डैम बनाए। पिछले दिन इंदौर व बैतूल से आए साथियों ने आज भी श्रमदान दिया। अभियान शुरू होने से लेकर आज शाम तक कुल 50 चैक डैम बन चुके थे। शिविर के सातवे दिन गाँव के भीतर ही कुछ चैक डैम बनाए गए व दो पहले से बने हुए चैक डैम की मरम्मत की गई।

इस शिविर के लिए मुंबई के प्रसिद्ध चित्रकार और कार्टूनिस्ट आबिद सुरती ने अभियान के लिए कुछ पोस्टर डिज़ाइन किए। बेतवा उदगम स्थल पर लगाए गए इन पोस्टर से यहां आने वाले बेतवा भक्त और पर्यटक बेतवा की बदहाली से परिचित होते गए और श्रमदान अभियान से जुड़ते गए।

मेडिकैप्स ने आईबीएस और एलएंडटी से मिलाया हाथ, बीटेक के दो नए कोर्स लॉन्च

इंदौर। तेजी से बदलती टेक्नालाजी के अनुरूप उद्योग जगत को बेहतर मानव संसाधन उपलब्ध कराने और युवाओं को रोजगारोन्मुखी शिक्षा देने के लिए मेडीकैप्स यूनिवर्सिटी ने तकनीकी क्षेत्र की दिग्गज कंपनियों से हाथ मिलाया है। यूनिवर्सिटी ने ग्लोबल कंपनियों एलएंडटी और आईबीएम से एमओयू कर दो नए कोर्स शुरू किए हैं। स्टूडेंट्स को आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस और मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्टेशन में डिग्री के साथ इन कंपनियों में व्यवहारिक प्रशिक्षण और सर्टिफिकेट भी मिलेगा।

बुधवार को राऊ इंदौर स्थित मेडिकैप्स यूनिवर्सिटी में कुलगुरु प्रोफेसर दिलीप कुमार पटनायक के समक्ष दो एमओयू किए गए। पहला एमओयू बीटेक स्पेशलाइजेशन इन मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्टेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर विथ एआई/एमएल कोर्स के लिए एलएण्डटी के साथ किया गया। दूसरा एमओयू बीटेक स्पेशलाइजेशन इन एडवांस्ड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए आईबीएम के साथ हुआ। इस मौके पर यूनिवर्सिटी के कुलगुरु प्रो.(डॉ.) दिलीप कुमार पटनायक, इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के डीन प्रो. (डॉ.) प्रमोद एस. नायर, डायरेक्टर पीआर सुजीत सिंहल सहित सभी डीन, विभागाध्यक्ष तथा एलएण्डटी आईबीएम के उच्च अधिकारी भी उपस्थित रहे।

एम्स भोपाल के डॉ. जय कुमार चौरसिया को फ्लोरेंस में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ ई-पोस्टर वक्ता का सम्मान

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह संकाय सदस्यों और छात्रों के बीच अकादमिक उत्कृष्टता और ज्ञान-साझाकरण की संस्कृति को सदैव बढ़ावा देते रहते हैं। प्रो. सिंह से प्रेरित होकर संकाय सदस्य विभिन्न शोध कार्यों में असाधारण प्रदर्शन कर रहे हैं। हाल ही में, पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. जय कुमार चौरसिया को इटली के फ्लोरेंस शहर में आयोजित इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ साइटोलॉजी में 'सर्वश्रेष्ठ ई-पोस्टर वक्ता' के रूप में सम्मानित किया गया। डॉ. चौरसिया ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के माध्यम से स्तन साइटोपैथोलॉजी में प्रारंभिक निदान की भूमिका पर आधारित अपने शोध 'फ्रैक्टल विश्लेषण-

स्तन साइटोपैथोलॉजी में नैदानिक भूमिका' को प्रस्तुत किया। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विश्वभर से 250 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। यह सत्र फ्रांस के प्रसिद्ध प्रोफेसर फिलिप विएल द्वारा अध्यक्षता किया गया, तथा डॉ. चौरसिया के शोध कार्य की विशेष सराहना अमेरिका के प्रोफेसर ज़ुबैर बलोच और लंदन (यूके)

के डॉ. आशीष चंद्रा जैसे साइटोपैथोलॉजी के वैश्विक विशेषज्ञों द्वारा की गई। यह शोध स्तन कैंसर के प्रारंभिक निदान में एआई आधारित तकनीक को प्रभावी रूप से उपयोग में लाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस शोध में सह-लेखक के रूप में एम्स भोपाल के पैथोलॉजी एवं लैब मेडिसिन विभाग की प्रो. एवं विभागाध्यक्ष डॉ. वैशाली वाल्के, प्रो. दीप्ति जोशी, डॉ. शक्ति, डॉ. ई. जयशंकर एवं मैनिट भोपाल की डॉ. विजयश्री चौरसिया ने योगदान दिया। उन्होंने डॉ. चौरसिया को इस उपलब्धि पर बधाई दी। इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, डॉ. चौरसिया और उनकी शोध टीम की यह उपलब्धि एम्स भोपाल की शोध क्षेत्र में उत्कृष्टता और अंतरराष्ट्रीय मंच पर सशक्त उपस्थिति को दर्शाती है। यह संस्थान में हो रहे उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान और विभिन्न विभागों के बीच सहयोग का प्रतीक है।

उप मुख्यमंत्री ने हिनौती गौधाम में निर्माणाधीन कार्यों का लिया जायजा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने रीवा ज़िले की विकासखंड गंगेव में हिनौती गौधाम में चल रहे निर्माण कार्यों का जायजा लिया। हिनौती गौधाम में गायों के रहने के लिए दो नए शेड तैयार किया जा रहे हैं। उप मुख्यमंत्री ने इन दोनों शेडों का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि हिनौती गौधाम में निर्माण कार्य चरणबद्ध ढंग से कराए जा रहे हैं। इन निर्माणाधीन शेडों के बन जाने से लगभग 500 अतिरिक्त गायों के रहने की व्यवस्था हो जाएगी। अभी तीन निर्मित शेडों में लगभग 700 गायें रह रही हैं। गौधाम में गायों के लिए पानी, चारे और भूसे की पर्याप्त व्यवस्था है। गायों और उनके बछड़ों को पानी पीने के लिए हौज बनाए गए हैं। गायों के खुले में विचरण के लिए भी पर्याप्त स्थान है। गौधाम में विद्युत व्यवस्था बेहतर कराई गई है जिससे पर्याप्त विद्युत की आपूर्ति की जा रही है। उन्होंने संबंधितों को निर्देशित किया कि हिनौती गौधाम के निर्माण का पूरा मास्टर प्लान स्थल में प्रदर्शित करें जिससे निर्माणाधीन कार्यों की पूरी जानकारी रहे। उप मुख्यमंत्री ने हिनौती गौधाम को मुख्य मार्ग से जोड़ने के लिए बनाई जाने वाली सड़क का पूरा लेआउट तैयार करने के भी निर्देश अधिकारियों को दिए।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि गौधाम में गायों की सेवा अच्छे तरीके से हो। इसके लिए यहां पर्याप्त कर्मचारियों की तैनाती करें। उन्होंने गायों की सेवा करने वाले कर्मचारियों को समक्ष बुलाकर उन्हें मिल रहे पारिश्रमिक आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की। उप मुख्यमंत्री ने हिनौती गौधाम में बनाए जा रहे गेस्ट हाउस का भी निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित इंजीनियर को गेस्ट हाउस का निर्माण कार्य निर्धारित ड्राइंग के अनुसार पूरा करने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने गौशाला में नन्हीं बछिया को दुलार किया और गायों को गुड़ भी खिलाया। इस अवसर पर पूर्व विधायक त्योंथर श्री श्यामलाल द्विवेदी, संयुक्त संचालक पशुपालन डॉ राजेश मिश्रा, राजेश पाण्डेय सहित सरपंच, अन्य जनप्रतिनिधिगण, संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

पर्यावरण की रक्षा विकल्प नहीं, जीवन का आधार: उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को शुभकामनाएँ दी हैं और प्रकृति संरक्षण के प्रति सजग और समर्पित रहने का आह्वान किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पर्यावरण की शुद्धता न केवल हमारे भौतिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक शांति का भी आधार है। हमारी भारतीय परंपरा में प्रकृति को देवतुल्य माना गया है। वृक्षों में देवत्व की भावना, नदियों में मातृत्व की छवि और वायु-जल-अग्नि को पंचतत्व रूप में पूजने की संस्कृति ने हमें यह सिखाया है कि पर्यावरण की रक्षा कोई विकल्प नहीं, बल्कि जीवन का आधार है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान ने वृक्षारोपण को भावनात्मक संकल्प से जोड़ने के साथ पर्यावरण संरक्षण को सामाजिक आंदोलन में परिवर्तित करने का कार्य किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सभी नागरिकों से अपील की है कि वे शुभ अवसरों पर कम से कम एक वृक्ष अवश्य लगाएँ। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पर्यावरण संतुलन और जलवायु संरक्षण का सीधा संबंध मानव स्वास्थ्य से है। स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, हरियाली और जैव विविधता एक ऐसी सतत विकास की राह बनाते हैं, जिसमें भावी पीढ़ियाँ स्वस्थ और सशक्त जीवन जी सकेंगी। उन्होंने कहा कि 'सस्टेनेबल फ्यूचर' की संकल्पना तभी साकार होगी जब हम आधुनिक प्रौद्योगिकी को भारतीय जीवन मूल्यों के साथ जोड़कर चलें। योग, आयुर्वेद, ध्यान और प्राकृतिक चिकित्सा – यह सब पर्यावरणीय संतुलन के साथ जीने की शैली है, जिसे आज पूरे विश्व ने अपनाना शुरू किया है। हमें गर्व है कि यह भारत की धरोहर है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेश के युवाओं, पर्यावरण प्रेमियों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं से आग्रह किया कि वे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एकजुट होकर ठोस प्रयास करें – वृक्षारोपण करें, जल स्त्रोतों की रक्षा करें, प्लास्टिक मुक्त जीवन अपनाएँ और जैव विविधता को सुरक्षित रखें। उन्होंने यह भी कहा कि यह कार्य केवल एक दिन की औपचारिकता न बने, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य बन जाए। यही भाव राष्ट्र को 'विकसित भारत' की दिशा में अग्रसर करेगा।

नीट की आंसर शीट देखी और खुदकुशी कर ली

ग्वालियर में 18 साल के स्टूडेंट ने पिता की लाइसेंसी रिवॉल्वर से मारी गोली

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में नीट की आंसर शीट में कम नंबर देखकर स्टूडेंट ने खुद को गोली मार ली। फायरिंग की आवाज सुनते ही परिजन दौड़कर कमरे में पहुंचे। उसे तुरंत अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

मामला शताब्दीपुरम इलाके में मंगलवार रात करीब 8 बजे का है। महाराजपुरा पुलिस ने पिस्टल जब्त करके जांच शुरू कर दी है। मृतक की पहचान 18 वर्षीय निखिल प्रताप राठौर के रूप में हुई है। उसके पिता बृजभान सिंह राठौर सेना से रिटायर्ड हैं। परिवार समेत शताब्दीपुरम में रहते हैं। मंगलवार को जब नीट की आंसर-शीट जारी हुई तो माता-पिता ने उससे नंबर पूछे। आंसर शीट में उम्मीद से कम नंबर देखकर वह मानसिक तनाव में आ गया। से घर के नीचे वाले कमरे में गया और पिता की लाइसेंसी पिस्टल से खुद को गोली मार ली।

पिता खुद छोड़ते थे कोचिंग

परिजन ने बताया- निखिल पढ़ाई को लेकर बेहद गंभीर था। पिता खुद उसे कोचिंग तक छोड़ने जाते थे। निखिल का बड़ा भाई बीटेक का छात्र है। सीएसपी नागेंद्र सिंह सिकरवार ने कहा- छात्र रिजल्ट के कारण तनाव में था। फिर भी हर एंगल से जांच की जा रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा-यूका कचरे पर अब विचार नहीं

पहले ही काफी समय गंवा चुके, अब विशेषज्ञों की निगरानी में जल रहा

भोपाल/इंदौर (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड के कचरे को जलाने संबंध याचिका पर तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया है। याचिकाकर्ता और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. चिन्मय मिश्र ने इस संबंध में याचिका दायर की थी। उन्होंने मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के उस आदेश के खिलाफ अपील की थी, जिसमें हाई कोर्ट ने भोपाल गैस त्रासदी के रासायनिक कचरे को पीथमपुर में जलाए जाने का निर्देश दिया था।

हाई कोर्ट ने 27 मार्च 2025 को पारित आदेश में राज्य सरकार को भोपाल की यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री में 1984 में हुए गैसकांड के बाद वहां बचे रासायनिक कचरे को पीथमपुर की एक फैक्ट्री में स्थित इंसीनरेटर में जलाने के लिए 72 दिन का समय दिया था। डॉ. मिश्र की इस याचिका पर याचिका के इंटरविनर अशोक कुमार वासुदेवन ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि 72 दिन की अवधि 8 जून को खत्म हो रही है, इसलिए इस केस की तत्काल सूचीबद्ध कर सुनवाई की जाए।

इस पर सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजय करोल और सतीश चंद्र शर्मा की युगल पीठ ने कहा, 'हम कितने सालों से इस कचरे को हटाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन इतने सालों से ये तथाकथित एनजीओ (गैर सरकारी संगठन) और सामाजिक कार्यकर्ता इसे होने नहीं दे रहे। उच्च न्यायालय मामले की निगरानी कर रहा है और विशेषज्ञों की देखरेख में इसका निपटारा (भस्मीकरण) किया जा रहा है।

बताया तत्काल हस्तक्षेप की जरूरत

वासुदेवन ने जोर देकर कहा कि यह मुद्दा सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ा है और प्रतिकूल परिणामों की आशंका है। इसलिए तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा, आपने इस बारे में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के सामने भी अपील की थी।

जहां इस पर विचार नहीं किया है। फिर आपने इस अदालत का दरवाजा खटखटाया, इस पर विचार नहीं किया गया। अब आप छुट्टियों के बीच इस पर रोक चाहते हैं। हमें बहुत खेद है, लेकिन हम इस पर विचार नहीं करेंगे।

रहस्यमय जानवर का खौफ 17 को काटा, 6 की मौत

बड़वानी के गांव में 7 बजे के बाद लोग घरों में कैद, एक परिवार ने घर छोड़ा

बड़वानी (नप्र)। बड़वानी के लिंबई गांव में अज्ञात जानवर के हमले से छह लोगों की मौत से दहशत का माहौल है। आलम ये है कि शाम 7 बजे के बाद लोगों ने अपने घरों से निकलना बंद कर दिया है। एक परिवार ने तो गांव ही छोड़ दिया।

3500 की आबादी वाले लिंबई गांव में दिन में भी सन्नाटा पसरा हुआ है। गांववाले दावा कर रहे हैं कि 5 मई को 17 लोगों को किसी अज्ञात जानवर ने काटा था। इनमें से अब तक 6 लोगों की मौत हो चुकी हैं।

अज्ञात जानवर की तलाश में प्रशासन की तरफ से उड़ाए गए ड्रोन, कैमरे और पिंजरे नाकाम हो गए हैं। अपने परिवार सहित पूरे गांव पर आई विपदा टालने के लिए महिलाएं पूजा-पाठ में लगी हैं तो गांव के मंदिर में यज्ञ भी हो चुका है। गांव की सड़कों पर सुबह से ही सन्नाटा पसरा हुआ है। ऐसी हालत यहां बीते एक महीने से है।

सबसे पहले भैरव घाट पर हुई थी घटना- राजपुर मुख्यालय से 7 किलोमीटर दूर नरावला तालाब के आगे स्थित लिंबई में भैरव घाट पर सरपंच प्रतिनिधि और ग्रामीण दिखे। यहीं आसपास दो लोगों को अज्ञात जानवर ने निशाना बनाया था। लिंबई के सरपंच पति राकेश जमरे के अनुसार, हमले में 17 लोग और 5 पशु घायल हुए थे। अब तक 6 लोग और 4 पशुओं की मौत हो चुकी है। जानवर ने सभी के मुंह पर हमला किया। ये हमले 5 मई की सुबह 4 से 6 बजे के बीच लिंबई और भैरव घाट क्षेत्र में एक के बाद एक हुए। लिंबई के झेतरिया फलिया के रहने वाले लल्लू अवास्या ने बताया कि उनका घर लिंबई गांव से करीब डेढ़ किमी दूर है। 5 मई को वे अपनी पत्नी और बेटे के साथ घर के बाहर सोऐ थे। बेटा केटरिंग का काम करता है। रात में राजपुर में शादी समारोह में काम कर 2 बजे लौटा था। वो भी बाहर खाट बिछाकर सो गया।

सुबह करीब 6 बजे अज्ञात जानवर ने उनके बेटे के मुंह और हाथ पर दांत गढ़ा दिए। बेटा उठता, इससे पहले जानवर भाग चुका था। अस्पताल ले जाकर टांके लगाने पड़े। अब बेटा स्वस्थ्य तो है, लेकिन डर के चलते किसी से मिलने से कतराने लगा है। रहवासी सुमेर सिंह ने बताया, एक एक अज्ञात जानवर ने 5 मई को घर के बाहर सोए हुए व्यक्ति और पशुओं को निशाना बनाया था। शाम 7 बजे दिन ढलते ही लोग घरों में दुबकने लगे हैं। वहीं, खेतों में सिंचाई लाइन रात में 10 से 2 बजे तक आती है, लेकिन डर के चलते लोग खेतों में नहीं जा पा रहे हैं।

परिवार बोला- जानवर का आतंक खत्म होगा तभी लौटेंगे- मृतक मंशाराम के बेटे प्रवीण बघेल ने बताया किदो साल से हम मजदूरी के लिए लिंबई गांव के बाहर भैरव मंदिर के सामने झोपड़ी बनाकर रह रहे थे। हमले के दिन पास में निवासरत मामा के लड़के की शादी थी, जिसमें मेहमान आए हुए थे। उनका और हमारा परिवार बाहर ही सोया हुआ था। सुबह पिता पर हमला हुआ। इसके बाद राजपुर में इलाज कराया।

प्रवीण ने बताया, हमले के बाद से लगातार दर्द बना रहा। मुंह से झाग निकल रहा था। 23 मई को बड़वानी ले जाने के दौरान उनकी मौत हो गई। अब पूरा परिवार गांव छोड़ ओझर चला गया है। जानवर का आतंक खत्म होगा तभी परिवार लौटेगा। मेरे मामा के लड़के बलिराम पर भी जानवर ने हमला किया था।

वन मंडल अधिकारी आशिष बंसोड ने बताया मृतक के परिजनों को 8-8 लाख रुपए की राशि जारी की है। सुरक्षा के लिए बड़वानी से अन्य दल बुलाकर 24 घंटे गांव में 35 जवान गश्त कर रहे हैं।

आशंका लकड़बग्घे की, दिल्ली भेजे सैंपल

सीएमएचओ डॉ. सुरेखा जमरे ने बताया, मेडिकल कॉलेज की टीम आई थी। उन्होंने मरीजों की जांच की। रेबीज के टीके का असर लकड़बग्घे पर नहीं होता है। जिस जानवर ने हमला किया है, वह लकड़बग्घा हो सकता है। अब तक पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट नहीं आई है,जिससे कुछ जानकारी मिल सके।

वैक्सीन का चौथा डोज भी लगा

राजपुर के ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर देवेंद्र रोमडे ने बताया, 3 जून को दस में से आठ लोगों को वैक्सीन का चौथा डोज दे दिया गया। इसमें चैन सिंह मंगिया ने वैक्सीन लगवाने से मना कर दिया, जबकि महेश जय सिंह ट्रेस नहीं हो पा रहा है। इसके अलावा एक अन्य राजेश, जिसे गायब हो जाने के चलते तीसरी डोज नहीं लग पाई थी, उसे भी वैक्सीन लगाई गई।

एम्स भोपाल में बनेगा प्रदेश का सबसे बड़ा हर्बल गार्डन

एम्स निदेशक बोले- पतंजलि की मदद से मध्य प्रदेश की 'रिच ट्राइबल मेडिसिन' ढूंढकर निकालेंगे

भोपाल (नप्र)। अब भोपाल के एम्स अस्पताल में सिर्फ एलोपैथी का इलाज ही नहीं, बल्कि हमारी पुरानी आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का खजाना भी मिलेगा। एम्स भोपाल और बाबा रामदेव की पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन मिलकर प्रदेश का सबसे बड़ा हर्बल गार्डन बनाने जा रहे हैं। यह सिर्फ पेड़-पौधे लगाने तक सीमित नहीं होगा, बल्कि यह इलाज के नए और सस्ते तरीके ढूंढने में भी मदद करेगा।

एम्स के निदेशक डॉ. अजय सिंह ने बताया कि यह हर्बल गार्डन कोई साधारण बगीचा नहीं होगा। इसमें सिर्फ मध्य प्रदेश के ही नहीं, बल्कि उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों और पूरे देश में मिलने वाले उन खास औषधीय पौधों को लगाया जाएगा जो शायद आपने पहले कभी न देखे हों। एम्स का मानना है कि इन पौधों में कई बीमारियों को ठीक करने की ताकत है, जिनके बारे में हम भूलते जा रहे हैं।

मध्य प्रदेश की रिच ट्राइबल मेडिसिन ढूंढकर निकालेंगे- डॉ. सिंह के अनुसार प्रदेश में कई ऐसे इलाके हैं जहां बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय रहते हैं। ये समुदाय सदियों से जंगलों और प्रकृति के करीब रहे हैं। इन समुदायों के पास पेड़-पौधों, जड़ों, पत्तियों और छालों से बीमारियों का इलाज करने का बहुत पुराना और गहरा ज्ञान होता है। यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से चलता रहता है। इसे 'समृद्ध' इसलिए कहा गया है क्योंकि इस ज्ञान में कई ऐसी जड़ी-बूटियां और उनके इस्तेमाल के तरीके शामिल हैं जिनके बारे में आधुनिक विज्ञान अभी भी पूरी तरह नहीं जानता।

तीन चरणों में बनेगा यह गार्डन- पहला चरण: आसानी से उगने वाले पौधे: शुरुआत में उन औषधीय पौधों को लगाया जाएगा जिन्हें उगाने के लिए किसी खास इंतजाम (जैसे एसी या खास मिट्टी) की जरूरत नहीं होती। ये पौधे भोपाल के मौसम में आसानी से उग सकेंगे।

दूसरा चरण: मध्य प्रदेश के आदिवासी इलाकों की खोज: यह चरण सबसे ज्यादा दिलचस्प होगा। एम्स की टीम मध्य प्रदेश के आदिवासी इलाकों में जाएगी, जहां आज भी लोग इलाज के लिए अपनी पुरानी जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल करते हैं। इन छुपी हुई औषधियों को तलाशा जाएगा, उनकी पहचान की जाएगी और फिर उन्हें एम्स के हर्बल गार्डन में लगाया जाएगा ताकि उन पर रिसर्च की जा सके। यह हमारी अपनी पारंपरिक दवाओं को दोबारा सामने लाने का एक बड़ा प्रयास होगा।

तीसरा चरण: पहाड़ और देश-विदेश के खास पौधे: आखिरी चरण में उत्तराखंड में मिलने वाले कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण औषधीय पौधों को लगाया जाएगा। इसके साथ ही, देश भर से कुछ 'एग्जॉटिक' यानी दुर्लभ और खास जड़ी-बूटियों को भी लाया जाएगा। चूंकि इन पौधों को भोपाल के मौसम में जिंदा रखना मुश्किल हो सकता है, इसलिए इन्हें खास आर्टिफिशियल सेटअप (नकली वातावरण) में रखा जाएगा। जिससे वो बिना समस्या के पनप सकें।

पुराने ज्ञान को नए विज्ञान से जोड़ना- इस पूरे प्रोजेक्ट का मकसद सिर्फ एक सुंदर बगीचा बनाना नहीं है। यह न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 के तहत भी आता है, जिसमें कहा गया है कि मेडिकल की पढ़ाई में हर तरह के इलाज (जैसे एलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपैथी) को जोड़कर देखा जाना चाहिए। यानी, मरीजों को सिर्फ एक तरह का इलाज नहीं, बल्कि सबसे बेहतर, सस्ता और असरदार इलाज मिले। चाहे वह किसी भी चिकित्सा पद्धति से क्यों न हो। इसे मॉडर्न साइंस में इंटिग्रेटेड मेडिसिन नाम दिया गया है।

इलाज के साथ-साथ अब होगी रिसर्च भी- यह हर्बल गार्डन बनने से दो बड़े फायदे होंगे। पहला, अस्पताल में ही आयुष विभाग के मरीजों के इलाज के लिए औषधीय जड़ी-बूटियां उपलब्ध हो सकेंगी। दूसरा, एम्स में मेडिकल के छात्र इन पौधों पर गहराई से रिसर्च कर सकेंगे। डॉ. सिंह ने बताया कि अभी तक छात्र सिर्फ किताबों में ही इन पौधों के बारे में पढ़ते थे, लेकिन अब वे इन्हें अपनी आंखों से देख सकेंगे, छू सकेंगे और इनके गुणों को समझ सकेंगे। इनपर जांच भी कर सकेंगे।

पांच खास हिस्सों में बंटेगा गार्डन- ह्यूमन हेल्थ हर्बल गार्डन- इसमें वे पौधे होंगे जो सीधे इंसानों की बीमारियों के इलाज में काम आते हैं। रसायन वन- यह रिसर्च के लिए होगा, जहां पौधों के रासायनिक गुणों का अध्ययन किया जाएगा।

मंत्री शुक्ला ने ली मप्र ऊर्जा विकास निगम के संचालक मंडल की बैठक

भोपाल (नप्र)। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री एवं ऊर्जा विकास निगम के अध्यक्ष राकेश शुक्ला ने विभागीय सभी योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों को देने के निर्देश दिये है। मंत्री श्री शुक्ला ने मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड की 196 वीं बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की बैठक में बुधवार को ऊर्जा विकास निगम के मुख्यालय में उक्त निर्देश दिये। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री शुक्ला ने प्रदेश के किसानों के लिए सौर ऊर्जा आधारित पीएम कुसुम 'ए' और 'सी' योजना के साथ प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना के साथ महत्वपूर्ण विषयों पर समीक्षा के बाद स्वीकृति प्रदान की। बैठक में अपर मुख्य सचिव मनु श्रीवास्तव, ऊर्जा विकास निगम के प्रबंध संचालक अमनवीर सिंह बैंस सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने भोपाल में टेन्ट में किया रात्रि विश्राम

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने पर्यावरण सुरक्षा के अपने संकल्प के तहत मंगलवार की रात भोपाल स्थित अपने सरकारी आवास के समीप पार्क में टेन्ट में रात्रि विश्राम किया। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने मंगलवार को संकल्प अनुसार टेन्ट में रात्रि विश्राम किया। उन्होंने कहा कि यह संकल्प केवल प्रतीक नहीं, बल्कि पर्यावरण के प्रति एक जीवंत प्रतिबद्धता है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक जीवनशैली अपनाकर सभी को यह संदेश देना है कि हमारे दैनिक जीवन में छोटे-छोटे बदलाव भी बड़े परिणाम ला सकते हैं। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि जब विचार और व्यवहार में सामंजस्य होता है, तभी संकल्पों की सार्थकता पूर्ण होती है।

हैदराबाद से जबलपुर आए एक और घोड़े की मौत

300 पन्नों की जांच रिपोर्ट कलेक्टर को सौंपी; हाईकोर्ट में सुनवाई समर वेकेशन के बाद

जबलपुर (नप्र)। करीब एक महीने पहले हैदराबाद से जबलपुर लाए गए 57 घोड़ों में से एक और घोड़े की मौत हो गई है। इसे मिलाकर अब मृत घोड़ों की संख्या बढ़कर 9 पहुंच गई है। बाकी बचे घोड़ों से कुछ अभी भी बीमार हैं। हालांकि, पशु चिकित्सा विभाग का कहना है कि लगातार देखभाल और इलाज के चलते वे जल्द स्वस्थ हो जाएंगे। मामले में 23 मई को मध्यप्रदेश हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की गई है, जिस पर समर वेकेशन के बाद सुनवाई होगी। दूसरी तरफ, करीब 20 दिन की जांच के बाद बुधवार को पशु चिकित्सा विभाग की टीम ने अपनी रिपोर्ट कलेक्टर दीपक कुमार सक्सेना को सौंप दी है।

7 मई से 13 मई के बीच 8 घोड़ों की मौत हो चुकी- बता दें कि थोरो, काठियावाड़ी और मारवाड़ी प्रजाति के 57 घोड़े सड़क के रास्ते 5 मई को जबलपुर लाए गए थे। सभी को रैपुरा गांव में रखा गया। इनकी देखरेख के लिए स्टड फॉर्म मालिक सचिन तिवारी ने कुछ डॉक्टर और सेवक भी रखे। लेकिन 7 मई से 13 मई के बीच इनमें से 8 घोड़ों की मौत हो गई।

कलेक्टर के निर्देश पर जबलपुर वेटरनरी कॉलेज की टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। घोड़ों की मौत ग्लैंडर नामक घातक बीमारी से होने की आशंका जताई गए। सभी घोड़ों के सैंपल जांच के लिए हरियाणा की हिसार लैब में भेजे गए हैं, जहां पर कि अभी तक 44 की रिपोर्ट निगेटिव आई है, जबकि कुछ की आना बाकी है।

पैर में लकवा था, इलाज के दौरान दम तोड़ा- पशु चिकित्सा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. प्रफुल्ल मून ने बताया कि मंगलवार रात जिस घोड़े की मौत हुई, वह कई दिन से बीमार था। उसके पिछले पैर में लकवा हो गया था। वेटरनरी डॉक्टरों के अनुसार, मुंबई के हॉर्स एक्सपर्ट डॉक्टरों की सहायता से उसका इलाज किया गया, लेकिन बचाया नहीं जा सका।

मीटिंग में जनपद पंचायत सीईओ पर पानी की बोतल फेंकी

बीना में कांग्रेस समर्थित सदस्य का हमला; कहा- विधायक के पल्लू में घुसे हो

बीना (नप्र)। सागर जिले के बीना जनपद पंचायत के सीईओ पर भरी मीटिंग में पानी की बोतल फेंकी गई। कांग्रेस समर्थित सदस्य ने तुरंत जानकारी नहीं मिलने पर हमला कर दिया। उन्होंने कहा कि आप सरकारी अधिकारी हो, लेकिन विधायक के पल्लू में घुसे हो। घटना के बाद सीईओ और अन्य अफसर बैठक छोड़कर निकल गए।

दरअसल, जनपद पंचायत कार्यालय में बुधवार दोपहर को विभिन्न विभागों की कार्यप्रगति की समीक्षा की जा रही थी। इसी दौरान जनपद सदस्य शिवकुमार चढ़ार ने बोलने की अनुमति मांगी। उन्होंने कार्यालय के कामकाज और पारदर्शिता से जुड़े सवाल उठाए थे।

जब सीईओ एसएल कुरेले ने जवाब में कहा कि आपको जानकारी दे दी जाएगी, तो चढ़ार नाराज़ हो गए और उन्होंने आवेश में आकर मंच की ओर पानी की बोतल फेंक दी। हालांकि बोतल मंच तक नहीं पहुंच पाई और पहले ही गिर गई।

उज्जैन में रामघाट से शिप्रा तीर्थ परिक्रमा शुरू

आज सीएम होंगे शामिल, शिप्रा को अर्पित करेंगे 351 फीट की चुनरी

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में हर साल निकलने वाली शिप्रा तीर्थ परिक्रमा का शुभारंभ बुधवार को रामघाट से ध्वज पूजन के साथ हुआ। सुबह रामघाट पर शिप्रा तीर्थ परिक्रमा के कार्यकारी अध्यक्ष महंत रामेश्वरदास महाराज, श्रीराम तिवारी, राज्यसभा सदस्य उमेशनाथ जी महाराज, सांसद अनिल फिरोजिया, सभापति नगर निगम कलावती यादव, महापौर मुकेश टटवाल सहित कई अन्य नागरिक मौजूद रहे।

यात्रा से पहले रामघाट पर पंडित पुरोहितों द्वारा ध्वज पूजन किया गया। उसके बाद अतिथियों का स्वागत-सत्कार के बाद यात्रा प्रारंभ हुई। यात्रा में पुरातत्ववेत्ता, पुराविद्, साहित्यकार, इतिहासकार, विषय विशेषज्ञ, जीव विज्ञान, भू-वैज्ञानिक, साधु-संत आदि यात्रा में सहभागी रहेंगे।

रामघाट से प्रारंभ हुई यात्रा

यात्रा बुधवार को रामघाट से प्रारंभ हुई, जो नरसिंह घाट, कर्कराज मंदिर, जगदीश मंदिर, जंतर-मंतर वेधशाला, नानाखेड़ा, महामृत्युंजय द्वार, प्रशांति धाम, सांई मंदिर, त्रिवेणी शनि मंदिर से होते हुए गुरुकुल स्कूल पहुंचेगी, जहां विश्राम और भोजन प्रसादी की व्यवस्था रहेगी। इसके बाद यात्रा पुनः सिकंदरी, गोठड़ा, दाऊद खेड़ी, चिंतामण से होते हुए भूखी माता, गुरुनानक घाट, दत्त अखाड़ा घाट पर शाम को पहुंचेगी। रामघाट पर भजन गायक पवन तिवारी भजनों की प्रस्तुत देंगे।

सीएम शिप्रा को अर्पित करेंगे 351 फीट की चुनरी- यात्रा के दूसरे दिन सुबह 9 बजे यात्रा का शुभारंभ दत्त अखाड़ा घाट से ध्वज पूजन के साथ होगा। इसके बाद रणजीत हनुमान, भैरवगढ़, मंगलनाथ, अंगारेश्वर मंदिर, सांदीपनि आश्रम, काल भैरव, ऋण मुक्तेश्वर मंदिर, वाल्मीकि धाम, गोपाल मंदिर, पटनी बाजार ढाबा रोड होते हुए शाम 5 बजे रामघाट पहुंचेगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रामघाट पर मां शिप्रा को 351 फीट लंबी चुनरी अर्पित करेंगे, जो दत्त अखाड़ा घाट तक पहुंचेगी। यहां आर्मी के सिंफनी बैंड की भी प्रस्तुति होगी। शाम 7 बजे मुंबई की प्रख्यात गायिका स्वस्ति मेहुल भजनों की प्रस्तुति देंगी।